Vol.23, Issue 12 | Annual Subscription ₹ 480

अक्टूबर 2024

@NewsRotary /RotaryNewsIndia

# रोटरी समाचार

भारत

www.rotarynewsonline.org

Rotary

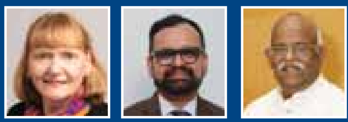

Rotary
District 3212

THE MAGIC OF ROTARY

PROJECT

# FOCUS

Goal Setting / Effective Public Speaking

**Project Focus is a pioneering project of Rotary Club of Virudhunagar (RID 3212), which aims at helping the school and college students, the former to achieve their goals and the latter to overcome their fear of public speaking.**

## *Goal Setting*

### For school students

**Size: Minimum 50 Students – Maximum 500 Students**
**Duration: 2 Hours**
**Medium of Training: Tamil & English**
**Audience: Government, Government Aided and Private school students**

This programme guides the school children to fix their goals and focus on them to taste success and contentment in their lives. Through this initiative, JCI Area Trainer, Rtn. M.A.P.R. Rengasamy, facilitates the students to develop action plans and work towards realizing their dreams. Through mentorship, educational resources and other forms of support, this transformative initiative is dedicated to helping students achieve their full potential.

## *Effective Public Speaking*

### For college students

**Size: Minimum 20 Students – Maximum 60 Students**
**Duration: 6 Hours**
**Medium of Training: Tamil & English**
**Audience: Government and Private college Students**

This programme empowers the youth to come out of their fear, hesitation and anxiety in public speaking. It emphasizes the importance of effective communication skills in their personal, professional and family life. It regulates their pattern of speaking, delivery skills, presentation tactics and content drafting. Overall, it equips the college students to crack their placement interviews with confidence.

LEKHA ads/Oct 24/ Rotary/FIW

Total no.of occurrences of Project Focus **95**

| Project Focus | Within RID 3212 No. of occurrences | Beyond RID 3212 No. of occurrences | No. of beneficiaries |
|---|---|---|---|
| Goal Setting Schools | 26 | 10 | 5989 |
| Effective Public Speaking – Colleges | 27 | 32 | 2833 |

**IDHAYAM**
PROMISE OF HEALTH AND HAPPINESS

**Faculty**
**Rtn.M.A.P.R. Rengasamy**
**99444 11961**

**Do you want to conduct Project Focus in your Town/City/District? We are waiting to partner with you.**

ADVT.

# विषयसूची

32

पालघर के आदिवासियों के मददगार रोटेरियन

12

रोटरी के दिलों के राजा

40

रोटी और रोटरी

24

नाइजीरियाई डॉक्टरों के लिए नेत्र देखभाल प्रशिक्षण

42

एक रोटेरियन का पर्यावरण प्रेम

48

आंध्र-तेलंगाना की बाढ़ में रोटरी बनी सहारा

28

जेल कैदियों के लिए साक्षरता कार्यक्रम



Rotary

A publication of Rotary Global Media Network


**ई-संस्करण दर हुई कम**

1 जुलाई 2024 से हमारी ई-संस्करण सदस्यता ₹420 से संशोधित कर ₹ 320 कर दी गई हैं।

## रोटरी न्यूज़ के डिज़ाइन में बदलाव

नई-रूपरेखा वाली पत्रिका में फ़ॉन्ट बोल्ड है और अनोखे लगते हैं, और यही पूरी पत्रिका को सबसे अलग बनाते हैं। अगस्त अंक में कवर फोटो आकर्षक है। मैं खुद को पत्रिका उठाने से रोक नहीं सका क्योंकि तस्वीरें इतनी रचनात्मक एवं आकर्षक हैं कि इसने मुझे और अधिक पढ़ने के लिए प्रेरित किया। ई-संस्करण की कीमत में कमी होना फायदेमंद रहेगा क्योंकि कम कीमत से आकर्षित होकर अधिक गैर-रोटेरियन इस पत्रिका को खरीदेंगे, जिससे हमारी सार्वजनिक छवि को बढ़ावा मिलेगा।

*जितेन्द्र कुलकर्णी*
*रोटरी क्लब जबलपुर वेस्ट*
*मंडल 3261*

अगस्त अंक की कवर फोटो उत्कृष्ट, मनमोहक और आकर्षक है। साथ ही, मंडल गतिविधियों का नया डिजाइन बहुत रचनात्मक है और इस

बदलाव का स्वागत है। एक और नई विशेषता जो देखने को मिली वह है हेडलाइंस का नवीन डिजाइन और उपयोग किए जाने वाले फोंट में बदलाव।

*पीयूष दोशी*
*रोटरी क्लब बेलूर*
*मंडल 3291*

*रोटरी न्यूज़* में लेखों के प्रारूप की नई शैली और नए और अलग-अलग फ़ॉन्ट का उपयोग बहुत अच्छा है। यह प्रशंसात्मक है।

*सी एच वीरैया*
*रोटरी क्लब सिंगारकोंडा - मंडल 3150*

*रोटरी न्यूज़* के मिलते से ही मैं इसे पढ़ना शुरू करता हूँ और दो घंटों में इसे एक साथ पढ़कर ख़त्म करता हूँ। यह पत्रिका सेवा परियोजनाओं के बारे में विचार प्रदान करती है जिसे कोई भी क्लब सीमित बजट के साथ अपना सकता है। मेरे क्लब ने खेल सुविधाएं स्थापित करने के लिए कुछ सरकारी स्कूलों को गोद लिया है। यह पत्रिका रोटेरियनों को खुद को अपडेट रखने के लिए अद्भुत जानकारी उपलब्ध कराती है।

*डॉ बी के झा*
*रोटरी क्लब रांची मिड टाउन - मंडल 3250*

स्तन कैंसर के निदान पर आपका लेख (सितंबर अंक) दिलचस्प है और मुझे यह पत्रिका से मालूम चला कि इसकी जांच के लिए एक नया उपकरण उपलब्ध है। मैं इस उपकरण, इसकी उपलब्धता और लागत के बारे में अधिक जानना चाहूंगा ताकि मेरा क्लब भी इस जांच को कर सके। कृपया मुझे डॉ इंदिरा और डॉ गीता मंजूनाथ का संपर्क विवरण दें।

*डॉ के एस रामलिंगम*
*रोटरी क्लब टूटीकोरिन*
*मंडल 3212*

*हमारे पास उनके संपर्क विवरण नहीं हैं लेकिन आप उनकी वेबसाइट www.niramai.com पर जाकर मदद मांग सकते हैं। या आप रोटरी क्लब बैंगलोर लेकसाइड के सदस्य काशीनाथ प्रभु को बुला सकते हैं, जो परियोजना की देखरेख करते हैं। (98456 83875)। जब आप इस परियोजना को करेंगे तो हमें जरूर बताएं, हम इसे ख़ुशी से प्रकाशित करेंगे।*

जयदीप मालवीय के पत्र (सितंबर अंक) में उनका अनुमान सही है। कोच्चि के प्रेसीडेंसी होटल, जहां उन्होंने *रोटरी न्यूज़* देखी थी, के मालिक रोटरी क्लब कोचीन के एक रोटेरियन फिलिप मैथ्यू हैं।

*जोसेफ मालिकल*
*रोटरी क्लब कोचीन - मंडल 3201*

### एक परिवर्तनकारी परियोजना

रोटरी क्लब भरूच के *प्रोजेक्ट सखी* द्वारा रूपांतरित यौनकर्मियों के नकाबपोश चेहरों की सितंबर की कवर फोटो असाधारण है।

संपादक का संदेश डीईआई की आवश्यकता पर आंख खोलता है, और यह कोलकाता में एक डॉक्टर की मौत और खेल एवं फिल्म में महिलाओं के उत्पीड़न जैसे मुद्दों पर प्रकाश डालता है। 2026-27 के लिए RIPN नामित होने पर सांगकू युन को बधाई।

रो ई अध्यक्ष स्टेफनी अर्चिक, रो ई निदेशक अनिरुद्धा रॉयचौधरी, टीआरएफ प्रमुख मार्क मेलोनी और न्यासी भरत पांड्या ने बहुमूल्य संदेश साझा किए।

*सखी* परियोजना, वायनाड राहत, स्तन कैंसर, मॉरीशस में नेत्र देखभाल और रोटरी क्लब बैंगलोर के 90 वर्षों पर लेख सभी जानकारीपूर्ण हैं और उनकी तस्वीरें जीवंत हैं।

*फिलिप मुलप्पोन एम टी*
*रोटरी क्लब त्रिवेंद्रम सबअर्बन - मंडल 3211*

मैंने लेख *सेक्स वर्कर्स के जीवन में बदलाव* को बड़ी दिलचस्पी के साथ पढ़ा। रोटरी क्लब भरूच की रिज़वाना ज़मींदार इस अभिनव पहल के लिए प्रशंसा की पात्र हैं। इस परियोजना ने गरीबी के कारण देह व्यापार में मजबूरी में फंसी वंचित महिलाओं के जीवन को बदल दिया है, उन्हें शिक्षा एवं कौशल विकास के माध्यम से रोजगार प्रदान किया है। क्लब सी एस आर फंडिंग की भी मांग कर सकता है। रोटरी क्लब भरूच के सदस्य इस परियोजना में उनकी सफलता के लिए प्रशंसा के पात्र हैं।

*एस मोहन*
*रोटरी क्लब मदुरई वेस्ट - मंडल 3000*

वायनाड के चूरालमाला और मुंडक्कई गांवों में कीचड़ भरे जलप्रलय ने रो ई मंडल 3204 के पांच क्लबों के रोटेरियन को सरकारी प्रयासों में शामिल होने के लिए प्रेरित किया। उन्होंने चिकित्सा शिविर स्थापित किए, जैव-शौचालय स्थापित किए और आवश्यक वस्तुओं का वितरण किया। उनकी सामयिक सेवा ने रोटरी के स्वयं से ऊपर सेवा के आदर्श को बरकरार रखा और इसकी सार्वजनिक छवि में वृद्धि की।

*वीआरटी दोराईराजा*
*रोटरी क्लब तिरुचिरापल्ली - मंडल 3000*

लेख *विशेष बच्चों के लिए तिरुपति दर्शन* को पढ़ना आनंददायक था था। सक्षम लोगों के लिए भी बालाजी के दर्शन की चुनौतियों को देखते हुए, इतने सारे विशेष बच्चों को तिरुमाला ले जाकर सुरक्षित वापस लाना खुशी की बात थी। इस नेक पहल के लिए डीजी महावीर बोथरा (रो ई मंडल 3233) और उनके मंडल को सलाम।

*एन जगथीसन*
*रोटरी क्लब एलुरु - मंडल 3020*

### ग्रामीणों के लिए वरदान

पत्रिका के नए स्वरूप पर संपादक एवं टीम को बधाई।

जांच शिविरों के लिए रोटरी हार्ट केयर बस के साथ ग्रामीण तमिलनाडु के जीवन की गुणवत्ता को सुधारने का रो ई मंडल 3212 का दृष्टिकोण सराहनीय है। रोटरी क्लब लास वेगास वोन, रो ई मंडल 5300, के साथ साझेदारी करके, वे पूर्व सीएम के कामराज के साहसिक दृष्टिकोण को साकार कर रहे हैं।

*इथियोपिया में डंकी पुस्तकालयों* पर जयश्री का लेख और पिंक ऑटो पर किरण ज़ेहरा का लेख उत्कृष्ट था। रो ई मंडल 3233 को बधाई। *मानसिक रूप से परेशान महिलाओं के लिए आजीविका परियोजना* पर रशीदा का लेख शानदार था। रो ई मंडल 3132 और रोटरी कल्ब मियामी एयरपोर्ट, रो ई मंडल 6990, के मानवीय कार्य उच्च प्रशंसा के पात्र हैं।

*डेनियल चित्तिलापिल्ली*
*रोटरी क्लब कलूर*
*मंडल 3201*

इथियोपिया में एक महान परियोजना *इथियोपिया में डंकी पुस्तकालयों* के बारे में लेख पढ़ना बहुत अच्छा लगा (अगस्त अंक)। रोटरी गरीब देशों के बच्चों के लिए जादू कर सकती है जो शैक्षिक सुविधाओं तक पहुँचने में असमर्थ हैं। यह रोटरी क्लब अदीस अबाबा सेंट्रल मेला द्वारा रोटरी क्लब एनसी हिकॉरी, रो ई मंडल 7660, यूएसए की मदद से किया गया एक उत्कृष्ट महान कार्य है। यह संदेश रोटेरियन को किताबें दान करके गरीब बच्चों की मदद करने और बुनियादी शिक्षा प्रदान करने के लिए स्वयंसेवकों को भेजने के तरीके बताता है।

*टी डी भाटिया*
*रोटरी क्लब मयूर विहार*
*मंडल 3012*

**कवर पर:** पीआरआईपी राजेंद्र साबू भारतीय विद्या भवन में एक विशेष बच्चे के साथ बातचीत करते हुए। **चित्र:** रशीदा भगत


## क्या आपने रोटरी न्यूज़ प्लस पढ़ा है?

हम हर महीने आपकी परियोजनाओं को प्रदर्शित करने के लिए
ऑनलाइन प्रकाशन **ROTARY NEWS PLUS** निकालते हैं।
यह प्रत्येक सदस्य को महीने के मध्य तक ई-मेल द्वारा भेजा जाता है।
*रोटरी न्यूज़ प्लस* हमारी वेबसाइट www.rotarynewsonline.org पर पढ़ें।


हम आपकी प्रतिक्रियाओं का स्वागत करते है। अपनी प्रतिक्रियाएं *rotarynews@rosaonline.org* या *rushbhagat@gmail.com* पर संपादक को मेल कीजिए। *rotarynewsmagazine@gmail.com* पर उच्च रेसोल्यूशन वाली तस्वीरें अपनी परियोजना के विवरण के साथ मेल कीजिए।
आपके क्लब/मंडल परियोजनाओं के संदेश, Zoom मीटिंग/वेबिनार पर जानकरी और उसके लिंक केवल संपादक को ई-मेल द्वारा *rushbhagat@gmail.com* या *rotarynewsmagazine@gmail.com* पर भेजे जाने चाहिए।
WhatsApp पर भेजे संदेशों पर विचार नहीं किया जाएगा।

# अध्यक्ष की ज़बानी

*रो ई अध्यक्ष स्टेफनी अर्चिक जुलाई में पोलियोप्लस के लिए धन जुटाने के कार्यक्रम में।*

## एक सामूहिक प्रयास

24 अक्टूबर को विश्व पोलियो दिवस के साथ मैं गर्व से रोटरी की सफलता की कामना करता हूँ क्योंकि हम एंड पोलियो नाउ अभियान के अंतर्गत दुनिया भर में पोलियो की समाप्ति के लिए सामूहिक प्रयास कर रहे है।

मुझे जुलाई में पीएनसी पार्क में स्ट्राइक आउट पोलियो कार्यक्रम में भाग लेने का सौभाग्य प्राप्त हुआ जो पिट्सबर्ग पाइरेट्स एमएलबी टीम का घर है। रोटरी क्लब डेलमोंट-सलेम ने इस कार्यक्रम की मेजबानी की जिससे पोलियोप्लस के लिए 1.3 मिलियन डॉलर जुटाने में मदद मिली।

मैं मास मिलास मेनोस पोलियो (मोर माइल्स लेस पोलियो) बाइक सवारी का समर्थन करने के लिए हमारे रोटरी परिवार के सदस्यों के साथ शामिल हुआ। फेलिप मेज़ा चावेज़ और उनकी टीम ने धन संचयन और जागरूकता बढ़ाने के लिए मेक्सिको के स्यूदाद जुआरेज़ से इलिनोइस के इवान्स्टन में वन रोटरी सेंटर तक सवारी की। इस सवारी में 12 दिन लगे और फेलिप और उनकी टीम ने पोलियो के खिलाफ लड़ाई का समर्थन करने के लिए 100,000 डॉलर से अधिक एकत्रित किए। इवान्स्टन पहुंचते ही उनका अभिवादन करना बहुत खुशी की बात थी।

मैं टीम एंड पोलियो को 2024 पेरिस ओलंपिक के दौरान वैश्विक जागरूकता बढ़ाते हुए देखकर रोमांचित था। विश्व स्तरीय एथलीट, वैश्विक नेता और पोलियो उन्मूलन समर्थक एक ऐसी दुनिया का समर्थन करने हेतु एक साथ आए जहाँ किसी भी बच्चे को पोलियो से ग्रस्त होने के डर में नहीं रहना पड़े। टीम एंड पोलियो के कुछ एथलीट खुद पोलियो सर्वाइवर हैं जो इस समर्थन में जान डालते है।

ये उन तरीकों के कुछ उदाहरण हैं जिनके माध्यम से रोटरी ने हाल ही में एंड पोलियो नाउ के लिए टीम बनाई है। हमें पोलियो उन्मूलन प्रयासों के लिए अपनी टीम के साथियों की तलाश और भर्ती जारी रखना चाहिए खासकर उन चुनौतियों को देखते हुए जिसका सामना हमारे उन्मूलन प्रयासों ने इस वर्ष किया है।

विश्व स्वास्थ्य संगठन में पोलियो उन्मूलन के निदेशक एडन ओ'लेरी के अगस्त में हुए दुखद निधन की खबर से रोटरी जगत शोक में डूब गया।

मैं एडन को जानता था और उनके साथ प्रत्यक्ष रूप से काम भी किया है। वह पोलियो के खिलाफ लड़ाई के अटूट समर्थक थे और एक दयालु एवं वास्तविक व्यक्ति थे। हम उन्हें उनके समर्थन एवं गर्मजोशी दोनों के लिए याद करेंगे। एडन की स्मृति का सम्मान करने का सबसे अच्छा तरीका है एक टीम बनाकर अपने *एंड पोलियो नाउ* के लक्ष्य तक पहुंचना।

हमने दुनियाभर के बच्चों और उनके परिवारों से एक वादा किया है। यह हमारा दायित्व है कि हम अपने वैश्विक साझेदारों के साथ मिलकर इस खतरे को हमेशा के लिए खत्म करें।

ऐसे कई तरीके मौजूद हैं जिनके माध्यम से हम पोलियो को मिटाने के लिए टीम बना सकते हैं। आप *एंड पोलियो नाउ* अभियान के लिए दान कर सकते हैं, अपने क्लब या मंडल की पोलियोप्लस सोसाइटी में शामिल हो सकते हैं या इसकी शुरूआत कर सकते हैं, या ऊपर बताए गए धन संचयन समारोह से प्रेरणा ले सकते हैं।

मैं दुनिया भर के रोटरी सदस्यों को प्रोत्साहित करता हूँ कि वे नए साथियों की तलाश जारी रखें ताकि हम एक साथ मिलकर पोलियो को समाप्त कर सकें।

**स्टेफ़नी ए अर्चिक**
अध्यक्ष, रोटरी इंटरनेशनल

फोटोग्राफी: (पोर्ट्रेट) लूसी हेवेट; (स्टेडियम) जॉन हेयको

# देने की खुशी...

वहाँ एक आदमी है... और तो और, एक महिला भी है... लेकिन दोनों की आत्मा इतनी उदासीन है जो एक उपहार मिलने पर भी खुश नहीं होती... फिर वह उपहार छोटा हो या बड़ा? ऐसे लोग मिलना भी बहुत दुर्लभ होता है। लेकिन, इस अंक के एक लेख की जानकारी लेते समय, और बॉम्बे बे व्यू के रोटरी क्लब के नेतृत्वकर्ताओं से बात करते हुए, मुझे बिलकुल विपरीत स्थिति सुनने को मिली... देने की खुशी। बहुत बड़ी रकम या ऐसा उपहार नहीं जिनकी कीमतें आसमान छूती हो... बल्कि एक अज्ञात व्यक्ति के लिए एक साधारण उपहार।

हम मुंबई के नज़दीक पालघर जिले के कुछ आदिवासी गांवों में क्लब द्वारा की जाने वाली परियोजनाओं पर चर्चा कर रहे थे। उनमें से एक परियोजना थी आदिवासी जोड़ों का सामूहिक विवाह, और इसमें हर जोड़े को घरेलू सामान एवं किराना शादी के उपहार के रूप में मिलता है। जब मैंने पूछा कि इस तरह की कल्याणकारी परियोजनाओं के लिए धन जुटाना कितना मुश्किल है, तो क्लब अध्यक्ष ने हंसते हुए कहा: ''ओह, पैसा कभी भी समस्या नहीं रहा है। हमारे क्लब के सदस्य ख़ुशी-ख़ुशी इन परियोजनाओं के लिए धन देते हैं।''

फिर, उन्होंने उत्साह से बताया कि कैसे उन रोटेरियनों से भी पैसा मिलता है जो उनके क्लब के सदस्य भी नहीं हैं। शादी के उपहार के लिए पैसा जुटाने हेतु उन्होंने अपनी भाभी से बात की, जो रोटरी क्लब मुंबई रॉयल्स की सदस्य हैं। जब उन्होंने अपने व्हाट्सएप ग्रुप पर इस बारे में पोस्ट किया, तो तुरंत प्रतिक्रिया मिली। लोग वास्तव में पैसे देने के लिए लड़ रहे थे; कोई बर्तन देना चाहता था, कोई किराने की किट खरीदना चाहता था, आदि। एक रोटेरियन ने तो हद कर दी; जब वह इन उपहारों के लिए शॉपिंग करने गई तो उनके पति भी उनके साथ गए। उनके पास आवश्यक वस्तुओं की एक सूची थी, लेकिन उन्होंने स्वेच्छा से सूची में लिखी वस्तुओं से अधिक खरीदने के लिए यह कहते हुए कहा: 'अब जब मेरे पति यहाँ है, तो सब कुछ का भुगतान यहीं करेंगे; इसलिए मैं और भी बहुत कुछ खरीदूंगी!'

जबकि इस बात को पढ़कर बहुत से पति चुपचाप हंसेंगे, या अपनी पत्नियों के साथ खरीदारी के उन अनुभवों को याद करते हुए आहें भरेंगे जब उनकी जेब हल्की हो गई थी, आप इस महिला की उदारता के बारे में सोचिए। वह तो खुद के लिए खरीदारी भी नहीं कर रही थी। वह वास्तव में देने की खुशी का अनुभव कर रही थी, और वह भी एक अनजान व्यक्ति के होंठों पर मुस्कान लाने के लिए!

लेकिन, जहां एक तरफ़ अच्छे लोग दूसरों के लिए खुशी लाना चाहते हैं, वहीं कुछ ऐसे भी हैं जो बिना सोचे-समझे और क्रूरता से लोगों के पास जो कुछ भी है उसे छीनने में संकोच नहीं करते हैं। अफगानिस्तान में छोटे बच्चों की माताओं की इस आशा की तरह कि उनके बच्चे बड़े होकर स्वस्थ बनेंगे और पोलियो जैसी गंभीर बीमारियों से मुक्त होंगे। संयुक्त राष्ट्र ने बताया है कि तालिबान, जो अब अफगानिस्तान पर हुकूमत कर रहा है, ने उस संकटग्रस्त देश में घर-घर जाकर पोलियो ड्रॉप्स पिलाने पर प्रतिबंध लगा दिया है। ताजा खबरों में कहा गया है कि कम से कम मस्जिद जैसे निर्धारित स्थानों पर पोलियो टीकाकरण की अनुमति देने के लिए बातचीत चल रही है। केवल समय ही बताएगा कि यह निर्णय कितना प्रभावी या विनाशकारी होगा। डब्ल्यूएचओ की रिपोर्ट है कि इस स्थानिक देश में, पोलियो के मामलों की संख्या पहले से ही बढ़ रही है - इस वर्ष अब तक 18 मामले सामने आ चुके है, जबकि 2023 में यह केवल छह थे। इस खतरनाक परिस्थिति में, रोटेरियनों को पोलियो मुक्त दुनिया के अपने सपने को पूरा करने के लिए बहुत ही कड़ी मेहनत करनी होगी।

रशीदा भगत

# सदस्यता सारांश

1 सितंबर 2024 तक

स्रोत: रो ई दक्षिण एशिया कार्यालय

| रो ई मंडल | रोटरी क्लब | रोटेरियनों की संख्या | महिला रोटेरियन (%) | रोटरेक्ट क्लब | रोटरेक्ट सदस्य | इंटरेक्ट क्लब | आरसीसी |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 2981 | 139 | 5,886 | 5.64 | 54 | 69 | 32 | 254 |
| 2982 | 91 | 3,928 | 5.63 | 27 | 361 | 90 | 188 |
| 3000 | 148 | 6,249 | 11.97 | 60 | 740 | 231 | 217 |
| 3011 | 139 | 5,365 | 31.00 | 63 | 1,324 | 209 | 41 |
| 3012 | 163 | 4,038 | 24.17 | 52 | 671 | 103 | 61 |
| 3020 | 84 | 4,961 | 8.12 | 32 | 640 | 114 | 351 |
| 3030 | 100 | 5,592 | 16.18 | 54 | 819 | 488 | 387 |
| 3040 | 98 | 2,344 | 14.59 | 32 | 555 | 55 | 214 |
| 3053 | 75 | 3,124 | 16.93 | 23 | 331 | 39 | 131 |
| 3055 | 83 | 3,395 | 12.58 | 44 | 653 | 55 | 379 |
| 3056 | 87 | 3,753 | 25.15 | 18 | 140 | 98 | 201 |
| 3060 | 102 | 5,046 | 15.87 | 49 | 1,856 | 73 | 148 |
| 3070 | 116 | 3,069 | 15.25 | 32 | 179 | 59 | 63 |
| 3080 | 109 | 4,434 | 13.35 | 54 | 1,309 | 173 | 127 |
| 3090 | 134 | 2,695 | 7.16 | 19 | 345 | 355 | 173 |
| 3100 | 117 | 2,264 | 10.87 | 13 | 57 | 35 | 151 |
| 3110 | 137 | 3,704 | 11.77 | 15 | 88 | 69 | 112 |
| 3120 | 90 | 3,750 | 15.81 | 37 | 450 | 31 | 57 |
| 3131 | 141 | 5,636 | 34.99 | 106 | 1,932 | 283 | 185 |
| 3132 | 97 | 3,793 | 14.58 | 26 | 299 | 120 | 217 |
| 3141 | 119 | 6,298 | 27.95 | 106 | 1,777 | 185 | 244 |
| 3142 | 115 | 4,066 | 23.00 | 52 | 1,467 | 123 | 99 |
| 3150 | 108 | 4,031 | 12.60 | 79 | 1,178 | 115 | 130 |
| 3160 | 79 | 2,545 | 9.86 | 24 | 105 | 95 | 82 |
| 3170 | 145 | 6,673 | 15.24 | 86 | 1,016 | 176 | 182 |
| 3181 | 88 | 3,707 | 10.90 | 37 | 366 | 92 | 122 |
| 3182 | 85 | 3,664 | 10.64 | 45 | 211 | 104 | 104 |
| 3191 | 95 | 3,434 | 19.34 | 64 | 1,521 | 138 | 36 |
| 3192 | 89 | 3,605 | 21.44 | 49 | 1,188 | 148 | 40 |
| 3201 | 170 | 6,598 | 9.99 | 96 | 1,454 | 105 | 95 |
| 3203 | 97 | 5,051 | 7.27 | 32 | 495 | 133 | 39 |
| 3204 | 81 | 2,633 | 8.17 | 18 | 100 | 14 | 14 |
| 3211 | 161 | 5,199 | 8.83 | 7 | 52 | 23 | 135 |
| 3212 | 122 | 4,641 | 10.71 | 79 | 405 | 206 | 153 |
| 3231 | 94 | 3,672 | 7.38 | 26 | 276 | 39 | 417 |
| 3233 | 87 | 2,999 | 18.04 | 41 | 1,072 | 47 | 63 |
| 3234 | 95 | 3,589 | 23.93 | 54 | 1,353 | 85 | 41 |
| 3240 | 99 | 3,557 | 16.76 | 35 | 557 | 47 | 244 |
| 3250 | 112 | 4,404 | 23.25 | 29 | 386 | 58 | 192 |
| 3261 | 109 | 3,506 | 24.90 | 17 | 90 | 27 | 45 |
| 3262 | 115 | 3,858 | 15.73 | 80 | 733 | 645 | 288 |
| 3291 | 144 | 3,805 | 27.33 | NA | NA | 84 | 763 |
| **India Total** | **4,659** | **174,561** | | **1,866** | **28,620** | **5,401** | **7,185** |
| 3220 | 70 | 1,948 | 16.12 | 77 | 3,034 | 136 | 77 |
| 3271 | 111 | 1,471 | 21.07 | 102 | 419 | 275 | 28 |
| 0063 (3272) | 85 | 1,170 | 20.60 | 47 | 295 | 23 | 49 |
| 0064 (3281) | 283 | 5,889 | 18.07 | 190 | 1,001 | 118 | 211 |
| 0065 (3282) | 149 | 2,988 | 9.24 | 166 | 1,115 | 24 | 47 |
| 3292 | 159 | 5,477 | 19.39 | 154 | 4,816 | 118 | 139 |
| **S Asia Total** | **5,516** | **193,504** | **16.00** | **2,602** | **39,300** | **6,095** | **7,736** |

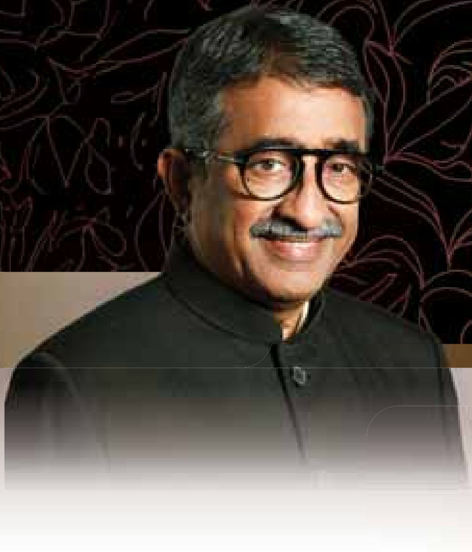

# निदेशक का संदेश

## ज़िन्दगी बदलने की ताकत

प्रिय रोटेरियनों,
जैसे-जैसे इस रोटरी वर्ष में हम आगे बढ़ रहे है, हमारे समुदायों पर हमारे द्वारा डाले गए प्रभाव से मेरा मन गर्व और आशा से भर रहा है। आप में से प्रत्येक सेवा की उस भावना का प्रतीक है जिसके लिए रोटरी खड़ी है, और साथ मिलकर, हम जीवन सुधार रहे हैं और स्थायी परिवर्तन ला रहे हैं। हमारे सामूहिक प्रयास हमारी परिकल्पना को वास्तविकता में बदल रहे हैं, और जैसे-जैसे हम वर्ष के अगले चरण में प्रवेश कर रहे हैं, हमारा ध्यान सबसे महत्वपूर्ण क्षेत्रों में से एक पर जा रहा है: आर्थिक एवं सामुदायिक विकास।

आर्थिक और सामुदायिक विकास लोगों के लिए सम्मान के साथ स्वयं का पालन-पोषण के अवसर पैदा करने के बारे में है। जबकि गरीबी ने सदियों से हमारे देश को परेशान किया है, हमारी स्थायी राष्ट्रीय भावना धीरे-धीरे लेकिन निश्चित रूप से हमारे पुराने गौरव को वापस हासिल करने में मदद करेगी। सड़कें विक्रेताओं से भरी हुई हैं - जो सब्जियां और फल बेचते है, नाश्ता बनाते है, मोबाइल की मरम्मत करते है, कपड़े सिलते है, और हस्तनिर्मित सामान तैयार करते है - प्रत्येक सीमित संसाधनों के बावजूद जीवित रहने का पुरजोर प्रयास करते है। भले ही वे व्यवधान पैदा करते हो और हमारी संवेदनाओं को ठेस पहुंचाते हो, लेकिन उनका अथक दृढ़ संकल्प कुछ ऐसा है जिसकी हमें प्रशंसा करना चाहिए और उनका समर्थन करना चाहिए।

सदियों से, भारत ने ज्ञान और दर्शन प्रदान करते हुए अपनी समझ के साथ दुनिया को आकार दिया है। आज, हमारे लोग वैश्विक उद्यमों का प्रबंधन करते हैं और दुनिया भर की अर्थव्यवस्थाओं में योगदान करते हैं। फिर भी घर पर, उद्यमशीलता की भावना का पुनर्जागरण दिखने के बावजूद भी, बहुत से लोग अभी भी गरीबी से बाहर निकलने के लिए संघर्ष करते हैं। एक रोटेरियन के रूप में, हमारे पास इसे बदलने की शक्ति है। हमारे द्वारा बनाया गया हर अवसर न केवल एक व्यक्ति को गरीबी से बाहर निकालता है, बल्कि पूरे परिवार का उत्थान करता है, जिससे भविष्य का मार्ग प्रशस्त होता है जहां हमारे बच्चे एक सुरक्षित और समृद्ध दुनिया में कामयाब हो सकते हैं।

मैंने मंडलों एवं क्लबों में अपनी यात्राओं के दौरान रोटेरियनों की प्रतिभा, करुणा और समर्पण को प्रत्यक्ष रूप से देखा है। हमारे सदस्य दूसरों की मदद करने की स्वाभाविक इच्छा के साथ अपने पिछले प्रयासों से बढ़कर करने के लिए उत्सुक हैं। हमारे नेतृत्वकर्ता क्लब अनुभव को समृद्ध करने पर ध्यान दे रहे हैं, जिससे मजबूत संबंध बनते है और कार्यक्रमों एवं परियोजनाओं में अधिक भागीदारी मिलती है। मैं विश्वास के साथ कह सकता हूं कि रोटरी में एक पल भी ऐसा नहीं गुजरता जब कोई रोटेरियन के प्रयासों और योगदान से सीधे लाभान्वित नहीं होता। कोई अन्य संगठन इस तरह के वैश्विक प्रभाव का दावा नहीं कर सकता है।

*प्रोजेक्ट पॉजिटिव हेल्थ* एक राष्ट्रीय पहल है जिसका उद्देश्य चलने, व्यायाम करने और सही खाने के महत्व के बारे में जागरूकता फैलाना है। मैं आप सभी को इन स्वस्थ आदतों को अपनाने और उन्हें अपने परिवार और दोस्तों के बीच प्रोत्साहित करने का आग्रह करता हूं। ध्यान देने के लिए एक और महत्वपूर्ण चीज़ है डीईआई - विविधता, निष्पक्षता और समावेश। जबकि हम एक विविध राष्ट्र हैं, समानता और समावेश पर अभी भी ध्यान देने की आवश्यकता है। यह समय है कि हम इन मूल्यों को अपने क्लबों और समुदायों में निहित करने के लिए कदम उठाएं। एक अधिक समरूप एवं समावेशी समाज आंतरिक संघर्षों के खिलाफ हमारी सुरक्षा करता है।

अंत में, मैं आपके समर्थन के लिए अपनी गहरी कृतज्ञता व्यक्त करना चाहता हूं। रोटरी का प्रभाव दुनिया भर में महसूस किया जाता है, और यह आपकी प्रतिबद्धता है जो इसे संभव बनाती है। हमारी यात्रा में आगे बढ़ते हुए, आइए हम सेवा, उत्थान और प्रेरणा के अपने मिशन में एकजुट रहें। हम इस वर्ष को उल्लेखनीय उपलब्धियों और स्थायी परिवर्तन के साथ अलग बनाएंगे, और *रोटरी का जादू* फैलाना जारी रखेंगे।

**राजु सुब्रमण्यन**
रो ई निदेशक, 2023-25

2025
कन्वेंशन

# शांति सम्मेलन

कैलगरी में रोटरी अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन में भाग लेना शांति का समर्थन करने का एक तरीका है। जब आप हाउस ऑफ फ्रेंडशिप में जाकर साथी सदस्यों से मिलते हैं और उनसे क्लबों की परेशानियों के बारे में बात करते हैं तो आप अंतर्राष्ट्रीय समझ को बढ़ावा देते हैं। सदस्य तब शांति का विस्तार करते है जब वे पेपर क्रेन पर अपनी उम्मीदों को लिखकर पीस पार्क प्रदर्शनी में उसे शांति के पेड़ पर लटका देते हैं। रोटरी ने अपनी शुरुआत से ही शांति को बढ़ावा दिया है: 1914 में प्रथम विश्व युद्ध से एक महीने पहले ह्यूस्टन में आयोजित पांचवें सम्मेलन में सदस्यों ने एक अंतर्राष्ट्रीय शांति आंदोलन का समर्थन करने के लिए मतदान किया।

मई में सिंगापुर में रो ई ने रोटरी पीस सेंटर कार्यक्रम की घोषणा के 25 साल पूरे किए। रोटरी पीस फेलो मारिया एंटोनिया पेरेज ने कहा, ''शांति में विश्वास रखने के लिए उम्मीद रखनी पड़ती है और ऐसा करने के लिए व्यक्ति को जिद्दी और आशावादी दोनों होने के साथ परिवर्तन लाने हेतु डटे रहने के लिए उत्सुक भी होना चाहिए।''

सम्मेलन प्रमुख वक्ताओं के साथ कार्यवाही को प्रेरित करते हैं, जिनमें 2009 में संयुक्त राष्ट्र शांति दूत और संरक्षणवादी जेन गुडॉल शामिल हैं। रंगभेद का विरोध करने के लिए नोबेल शांति पुरस्कार से सम्मानित आर्कबिशप डेसमंड टूटू ने उस वर्ष एक पूर्व-सम्मेलन शांति संगोष्ठी में भाषण दिया था।

जहाँ रोटरी का सम्मेलन शांति निर्माण का प्रतीक है वहीं कैलगरी में लाल धातु से बना शांति ब्रिज है जिसपर हर दिन हजारों कैनेडियन और आगंतुक पैदल चलते है, बाइक चलाते हैं और सेल्फी के लिए रुकते हैं। इसका नाम शहीद सैनिकों के बलिदानों की याद दिलाता है।

सम्मेलन में रोटरी एक्शन ग्रुप फॉर पीस द्वारा स्थापित शांति पार्क चिंतन-मनन के लिए एक सुखमय स्थल प्रदान करता है। साथ ही सिंगापुर में शांति स्तंभों और कागज के फूलों के बगीचे के बीच एक शीर्ष स्नैपशॉट स्थल है। अधिक शांतिपूर्ण दुनिया में योगदान देने के लिए कैलगरी 21-25 जून को चुनें।

***अधिक जानें और***
**convention.rotary.org**
***पर रजिस्टर करें।***

## रोटरी संख्या

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| रोटरी क्लब | : | 36,635 | रोटरी सदस्य | : | 1,163,664 |
| रोटरेक्ट क्लब | : | 8,938 | रोटरेक्ट सदस्य | : | 118,727 |
| इंटरेक्ट क्लब | : | 15,195 | इंटरेक्ट सदस्य | : | 349,577 |
| आरसीसी | : | 13,588 | | | |

सितंबर 17, 2024 तक


## गवर्नर्स काउंसिल

RID 2981 बस्करन एस
RID 2982 शिवकुमार वी
RID 3000 राजा गोविंदसामी आर
RID 3011 महेश पी त्रिखा
RID 3012 प्रशांत राज शर्मा
RID 3020 डॉ एम वेंकटेश्वर राव
RID 3030 राजिंदर सिंह खुराना
RID 3040 अनीश मलिक
RID 3053 राहुल श्रीवास्तव
RID 3055 मोहन पाराशर
RID 3056 डॉ राखी गुप्ता
RID 3060 तुषार शाह
RID 3070 डॉ परमिंदर सिंह ग्रोवर
RID 3080 राजपाल सिंह
RID 3090 डॉ संदीप चौहान
RID 3100 दीपा खन्ना
RID 3110 नीरव निमेश अग्रवाल
RID 3120 परितोष बजाज
RID 3131 शीतल शरद शाह
RID 3132 डॉ सुरेश हीरालाल साबू
RID 3141 चेतन देसाई
RID 3142 दिनेश मेहता
RID 3150 शरथ चौधरी कटरागड्डा
RID 3160 डॉ साधु गोपाल कृष्ण
RID 3170 शरद पाई
RID 3181 विक्रमदत्त
RID 3182 देव आनंद
RID 3191 सतीश माधवन कननोर
RID 3192 एन एस महादेव प्रसाद
RID 3201 सुंदरवदिवेलु एन
RID 3203 डॉ एस सुरेश बाबू
RID 3204 डॉ संतोष श्रीधर
RID 3211 सुधी जब्बार
RID 3212 मीरनखान सलीम
RID 3231 राजनबाबू एम
RID 3233 महावीर चंद बोथरा
RID 3234 एन एस सरवनन
RID 3240 सुखमिंदर सिंह
RID 3250 बिपिन चाचान
RID 3261 अखिल मिश्रा
RID 3262 यज्ञनिस महापात्रा
RID 3291 डॉ कृष्णेंदु गुप्ता



प्रकाशक एवं मुद्रक **पी टी प्रभाकर**, 15 शिवास्वामी स्ट्रीट, मायलापोर, चेन्नई - 600004, रोटरी न्यूज़ ट्रस्ट के लिए रासी ग्राफिक्स प्राइवेट लिमिटेड, 40, पीटर्स रोड, रोयापेट्टा, चेन्नई - 600014 से मुद्रित एवं रोटरी न्यूज़ ट्रस्ट, दुगड़ टावरस, 3rd फ्लोर, 34 मार्शलस रोड, एगमोर, चेन्नई - 600008 से प्रकाशित।
संपादक: **रशीदा भगत**



योगदान का स्वागत है लेकिन संपादित किया जाएगा। प्रकाशित सामग्री का आरएनटी की अनुमति सहित, यथोचित श्रेय देते हुए प्रयोग किया जा सकता है।


**Website**

## न्यासी मंडल

राजु सुब्रमण्यन RID 3141
**रो ई निदेशक और अध्यक्ष, रोटरी न्यूज़ ट्रस्ट**

अनिरुधा रॉयचौधरी RID 3291
**रो ई निदेशक**

डॉ भरत पांड्या RID 3141
**टीआरएफ ट्रस्टी**

राजेंद्र के साबू RID 3080
कल्याण बेनर्जी RID 3060
शेखर मेहता RID 3291
अशोक महाजन RID 3141
पी टी प्रभाकर RID 3234
डॉ मनोज डी देसाई RID 3060
सी भास्कर RID 3000
कमल संघवी RID 3250
डॉ महेश कोटबागी RID 3131
ए एस वेंकटेश RID 3234
गुलाम ए वाहनवती RID 3141

## निर्वाचित रो ई निदेशक

एम मुरुगानंदम RID 3000
के पी नागेश RID 3191

### कार्यकारी समिति के सदस्य (2024-25)

एन एस महादेव प्रसाद RID 3192
**अध्यक्ष, गवर्नर्स काउंसिल**

अखिल मिश्रा RID 3261
**सचिव, गवर्नर्स काउंसिल**

आर राजा गोविंदसामी RID 3000
**कोषाध्यक्ष, गवर्नर्स काउंसिल**

राखी गुप्ता RID 3056
**सलाहकार, गवर्नर्स काउंसिल**



**संपादक**
रशीदा भगत

**उप संपादक**
जयश्री पद्मनाभन

**प्रशासन और विज्ञापन प्रबंधक**
विश्वनाथन के

**रोटरी न्यूज़ ट्रस्ट**
3rd फ्लोर, दुगर टावर्स, 34 मार्शल रोड, एग्मोर
चेन्नई 600 008, भारत
फोन: 044 42145666
*rotarynews@rosaonline.org*
*www.rotarynewsonline.org*

**Magazine**


**फाउंडेशन ट्रस्टी अध्यक्ष का संदेश**

# एक नायक की स्मृति में

24 अक्टूबर को विश्व पोलियो दिवस, प्रगति का जश्न मनाने और इस बीमारी को खत्म करने के काम को पूरा करने हेतु खुद को फिर से समर्पित करने का समय है। हमें उन अनगिनत रोटेरियनों और रोटरेक्टरों का भी सम्मान करना चाहिए जिन्होंने इस कार्य में अपना समर्थन दिया है। ऐसे ही एक नायक थे जॉन सीवर।

अप्रैल में 92 वर्ष की आयु में सीवर का निधन हो गया जो रोटरी क्लब पोटोमैक, मैरीलैंड के सदस्य थे। यूएस नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ हेल्थ के एक संक्रामक रोग विशेषज्ञ रहे सीवर ने 1979 में सिफारिश की कि रोटरी पोलियो उन्मूलन को एक वैश्विक लक्ष्य बनाए, फिलीपींस में एक राष्ट्रीय टीका अभियान के रूप में जो शुरू हुआ उसे विस्तारित करें।

यह कल्पना करना भी मुश्किल है कि सीवर के दशकों के नेतृत्व, विशेषज्ञता और समर्थन के बिना हम आज कहाँ होते। अगस्त में मुझे उनके परिवार को सीवर के नाम पर पोलियो मुक्त जगत के लिए अंतर्राष्ट्रीय सेवा पुरस्कार और एक क्रिस्टल मान्यता पुरस्कार प्रदान करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ।

*मार्क मेलोनी (बाएं) जॉन सेवर की पत्नी गेरेन (बीच में) को पोलियो मुक्त विश्व के लिए अंतर्राष्ट्रीय सेवा पुरस्कार प्रदान करते हुए। आईपीपीसी के अध्यक्ष माइकल मेकगवर्न दाईं ओर हैं।*

उन्होंने जिस शुरुआत में मदद की, पोलियोप्लस, रोटरी में एक कार्य योजना लागू करने का एक उदाहरण बन गया। उनके और अनगिनत अन्य लोगों की स्वयंसेवा और उदारता की वजह से 1988 के बाद से पोलियो के मामलों में 99 प्रतिशत से अधिक की कमी आई है।

कभी-कभी असफलताएं भी हाथ लगती हैं जैसा कि हमने इस साल पाकिस्तान और अफगानिस्तान में बढ़ते मामलों को देखकर अनुभव किया। लेकिन हमने फिर सफलता भी प्राप्त की। इस साल हमने मलावी और मोज़ाम्बिक में इस खतरनाक पोलियोवायरस के प्रकोप को समाप्त कर दिया जो 2021 में पाकिस्तान से आयात हुआ था और हमने इस पोलियोवायरस के रूपांतरण के मामलों को भी कम किया।

मजबूत स्वास्थ्य प्रणालियों एवं समुदायों के साथ पोलियो मुक्त दुनिया प्रदान करना न केवल मानवता का अधिकार है बल्कि भावी पीढ़ियों के लिए एक स्मार्ट निवेश भी है। यह दुनिया को रोटरी का सबसे बड़ा उपहार होगा।

क्लब अध्यक्ष जिन्होंने अपना पहला एंड पोलियो नाउ अनुदान संचयन समारोह आयोजित किया से लेकर अधिवक्ताओं, दाताओं और स्वयंसेवकों तक अनगिनत नायकों ने सीवर के नेतृत्व में काम किया। हम सब इस कहानी का हिस्सा हैं।

*rotary.org/donate* पर अब पोलियो समाप्त करने के लिए दान करें। गेट्स फाउंडेशन के दो के लिए एक के मिलान की वजह से आपका उपहार तीन गुना हो जाएगा। अपने क्लब या मंडल में पोलियोप्लस सोसाइटी से जुड़े या इसकी शुरूआत करें। अपने समुदाय में जागरूकता बढ़ाएं कि हम इतिहास में केवल दूसरी बार मानव रोग को कैसे खत्म करेंगे।

तो चलिए हम दुनिया के बच्चों से किए गए अपने वादे को पूरा करें और पोलियो को हमेशा के लिए समाप्त करें।

**मार्क डेनियल मेलोनी**
ट्रस्टी अध्यक्ष, द रोटरी फौउंडेशन

*भारतीय विद्या भवन में अपने कार्यालय में पूर्व रो ई अध्यक्ष राजेंद्र साबू।*

# रोटरी के दिलों के राजा

रशीदा भगत

**पूर्व रो ई अध्यक्ष राजा साबू के 90 साल पूरे करने पर रोटरी न्यूज़ उनके नेतृत्व में की गई विशाल सेवा परियोजनाओं, रोटेरियनों के मार्गदर्शन और नेताओं के सृजन में उनकी अद्भुत भूमिका पर प्रकाश डालता है।**

रोटरी से संबंधित दौरे के लिए चंडीगढ़ की यात्रा करने वाले किसी भी व्यक्ति को राजेंद्र साबू के रोटरी को दिए गए योगदान के बारे में सुनने को मिलेगा ही वो भी केवल एक रो ई अध्यक्ष के रूप में ही नहीं बल्कि रो ई निदेशक, मंडल गवर्नर या क्लब अध्यक्ष के रूप में भी उनके शुरुआती वर्षों से ही।

और यदि आप इस प्रतिष्ठित रोटरी क्लब चंडीगढ़ से जुड़ी किसी भी परियोजना या समारोह के लिए वहाँ मौजूद हैं तो आप निश्चित रूप से उस व्यक्ति से मिलेंगे जिसने हाल ही में अपने 90 वर्ष पूरे किए हैं इसके बावजूद भी रोटरी से जुड़े किसी भी कार्य के लिए उनके उत्साह, जुनून और प्यार में कोई कमी नहीं दिखाई देगी और आपको उन असंख्य तरीकों के बारे में भी पता चलेगा जिनसे रोटरी ने चंडीगढ़ की ट्राइसिटी -जिसमें चंडीगढ़, मोहाली और पंचकुला शहर आते है - में इतने सारे जीवन को छुआ है और अभी भी छू रही है। आपको प्रत्यक्ष रूप से क्लब के सदस्यों की आँखों में वो वास्तविक स्नेह और सम्मान देखने को मिलेगा जो उनके दिल में बसा हुआ है और वो उत्सुकता भी दिखाई देगी जिससे वो उनका समर्थन, अनुमोदन, प्रोत्साहन पाने के लिए उनकी ओर देखते हैं।

पिछले एक दशक में मैंने इस बारे में बहुत सुना कि कैसे साबू ने शिक्षा और स्वास्थ्य सेवा से संबंधित सामुदायिक सेवा परियोजनाओं की अवधारणा, अपना समर्थन और नेतृत्व प्रदान करके ट्राइसिटी चंडीगढ़ के रोटेरियनों, खासकर अपने क्लब पर अपना जादू चलाया है। और 90 साल की उम्र में भी अगर वह शहर में है तो वह क्लब की किसी भी बैठक में शामिल होने से नहीं चूकते। उनके बारे में और अधिक

जानने के लिए मैं अगस्त की एक गर्म और उमस भरी दोपहरी में चंडीगढ़ गई, मेरे दिमाग में कई सवाल उठ रहे थे और मैं यह भी स्वीकार करती हूँ कि मेरे मन में कुछ संदेह भी था जो पत्रकारिता के पेशे में इतने लंबे समय से होने पर एक पत्रकार का निरंतर साथी बन जाता है, मैं उनकी कुछ प्रतिष्ठित परियोजनाओं को देखना चाहती थी, उनके क्लब के सदस्यों से मिलना चाहती थी और साबू के जादू को महसूस करना चाहती थी।

दो दिनों की व्यस्तता और रोटरी क्लब चंडीगढ़ (रो ई मंडल 3080) द्वारा की गई कुछ परियोजनाओं, जिसके साथ पूर्व रो ई अध्यक्ष अभी भी सक्रिय रूप से जुड़े हुए हैं, को देखकर मैं दंग रह गई, साबू उस छोटे से समूह के साथ तेज़ी से और खुशी से आगे बढ़ते हैं जो मुझे उन परियोजनाओं का दौरा करवा रहा था। अध्यक्ष के रूप में उनके नेतृत्व में निर्मित भारतीय विद्या भवन के तीसरे स्कूल के लंबे, चमकदार और शानदार साफ-सुथरे गलियारों पर चलते समय या मोहाली के इतने विशाल और भव्य डॉ बीआर अंबेडकर स्टेट इंस्टीट्यूट ऑफ मेडिकल साइंसेज अस्पताल के जटिल, असमान और भीड़-भाड़ वाले रास्तों, नुक्कड़ों और कोनों से गुजरते हुए मुझे उनमें थकान का कोई भी संकेत नज़र नहीं आया। साबू के प्रोत्साहन और समर्थन की बदौलत रोटरी क्लब चंडीगढ़ की अध्यक्ष-निर्वाचित आभा शर्मा का एक सपना जो उन्होंने कुछ साल पहले क्लब सचिव के रूप में देखा था, पिछले साल क्लब के एक सक्रिय आईपीपी अनिल चड्ढा ने पूरा किया। इसके परिणामस्वरूप एक अत्याधुनिक मानव दूध बैंक स्थापित की गई जहाँ नवीनतम उपकरणों और शानदार नई सुविधाओं से भी अधिक कीमती है अस्पताल के निदेशक डॉ भवनीत भारती का जुनून और उनकी प्रतिबद्धता, जिन्हें आभा ने अपने क्लब में शामिल होने के लिए प्रोत्साहित किया ताकि वे एक साथ मिलकर मानव दूध बैंक स्थापित करने के अपने सपने को साकार कर सकें। (इस परियोजना का विवरण आने वाले अंक में पढ़ें)। ''लेकिन हम पीआरआईपी साबू और पीडीजी

*ऊपरः अपनी पुस्तक* - माई लाइफ जर्नी, ए पर्सनल मेम्वार *की एक प्रति पर हस्ताक्षर करते हुए।*
*नीचेः कोलकाता में एक कार्यक्रम में मदर टेरेसा का अभिवादन करते हुए पीआरआईपी साबू। पीआरआईपी रॉबर्ट बार्थ दाईं ओर हैं।*

*ऊपर: कुष्ठ रोग कॉलोनी में पीडीजी मधुकर मल्होत्रा (दाएं से तीसरे) के साथ पीआरआईपी साबू।*

*बाएं: मानव दूध बैंक में आईपीपी अनिल चड्ढा (बाएं), डॉ भवनीत भारती (दाएं से तीसरे) और पीडीजी मल्होत्रा के साथ।*

*नीचे: भवन विद्यालय में छात्रों के साथ बातचीत करते हुए। चित्र में पीडीजी मल्होत्रा और भवन की प्रिंसिपल विनीता अरोड़ा भी शामिल हैं।*

# उषा साबू के असीम योगदान

चंडीगढ़ में उषा के खूबसूरत घर के बारे में पूर्व रो ई अध्यक्ष के आर रवींद्रन कहते हैं कि इस दंपति ने इतने प्यार, देखभाल और सत्कार से सबका मनोरंजन किया है वो भी केवल राष्ट्रीय नेताओं और अंतर्राष्ट्रीय रोटरी वरिष्ठों का ही नहीं बल्कि सैकड़ों साधारण रोटेरियनों का भी, वहाँ पर उनके साथ हुई बेधड़क बातचीत में मैंने उनसे राजेंद्र साबू की रोटरी यात्रा में निभाई गई उनकी भूमिका के बारे में पूछा। वह मुस्कुराते हुए कहती है, ''इतनी सारी प्यारी चीजें सिर्फ एक छोटे से बीज या एक विचार से शुरू होती हैं।'' वह एक कहानी बताती है कि कैसे एक अंधेरी शाम में अपनी कार से बाहर निकलते समय उन्होंने एक चीख सुनी। ''यह कुष्ठ रोग से पीड़ित एक व्यक्ति की थी जिसने फटे-पुराने कपड़े पहने हुए थे और उसके घावों से खून बह रहा था और मैं केवल उसकी दो आँखें ही देख पा रही थी।'' वह पूरी तरह से हिल गई और उन्होंने हर किसी के साथ इस पर चर्चा की - रेड क्रॉस और इनर व्हील जिनके साथ वह जुड़ी हुई थी और चंडीगढ़ के शीर्ष अधिकारियों से भी।

उस शाम उन्होंने उस आदमी से जाना कि उसके जैसे लगभग 80 या 90 लोग और है जो नदी के पास घास-फूस की जीर्ण-शीर्ण झोपड़ियों में रहते है और अपना गुज़ारा करने के लिए भीख माँगते है। ''उनमें पुरुष, महिलाएं और बच्चे थे। मैं एकदम सदमे में थी और मैंने राजा से कहा कि रोटरी को कुछ करना चाहिए।''

*पीआरआईपी साबू और उषा की शादी की तस्वीर।*

> **"राजा अकेले कुछ नहीं कर सकते थे, लेकिन रोटरी क्लब चंडीगढ़ के सदस्यों के सहयोग से ये सभी बीज अच्छे प्रोजेक्ट के रूप में विकसित हो गए।**

1971 में बोए गए उस छोटे से बीज के परिणामस्वरूप एक सुंदर कॉलोनी तैयार हुई जिसमें अब 172 लोग रहते हैं; बीमारी से पीड़ित वे लोग लंबे समय से पर्याप्त चिकित्सा देखभाल की वजह से ठीक हो गए। उन्हें रोटरी क्लब चंडीगढ़ द्वारा उनकी आजीविका के लिए बकरे दिए गए। कॉलोनी के निवासियों ने एक मंदिर बनाया है; मैंने स्वच्छ एवं पक्के घरों में रहने वाले मुस्कुराते हुए बच्चों और स्वस्थ वयस्कों की छवि देखी।

उषा आगे कहती हैं इसी तरह कई अन्य रोटरी परियोजनाएं एक छोटे से विचार से उत्पन्न हुई। यही एक बीज की शक्ति है। बहुत पहले जब हम चंडीगढ़ के PGIMER में गए तो हमने मरीजों के रिश्तेदारों को गलियारों में या पेड़ों के नीचे लेटे देखा। आप और मैं एक निजी वार्ड में जा सकते हैं, जहाँ हमारे रिश्तेदार रह सकते हैं। लेकिन कम आय वाले मरीजों के रिश्तेदारों के पास रहने की कोई जगह नहीं थी। इसलिए मैंने राजा से कहा कि यदि आपका क्लब एक परियोजना की तलाश में है तो आप यहाँ एक कर सकते है। इस तरह (1986 में) मरीजों के रिश्तेदारों के लिए पीजीआई सराय की स्थापना हुई।

रेड क्रॉस के साथ काम करने और इनर व्हील की सदस्य होने के नाते उषा ने लोगों को खून की कमी के कारण मरते देखा है उस समय कोई स्वैच्छिक रक्तदान नहीं होता था। लोग रक्त देने से बहुत डरते थे; ''इसलिए 1973 में जब चंडीगढ़ ने पहले मंडल सम्मेलन की मेजबानी की तो हमने इच्छुक प्रतिनिधियों से रक्त एकत्रित करने के लिए एक वैन तैयार की। अब बेशक रोटरी ब्लड बैंक रिसोर्स सेंटर एक ऐसी परियोजना है जिसपर रोटरी क्लब चंडीगढ़ के सदस्यों को बहुत गर्व है।''

एक और प्रमुख क्लब परियोजना - *गिफ्ट ऑफ लाइफ: रोटरी हार्टलाइन* - ऐसे ही एक

''छोटे बीज'' या विचार से आई थी। उषा याद करती हैं कि एक बार एक घरेलू सहायक ने उन्हें दिल्ली में रहने वाली अपनी छोटी बेटी के बारे में बताया जिसकी सांस फूलने लगी थी। ''मैंने उससे कहा कि तुम उसे चंडीगढ़ क्यों नहीं ले आते। हमने पीजीआई में उसकी जांच कराई और पाया कि उसके दिल में छेद है। उसकी सर्जरी में लगभग ₹40,000 का खर्च आया जो उस समय बहुत बड़ी रकम थी पर मैंने इसके लिए भुगतान किया।''

दो साल बाद वह फिर आया और कहा कि उसके छोटे बेटे को भी यही समस्या थी। एक बार फिर उसकी मदद की गई तो यह खबर फैल गई कि हम नि:शुल्क सर्जरी आयोजित कर रहे है और अपने बीमार बच्चों के साथ लोग हमारे दरवाजे पर लाइन लगाने लगे। मैंने राजा से कहा: 'शायद यह कोई उद्देश्य है वरना भगवान इन लोगों को हमारे पास क्यों भेजते?' उन्होंने इनर व्हील के सामने भी यह मुद्दा रखा और उन्होंने यहाँ-वहाँ एक अद्भुत ऑपरेशन शुरू किया, ''लेकिन हमारे पास उतना पैसा नहीं था और इसका प्रभाव हमारी अन्य परियोजनाओं पर पड़ने लगा। अंततः रोटरी ने इसका जिम्मा लिया और इस तरह *रोटरी हार्टलाइन* परियोजना का जन्म हुआ। और फिर हम अफ्रीका जाने लगे जहाँ यह समस्या बहुत बड़ी है। इसलिए अफ्रीकी बच्चे आना शुरू हुए और हमने पाकिस्तानी बच्चों के दिल का ऑपरेशन भी किया।''

वह अफसोस के साथ कहती हैं, ''पीडीजी मधुकर अभी-अभी एक मेडिकल मिशन से लौटे हैं; हम नहीं जा सके क्योंकि अब हमारे बच्चे इसकि अनुमति नहीं देते।''

फिर खुश होकर वह मुस्कुराते हुए कहती है... ''देखिए कि कैसे दयालुता, योगदान और दूसरों से प्राप्त समर्थन का बीज पौधों और पेड़ों में बदल जाता हैं। यदि आपके पास दृढ़ इच्छा, ईमानदारी है और यदि आपका मन और दिल काफी बड़ा है तो आपको समर्थन की कोई कमी नहीं होती। राजा अकेले कुछ नहीं कर सकते थे मगर अपने क्लब के सदस्यों के समर्थन की वजह से ये सभी विचार एक शानदार परियोजनाओं में बदल गए।''

*हॉलीवुड की दिग्गज ऑड्रे हेपबर्न के साथ।*

मधुकर मल्होत्रा के समर्थन के बिना इसे नहीं कर सकते थे,'' आभा कहती हैं।

उत्साह, जोश और ऊर्जा के साथ एक नौजवान की तरह ही सीढ़ियाँ चढ़ते या उतरते समय उनका साथ देने के लिए किसी के भी मदद के हाथ को दृढ़ता से मना करते हुए साबू ने मुझे पूरा भवन घुमाया, जिसके साथ वह 1978 से जुड़े हुए हैं और 1996 से इसके अध्यक्ष के रूप में नेतृत्व कर रहे हैं। बाद में हम न्यू चंडीगढ़ में इस भवन के तीसरे आलीशान विद्यालय में जाते हैं, जो साबू का एक सपना था और इसे साकार करने में संगठन के सचिव के रूप में पीडीजी मल्होत्रा ने बहुत मेहनत की थी। जिसके परिणामस्वरूप एक शानदार स्कूल तैयार हुआ जो 5 एकड़ के एक सुंदर परिदृश्य में स्थित है और यह न केवल भारत में बल्कि दुनिया भर के सबसे आधुनिक सुविधाओं और उपकरणों वाले स्कूलों के साथ प्रतिस्पर्धा कर सकता है और यहाँ अब एक स्विमिंग पूल भी बनने जा रहा है।

लेकिन जब साबू विद्यालय की कक्षाओं में विशेष बच्चों - भवन में ऐसे 60 बच्चे

*जर्मनी के चांसलर डॉ हेल्मुट कोहल के साथ।*

थे - और बाकी बच्चों से बातचीत कर रहे थे तब उनकी आंखों में जो चमक और चेहरे पर जो विशेष मुस्कान थी उसे देखकर बच्चे भी खुशी से तात्कालिक प्रतिक्रिया दे रहे थे। यह वही जुड़ाव था जो अफ्रीका और भारत में चिकित्सा मिशनों या अन्य सेवा परियोजनाओं पर उनके साथ काम करने वाले रोटेरियनों ने वर्षों से अपने लिए महसूस किया है।

जब मैंने बच्चों के साथ महसूस किए गए इस जादुई एहसास पर टिप्पणी की तो तीनों भवन स्कूलों की वरिष्ठ प्रिंसिपल, विनीता अरोड़ा ने उत्साह से सिर हिलाकर कहा, ''हां, बच्चों के पास लोगों के वास्तविक स्नेह को पहचानने की अनूठी शक्ति होती है।'' यह पूछे जाने पर कि वह भवन और उसके स्कूलों में साबू के योगदान की व्याख्या कैसे करेंगी, तो वह कहती हैं, ''यह भवन रोटरी और ज़िंदगी दोनों में साबू की यात्रा का एक अभिन्न अंग है।''

हवाई अड्डे से होटल जाने के रास्ते में हम कुष्ठ रोगियों की एक कॉलोनी में रुके जो साबू द्वारा उनके शुरुआती वर्षों में शुरू की गई और पोषित की गई प्रतिष्ठित परियोजनाओं में से एक है। लेकिन जैसा कि उनके द्वारा शुरू की गई अधिकांश सेवा परियोजनाओं में हुआ है कि उनकी पत्नी उषा ने ही सबसे पहले उनके दिमाग में किसी परियोजना का बीज बोया। (उषा के योगदान पर बॉक्स देखें)।

लेकिन एक विशाल परियोजना जो राजेंद्र साबू का पर्याय है वो अफ्रीका और भारत में किए गए 30-अद्वितीय रोटरी मेडिकल मिशन हैं। यहाँ भी उषा ने ''एक विचार का बीज बोया'' जैसा कि वह कहती हैं यह उन्होंने इवान्स्टन में नवनिर्वाचित और फिर सेवारत रो ई अध्यक्ष के रूप में बिताए गए व्यस्ततम दो वर्षों और फिर टीआरएफ अध्यक्ष और न्यासी के रूप में सेवा देने के बाद उनके रोटरी जीवन में आए खालीपन को भरने के लिए किया।

भारत लौटने के बाद पीडीजी डॉ माधव बोराटे ने साबू को पुणे में

पूर्व अमेरिकी राष्ट्रपति जॉर्ज एच डब्ल्यू बुश द्वारा ओवल ऑफिस में पीआरआईपी साबू और उषा का स्वागत किया गया।

अफ्रीका में एक मेडिकल मिशन में।

*ऊपरः पीआरआईपी साबू पीआरआईडी ओ पी वैश के साथ।*
*नीचेः उषा और पीआरआईपी साबू अपने पोतों के साथ।*

एक सम्मेलन के लिए आमंत्रित किया जहाँ अमेरिका से डॉक्टरों की एक टीम पोलियो शिविर आयोजित करने के लिए आई थी। टीआरएफ अध्यक्ष के रूप में उनका कार्यकाल समाप्त हो रहा था, तो मैंने उनसे पूछा अब क्या करेंगे और उन्होंने कहा सोचेंगे। जब उन्होंने मुझे पोलियो शिविर के लिए सालाना पुणे आने वाले अमेरिकी डॉक्टरों के बारे में बताया तो मैंने कहा कि हमारे यहाँ भी डॉक्टरों की कोई कमी नहीं है। उस समय अफ्रीका भूख, पोलियो और एचआईवी/एड्स की वजह से खबरों में था, तो हम वहाँ मदद क्यों नहीं कर सकते, उषा याद करती हैं। डॉक्टरों की अमेरिकी टीम के एक सदस्य भारतीय मूल के नंदलाल थे, जिनका युगांडा से कुछ संबंध था। उन्होंने कहा कि वह वहाँ भारतीय रोटरी डॉक्टरों के लिए एक चिकित्सा मिशन का आयोजन कर सकते हैं। ज़रा देखिए कि पुणे सम्मेलन से एक विचार कैसे उत्पन्न हुआ और इसे निष्पादित करने के लिए सब कुछ कैसे होता चला गया, वह मुस्कुराती हैं।

मगर, ''ये सभी सेवा परियोजनाएं, चाहे वह कुष्ठ कॉलोनी हो, चिकित्सा मिशन हो, रक्त संसाधन केंद्र हो, (पीजीआई सराय, हार्टलाइन, शांति स्मारक, जवानों को दिवाली की मिठाई देना) आदि, उनके बच्चों की तरह हैं और हमारे पूरे परिवार को रोटरी में उनके काम पर बहुत गर्व है, यदि क्लब के सदस्यों ने पूरे दिल से इन परियोजनाओं का समर्थन नहीं किया होता तो कुछ भी नहीं किया जा सकता था। हमारे पास एक बहुत अच्छा क्लब है जो आपके द्वारा दिए गए प्रत्येक विचार को गंभीरता से लेता हैं। अब हमारी हर महीने टीबी रोगियों को भोजन के 125 पैकेट देने की एक परियोजना चल रही है; मैं खुद वहाँ कई बार गई हूँ। और केवल हमारा क्लब ही नहीं भारत का प्रत्येक रोटरी क्लब सामुदायिक सेवा कर रहा है क्योंकि वहाँ इसकी बहुत जरूरत है। अगर आप अपनी आंख, कान, दिमाग और दिल खुला रखते हैं तो आपके पास हर जगह सेवा करने का अवसर होता हैं।''

जब मैंने कहा कि वह हमेशा ''हमारा क्लब'' कहती है हालांकि वह खुद एक रोटेरियन नहीं है और फिर भी उन्होंने रोटरी में इतना बड़ा योगदान दिया है, उषा हंसते हुए

# साबू पर PRIP बेनर्जी और PRIP रवींद्रन के विचार

*चेन्नई के ज़ोन इंस्टीट्यूट में PRIP के आर रविन्द्रन (बाएं) और PRIP कल्याण बेनर्जी (दाएं) के साथ।*

जहाँ अधिकांश रोटेरियन पूर्व रो ई अध्यक्ष साबू द्वारा वरिष्ठ पदों पर सेवा देने के बाद रोटरी में उनके योगदान पर ध्यान केंद्रित करते हैं वहीं पूर्व रो ई अध्यक्ष कल्याण बेनर्जी सोचते हैं ''कि राजा का सबसे बड़ा योगदान उनके शुरुआती वर्षों, 1965-1985 और उसके एक दशक बाद भी भारत के सभी रोटेरियनों को एक एकजुट रखने का है। उन दिनों सहकर्मी और प्रतिद्वंदी दोनों थे। राजा का योगदान उन सभी को एक माला में मोतियों की तरह पिरोये रखने में था। यह तब की बात थी जब उन्हें अध्यक्ष के रूप में चुना भी नहीं गया था। अपने आसपास अधिक अनुभवी लोगों के होते हुए भी वह रोटरी का प्रतिरूप बनें।''

वह साबू की सही लोगों के चयन की क्षमता पर भी प्रकाश डालते हैं। ''राजा लोगों को जानते थे और लोग भी उन्हें जानते थे। उन्होंने टीआरएफ न्यासी बनने के लिए (पीआरआईपी) के आर रवींद्रन के चुनाव में उचित मदद की वो भी तब जब श्रीलंका के सभी लोग रवि को शायद ही जानते होंगे। और जब उन्हें या अन्य किसी को कानूनी या अन्य चुनौतियों का सामना करना पड़ा तो राजा जानते थे कि कौन सा रोटेरियन, कहाँ और कैसे रोटरी में शांति स्थापित करने और आगे बढ़ने में मदद कर सकता है।''

रवींद्रन का कथन मलार्जर दैन लाइफफ साबू के लिए एकदम उपयुक्त है। ''राजा एक दूरदर्शी, स्वप्नदर्शी, एक निर्माता; एक प्रबुद्ध व्यक्ति है। उनकी प्रतिभा, खुले दिल की उदारता और उनका शानदार नेतृत्व उनकी यात्रा से स्पष्ट है। उन्होंने यह उदाहरण प्रस्तुत किया कि कोई भी व्यक्ति ईमानदारी से समझौता किए बिना अपने जीवन, व्यवसाय और रोटरी में कामयाब हो सकता है, हमेशा अपने वादे निभा सकता है, निष्पक्ष व्यवहार करते हुए शालीनता और सहानुभूति दिखा सकता है।''

बेनर्जी आगे कहते हैं कि रोटरी का शांति कार्यक्रम, ''जो आज शायद विश्व शांति में रोटरी का सबसे महत्वपूर्ण योगदान है, राजा के दिमाग की ही उपज है। पिछले पच्चीस वर्षों में शायद यह लोगों को एक साथ लाने में रोटरी का सबसे स्थायी योगदान रहा है।''

उन्हें निरपवाद दिग्गज कहते हुए रवींद्रन कहते हैं कि ''अक्सर दिग्गज व्यक्ति लोगों को प्रभावित और प्रेरित करने के लिए तथ्य और मिथक को मिश्रित करके उन्हें भ्रमित करते है। हालांकि, राजा एक ऐसे नेता हैं जिनकी कहानी वास्तविकता पर आधारित है। अडिग निष्ठा को प्रेरित करने की उनकी क्षमता, जैसा उन्होंने मेरे और दूसरों के साथ किया, इस असाधारण नेतृत्व गुणों की साक्षी है।''

हालांकि उनके आखिरी शब्द उनकी पत्नी उषा को समर्पित है; ''उनकी प्यारी, उदार पत्नी उषा द्वारा निभाई गई महत्वपूर्ण भूमिका'' पर टिप्पणी करते हुए रवींद्रन कहते हैं, ''कई मायनों में राजा की उपलब्धियों के पीछे की मताकतफ उषा ही हैं। उनके निहत्थे तरीके, उनकी एक नज़र या केवल सिर हिलाना, राजा के फैसले का मार्गदर्शन करने के लिए पर्याप्त था।''

कहती है, ''मुझे कभी भी रोटरी से जुडने की आवश्यकता महसूस नहीं हुई क्योंकि मैं दिल और दिमाग से एक रोटेरियन हूँ। ईमानदारी से कहूँ तो हमारा क्लब जो भी परियोजना करना चाहता है... पैसे एकत्रित करने से लेकर समय देने तक, किसी की मेजबानी करना... पहले जीएसई टीमें आती थीं... मैं रोटरी के लिए हमेशा तैयार हूँ।''

उषा के हिसाब से साबू के सर्वोत्तम गुणों में किसी भी चीज़ में अपना सौ प्रतिशत देना, पूरी ईमानदारी और निष्पक्षता शामिल है। उन्होंने निष्पक्षता और अखंडता जैसे रोटरी के मौलिक मूल्यों को दिल से अपनाया है वो भी ठीक उसी समय से जब वह रोटेरियन (1966) बने थे। आज की तरह ही उन दिनों भी भारत चुनावी मुद्दों के लिए प्रसिद्ध था। गवर्नर पद के लिए चुनाव लड़ते वक्त उन्होंने हमारे क्लब के सदस्यों से कहा कि आप क्लबों में जा सकते हैं लेकिन अगर मुझे मंडल सम्मेलन के दौरान रिश्वत देने या मुफ्त में कमरे देने जैसी कोई भी गलत हरकत के बारे में पता चला तो मैं अपनी उम्मीदवारी वापस ले लूंगा। वह ईमानदारी को लेकर बहुत सख्त थे और यही चीज़ उनके निदेशक और अध्यक्ष पदों के लिए चुनाव लड़ने में भी देखी गई।

वह आगे कहती हैं, ''सही का पक्ष लेना और परिणाम की परवाह न करना, जीवन, व्यवसाय, परिवार और रोटरी में हमेशा से उनका सिद्धांत रहे है।''

*PRIP साबू रोटरी क्लब चंडीगढ़ के पिछले अध्यक्षों के साथ, जिसमें क्लब के दो PDG - मधुकर मल्होत्रा (दाएं से दूसरे) और प्रवीण गोयल (दाएं से चौथे) शामिल हैं।*

## क्लब अध्यक्षों ने सेवा के लिए साबू के जूनून की प्रशंसा की

पीडीजी मधुकर मल्होत्रा, जिन्होंने लंबे समय तक पीआरआईपी राजेंद्र साबू के साथ मिलकर काम किया है, चाहे वह चिकित्सा मिशनों की योजना और उनका निष्पादन हो या सचिव के रूप में उनकी भूमिका हो - वे भारतीय विद्या भवन के अध्यक्ष हैं - उन्हें एक अद्भुत व्यक्ति मानते हैं। यह उनका अच्छा काम करने का जुनून ही है जिसने मुझे बहुत प्रभावित किया, चाहे वह रो ई अध्यक्ष के रूप में उनकी थीम - अपने आप से परे देखें - हो या रोटरी का आदर्श वाक्य मस्वयं से ऊपर सेवाफ हो, उन्होंने हमेशा जो कहा है वही किया है। ऐसा नहीं है कि मैं हमेशा से हाँ कहने वाला व्यक्ति रहा हूँ...। मेरे भी उनके साथ मतभेद रहे हैं लेकिन मुझे लगता है कि वो सोचते होंगे कि बंदा तो काम करने वाला है, इसको लगा दो, ये भी फँस जाएगा।

वह यह स्पष्ट करते है कि भले ही उनके साथ काम करना बहुत खुशी की बात है मगर वह सख्त काम करने वाले व्यक्ति है। चिकित्सा मिशनों के दौरान वह सुबह 5 बजे उठते थे और कहते थे चलो टहलने चलें... उनकी ऊर्जा का स्तर बहुत अधिक था और उनकी गति से मेल खाना मुश्किल था।

भवन स्कूलों में उनकी सहभागिता पर, जहाँ वह सचिव हैं, पीडीजी का कहना है कि शुरू में साबू ने उनमें रो ई निदेशक पद के लिए प्रयास करने में दिलचस्पी जगाने की कोशिश की। लेकिन जब मैंने कहा कि मुझे कोई दिलचस्पी नहीं है और मैं अपने परिवार के साथ अधिक समय बिताना चाहता हूँ तो उन्होंने कहा ठीक है, भवन स्कूलों में शामिल हो जाइए जहाँ आपको सप्ताह में दो बार 1-2 घंटे के लिए ही जाना होगा... और अब यह एक पूर्णकालिक कार्य बन गया है! यह मेरा 13वां साल है।

आईपीपी अनिल चड्ढा का कहना है कि साबू के पास एक दूरदर्शी, पूर्ण सहायक और किसी भी समस्या का समाधान खोजने की एक अलौकिक क्षमता है। वह यह कैसे करते है, मुझे नहीं पता लेकिन उनके पास किसी भी विचार को वास्तविकता में बदलने का अनुभव और दृष्टि दोनों है। मिल्क बैंक परियोजना का उदाहरण देते हुए जो दो साल से होने जा रही थी पर पिछले साल चड्ढा के नेतृत्व में निष्पादित हो पाई, वह कहते हैं, ''उन्होंने बस इतना कहा, अनिल यह काम करना है, और हमने किया। यही उनका नेतृत्व है।''

एक अन्य पूर्व अध्यक्ष जिन्होंने साबू के साथ पहले भी काम किया है और उन्हें करीब से देखा है, वह हैं चरणजीत सिंह। वह बातों के धनी है; वह लोगों से उनका सर्वश्रेष्ठ करवाते है और ऐसा

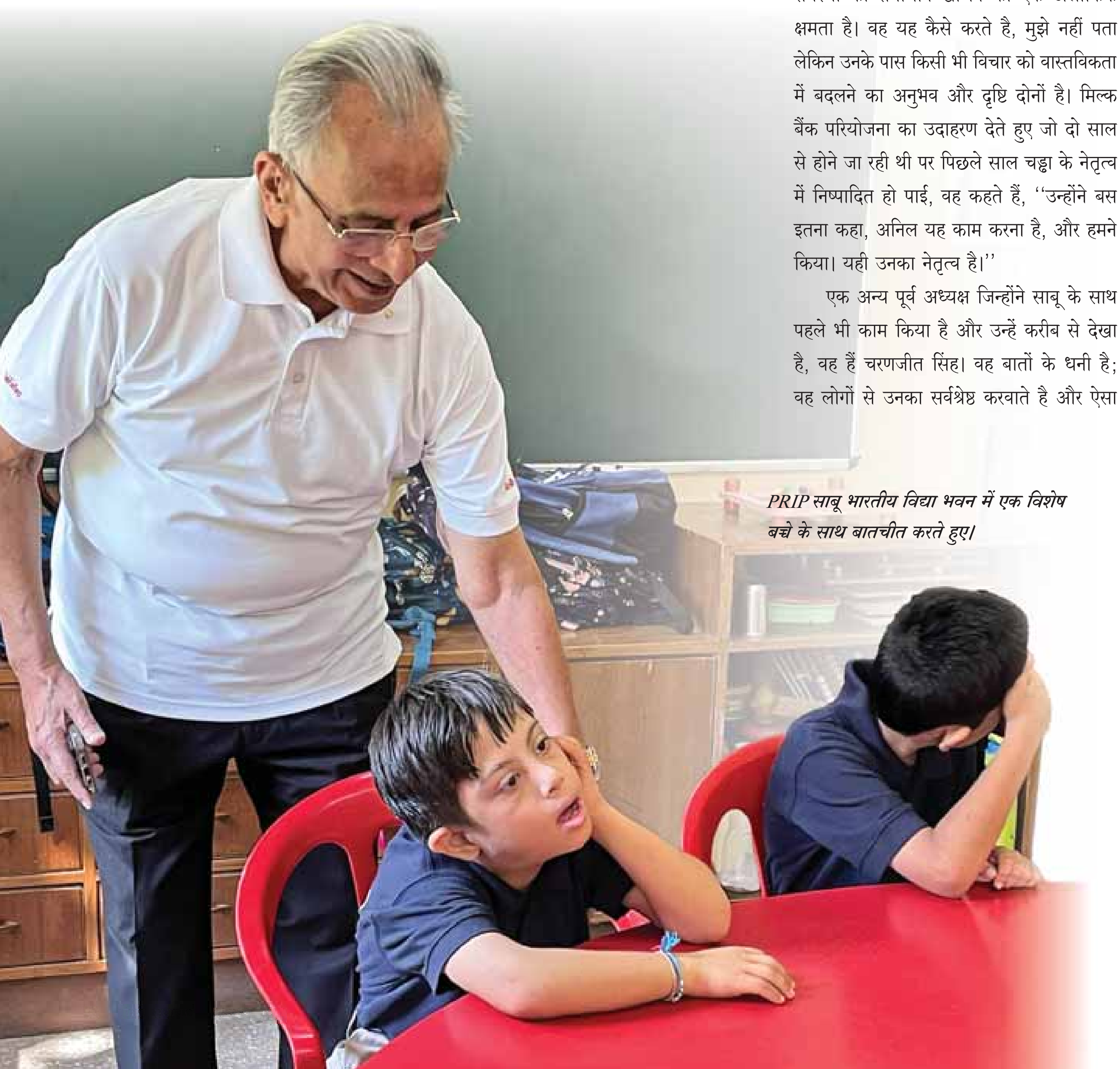

*PRIP साबू भारतीय विद्या भवन में एक विशेष बच्चे के साथ बातचीत करते हुए।*

***बाएं से:*** *क्लब के अध्यक्ष जतिंदर कपूर, PRIP साबू और भवन की प्रिंसिपल विनीता अरोड़ा विशेष बच्चों के साथ बातचीत करते हुए।*

करने के लिए चीजों पर बारीकी से चर्चा करते है और समाधान खोजने में आपकी मदद करते है। एक दूरदर्शी होने के नाते, वह लोगों की जरूरतों को समझते है। अपने शुरुआती वर्षों में वह तुनकमिज़ाज थे और कभी-कभी अपना आपा खो देते थे वो भी इसलिए कि उन्हें अपने साथ काम करने वालों से उत्कृष्टता से अधिक और कुछ नहीं चाहिए था।

सिंह याद करते हैं कि रो ई अध्यक्ष बनने की उनकी यात्रा पर जब उन्हें कुछ चुनौतियों का सामना करना पड़ा, एक दिन मैं उनके कमरे में गया और उनकी लिखावट में कागज की एक पर्ची देखी। मैंने सोचा कि यह एक प्रार्थना होगी मगर वो स्वामी विवेकानंद का एक उद्धरण था जिसमें कहा गया था: 'मुझे मेरे कार्य के बराबर शक्ति दें।' मुझे लगता है कि यह बहुत ही प्रेरणादायक उद्धरण जीवन और रोटरी दोनों में उनकी सफलता की कुंजी भी है।

पीडीजी प्रवीण गोयल साबू की ईमानदारी, प्रतिबद्धता और एक सख्त कार्यवाहक होने की प्रशंसा करते हैं। मैंने उनसे सीखा है कि जब हम किसी से कुछ वादा करते हैं तो उसे पूरा करना पड़ता है।

क्लब अध्यक्ष जितेंद्र कपूर कहते हैं कि वह साबू से 1978 में एक रोटरेकटर के रूप में मिले थे और तब भी क्लब के सचिव और अध्यक्ष के रूप में, जब भी मैंने उन्हें कुछ लिखा - उन दिनों कोई ईमेल नहीं था - मुझे हमेशा उनका जवाब मिला। वह हमारे क्लब के प्रकाश स्तम्भ है; अगर हम इतना सम्मान प्राप्त कर रहे हैं और इस तरह की महान परियोजनाएं कर रहे हैं तो यह सब उनकी वजह से है। और वह बहुत विनम्र है; वह हमेशा कहते हैं कि आप मेरे अध्यक्ष हैं, क्लब की प्रत्येक बैठक में शामिल होते हैं और अगर कभी वह जल्दी जाना चाहते हैं, तो वह हमेशा अनुमति मांगते हैं।

पूर्व अध्यक्षों में जसपाल सिंह सिद्धू ने उनसे विनम्रता सीखी और टीना विर्क उन्हें एक आदर्श मानती हैं जिन्होंने अपनी निरंतर उपस्थिति और समर्पण से यह साबित किया है कि सेवा हमेशा संभव है और यह उम्र या खराब स्वास्थ्य की वजह से कभी नहीं रुकती। यदि हमारा क्लब झुग्गी बस्ती में लंगर करता है तो वह खुद आकर परोसते है; और मैं पिछले वर्ष की ही बात कर रही हूँ। मैं उनकी ऊर्जा और उत्साह से बहुत प्रभावित हूँ।

नवनिर्वाचित अध्यक्ष आभा शर्मा कोविड महामारी के दौरान साबू की सक्रियता देखकर चकित थी।''मैं तब क्लब सचिव थी और हर सुबह सात बजे वह हमें फोन करते थे और पूछते थे कि आज आपकी क्या योजना है, आज आप कहाँ राहत पहुँचा रहे हैं। और वह पूरे दिन का ब्यौरा लेते रहते थे... वह सावधानीपूर्वक सभी चीजों की बारीकियाँ देखते है और हर महत्वपूर्ण पहलू पर ध्यान देते है। यही उनके व्यक्तित्व की खूबसूरती है। लेकिन इन सबसे ऊपर यह उनका जुनून है... और सेवा का यह जूनून ही उन्हें इतना अनूठा बनाता है।''

*चित्र: रशीदा भगत और राजेन्द्र साबु की लाइब्रेरी*

*एन कृष्णमूर्ति द्वारा रूपरेखा*

# नाइजीरियाई डॉक्टरों के लिए नेत्र देखभाल प्रशिक्षण

**जयश्री**

*नेत्र रोग विशेषज्ञ डॉ उफुओमा ओलुमोडेजी (बाएं) एक शिशु में रेटिनोपैथी ऑफ प्रीमैच्योरिटी विकार की जांच करती हुए।*

चेन्नई के राधात्री नेत्रालय में व्यावसायिक प्रशिक्षण कार्यक्रम (वीटीटी) के अंतर्गत नेत्र विशेषज्ञों की एक टीम द्वारा सिखाये गए पाठों की मदद से नाइजीरिया के नेत्र रोग विशेषज्ञ अब आरओपी (रेटिनोपैथी ऑफ़ प्रीमैच्योरिटी) को गंभीरता से लेंगे।

आरओपी एक संभावित नेत्रहीन करने वाला विकार है जो जन्म के समय 3 पाउंड से कम वजन वाले समय से पहले जन्मे शिशुओं को प्रभावित करता है। विट्रोरेटिनल सर्जन और राधात्री नेत्रालय की निदेशक डॉ. वासुमति वेदांतम कहती हैं कि यह दुनिया भर के बच्चों में रोके जाने योग्य अंधेपन के प्रमुख कारणों में से एक है, फिर भी विकासशील देशों में इसे काफी हद तक उपेक्षित किया जाता है। वह आगे कहती है, भारत में यह विकार महामारी के स्तर पर देखा जा सकता है, क्योंकि नवजात गहन देखभाल इकाइयों तक अधिक पहुंच ने समय से पहले जन्मे शिशुओं की जीवित रहने की दर में सुधार तो किया है, लेकिन उनमें परिष्कृत ऑक्सीजन के नियंत्रण की कमी है। सांस लेने की समस्याओं के इलाज के दौरान अतिरिक्त ऑक्सीजन मिलने पर शिशुओं को आरओपी होने की अधिक संभावना होती है।

दो ऑप्टोमेट्रिस्ट, एक नेत्र नर्स और एक नेत्र रोग विशेषज्ञ सहित चार सदस्यीय नाइजीरियाई टीम ने आरओपी एवं बाल नेत्र विकारों के लिए अस्पताल में 15 दिवसीय प्रशिक्षिण प्राप्त किया। वैश्विक अनुदान के माध्यम से रोटरी क्लब मीनमबक्कम, रो ई मंडल 3234, द्वारा आयोजित व्यावसायिक प्रशिक्षण को रोटरी क्लब ओटा, रो ई मंडल 9112, द्वारा समर्थित किया गया था। दुबई में रोटेरियन डॉ बोले कुकोयी के साथ हुई आकस्मिक बातचीत ने इस व्यावसायिक प्रशिक्षण कार्यक्रम का नेतृत्व किया, रो ई मंडल 3233 और 3234 के डीआरएफसी प्रमुख बी दाक्षायनी कहती हैं। रोटरी क्लब चेन्नई टावर्स की डॉ. वासुमति और उनके पति डॉ. प्रवीण कृष्ण ने प्रशिक्षण का संचालन किया।

नाइजीरिया में बाल नेत्र देखभाल से संबंधित चुनौतियों पर प्रकाश डालते हुए, आगन्तुक दल के टीम लीडर सोलु सोटुंडे कहते है कि बाल नेत्र समस्याएं, विशेष रूप से आरओपी पर देखभाल करने वालों के बीच जागरूकता अपर्याप्त है, और बहुत कम प्रशिक्षित नेत्र रोग विशेषज्ञ और समर्पित आरओपी समन्वयक मौजूद हैं।

डॉ वासुमति कहती हैं, ''अफ्रीका की आज की स्थिति भारत के एक दशक पहले की स्थिति जैसी है।'' वह याद करती हैं कि जब उन्होंने 2007 में चेन्नई में आरओपी की जांच शुरू की थी, तब यहां के सरकारी अस्पतालों में ऐसी

*चेन्नई के राधात्री नेत्रालय में डीआरएफसी चेयर बी दक्षयानी (बैठी हुई, बाएं से दूसरी), डॉ वसुमति वेदांतम (दाएं से दूसरी), मंडल वीटीटी अध्यक्ष राधिका सत्यनारायण (दाएं से दूसरी, पीछे की पंक्ति) और डॉ प्रवीण कृष्ण (पीछे की पंक्ति में, बाएं) के साथ नाइजीरिया से आई-केयर टीम।*

कोई व्यवस्था नहीं थी। बाल रोग विशेषज्ञ मेरे साथ यह कहते हुए बहस करते थे कि शिशुओं में आरओपी जैसी कोई चीज नहीं है; आप हमारा समय बर्बाद कर रही हैं। हालांकि, एक बच्चे की आरओपी की जांच नहीं किए जाने पर ₹3 करोड़ का मुआवजा देने वाले सुप्रीम कोर्ट के एक ऐतिहासिक फैसले ने स्थिति को बदल दिया और विकार के बारे में जागरूकता बढ़ा दी। ''लेकिन हमें अभी भी एक लंबा रास्ता तय करना है। हमारे पास भारत में केवल 150 आरओपी विशेषज्ञ हैं।'' उन्होंने आरओपी की पहचान एवं इलाज करने के लिए अपने अस्पताल में सात टीमों को प्रशिक्षित किया है। विकार की गंभीरता के आधार पर उपचार लेजर से इंजेक्शन और सर्जरी तक भिन्न होता है।

जहां लेजर उपचार में आमतौर पर दोनों आंखों के लिए ₹40,000 खर्च होते हैं, हम इसे ₹10,000 की रियायती दर पर कर रहे है। लेकिन हम आर्थिक रूप से कमजोर माता-पिता से शुल्क नहीं लेते क्योंकि वे सरकारी अस्पतालों से आते हैं; अगर हम उन्हें पैसे देने के लिए कहेंगे तो वे अपने बच्चे का इलाज कराने से मना कर सकते हैं, वह कहती हैं। रोटरी ने 2016 में एक वैश्विक अनुदान के माध्यम से अस्पताल का समर्थन किया है जिससे 330 शिशुओं के इलाज में मदद मिली है। आज तक, अस्पताल ने 4,000 शिशुओं का इलाज किया है।

टीम ने बाल नेत्र विकारों की पहचान और उपचार में व्यावहारिक प्रशिक्षण प्राप्त किया और पास के गांवों एवं स्कूलों में अलग-अलग दिव्यांगजनों के लिए नेत्र शिविरों में भाग लिया। यह एक ज्ञानवर्धक अनुभव रहा है। नाइजीरिया में, हमारे पास पर्याप्त डेटा की कमी है। भारत आने से हमें फील्डवर्क पर व्यावहारिक ज्ञान मिला है, जिससे जागरूकता फ़ैलाने एवं शुरुआती पहचान करने में मदद मिलेगी, ऑप्टोमेट्रिस्ट डॉ शेरोन एनेमुओह कहते हैं।

नेत्र रोग विशेषज्ञ डॉ उफुओमा ओलुमोडेजी ने पाया कि ओटी में काम करना, नवजातों एवं शिशुओं को संभालना, मुख्य रूप से शिक्षाप्रद है। डॉ वासुमति ने उन्हें शिशुओं की जांच के लिए इमेजिंग उपकरणों का उपयोग करना सिखाया। ''आदर्श रूप से आपको आरओपी के लिए बच्चों की जांच करना और उनका इलाज करने के लिए एक वर्ष के प्रशिक्षण की आवश्यकता होती है। शिशुओं को एनेस्थीसिया नहीं दिया जाता है और उनकी आंखें बहुत नाजुक होती हैं। बच्चे को पकड़ने, आंखों पर कैमरे का उपयोग करने, मॉनिटर को देखने और निष्कर्षों को रिकॉर्ड करने के लिए विशेष कौशल की आवश्यकता होती है, वह कहती है। व्यावसायिक प्रशिक्षण ने नेत्र नर्स मीरा अकपकपन के लिए सीखने का नया अवसर प्रदान किया है, जिन्होंने कभी भी समय से पहले जन्मे शिशुओं की देखभाल नहीं की है।''

टीम के सभी सदस्यों ने पहली बार भारत की यात्रा की थी। शेरोन को समुद्री तट और भारतीय संस्कृति बहुत पसंद आई। खाने की बात करें तो, उन्हें स्थानीय चिकन बिरयानी बहुत पसंद आई जबकि मीरा को चिकन फ्राइड राइस पसंद आया। सोलू रोटेरियनों के आतिथ्य से अचंभित हो गए। ''हमने कुछ रोटरी क्लबों का दौरा किया और हर कोई विनम्र और मददगार था।''

यह रोटरी क्लब मीनमबक्कम की दूसरी व्यावसायिक प्रशिक्षण परियोजना है, पहला कार्यक्रम युगांडा के एक दल के लिए मद्रास मेडिकल मिशन अस्पताल में बाल कार्डियोलॉजी प्रशिक्षण था।■

> **"**
> **भारत आने से हमें फील्डवर्क करने, लोगों को संवेदनशील बनाने और किसी समस्या का शुरुआती चरण में पता लगाने के बारे में व्यावहारिक ज्ञान मिला है।**
>
> **डॉ शेरोन एनमुह**
> ऑप्टोमेट्रिस्ट

# XAVIER UNIVERSITY SCHOOL OF MEDICINE AND KLE ANNOUNCE

## 6 YEARS

PRE-MED TO

## DOCTOR OF MEDICINE / DOCTOR OF VETERINARY MEDICINE

## PROGRAMME

**First 2 years**
Start @
KLE, Campus
Karnataka, India

**Next 2 years**
Continue @
Xavier's Campus
Aruba, Caribbean
island - Netherlands

**Next 2 years**
Complete @
Xavier's affiliated
Teaching Hospitals
USA / Canada

TO ATTEND

# WEBINAR

REGISTER NOW

XUSOM.COM/INDIA/

**First 2 years**
Start @
KLE, Campus
Karnataka, India

**Next 3 years**
Continue @
Xavier's Campus
Aruba, Caribbean
island- Netherlands

**Final year**
Complete @
Xavier's affiliated
Teaching Hospitals
USA / Canada

Limited Seats

Session starts in January 2025

To apply, Visit:
application.xusom.com
email: infoindia@xusom.com

XAVIER STUDENTS ARE ELIGIBLE FOR H1/J1 Visa PROGRAMME

ADVT.

# फिर एक बार
# पोलियो से जंग

**दीपक कपूर**

भारत में वैक्सीन जनित पोलियो (वीडीपीवी) के दो मामलों की घटना ने हम सभी को चिंतित कर दिया है। भारत 14 जनवरी 2011 से वाइल्ड पोलियो वायरस (डब्ल्यूपीवी) से मुक्त है। दुनिया में केवल दो डब्ल्यूपीवी-स्थानिक देश है - 17 मामलों के साथ पाकिस्तान और 18 मामलों के साथ अफगानिस्तान।

दुर्भाग्य से, दुनिया के कई हिस्सों में वीडीपीवी के मामले मिलते हैं। एक नए टीके, एनओपीवी ने वीडीपीवी के प्रकोप को दूर करने में मदद की है। लेकिन काम अभी तक पूरा नहीं हुआ है। यह समय है कि सभी रोटेरियन रोटरी के पोलियो मुक्त दुनिया के लक्ष्य के लिए खुद को फिर से समर्पित करें, जो बहुत ही करीब है। वैश्विक स्तर पर क्रूर पोलियो के 3,50,000 से अधिक मामले थे, जो अब केवल 35 तक रह गए हैं। खतरनाक पोलियो वायरस का अंत बहुत करीब है।

राष्ट्रीय पोलियो निगरानी परियोजना (एनपीएसपी) उन रोग प्रतिरोधक क्षमता की कमी वाले बच्चों की केरल, हिमाचल प्रदेश, मेघालय आदि में विशेष निगरानी कर रही है जिन्हें पोलियो होने का अधिक खतरा होता है। यह भारत में एक अनूठी निगरानी गतिविधि है। केरल और शिमला (हिमाचल प्रदेश) में प्रतिरक्षाविहीन बच्चों में पोलियो के मामलों का मिलना खतरनाक बड़ी चिंता का विषय नहीं है, क्योंकि ऐसे बच्चों में पोलियो होना अपेक्षित था क्योंकि उनके शरीर में टीका लगाने के बाद भी एंटीबॉडी नहीं बनती है। ऐसे बच्चे, दुर्भाग्य से, आम तौर पर दो साल से अधिक नहीं जीते हैं। मेघालय में पाए गए वैरिएंट मामले में वीडीपीवी का अस्पष्ट रूप मिला है।

### भारत में सबसे बड़े खतरे हैं:

- पाकिस्तान और अफगानिस्तान से डब्ल्यूपीवी के यहाँ आने की संभावना
- वीडीपीवी2 के आयात और प्रसार की संभावना
- देश भर के 270 राजस्व जिलों में टीकाकरण का स्तर उतना अच्छा नहीं है। पोलियो टीकाकरण का राष्ट्रीय औसत लगभग 90 प्रतिशत है, जिसमें अभी भी 26 मिलियन बच्चों का समूह (10 प्रतिशत) बचा है जिन्हें पोलियो वैक्सीन की एक भी खुराक नहीं मिली है।
- छूटे हुए नवजात बच्चे (लगभग 2.5 मिलियन में से) जिन्हें जन्म की खुराक नहीं मिली है
- देश के विभिन्न हिस्सों में कई ऐसे इलाके हैं जहां टीकाकरण का स्तर राष्ट्रीय औसत 90 प्रतिशत से काफी नीचे है। एनपीएसपी वर्तमान में ऐसे इलाकों की एक सूची बना रहा है, जिसे तैयार होने के बाद रोटरी के साथ साझा किया जाएगा
- म्यांमार, बांग्लादेश आदि के प्रवासियों द्वारा 90 प्रतिशत टीकाकरण का राष्ट्रीय औसत कम होने की संभावना है।

भारत में रोटेरियनों को विकराल पोलियो वायरस को बाहर रखने पर ध्यान केंद्रित करना चाहिए। हमें सरकार और हमारे सहयोगियों - डब्ल्यूएचओ, यूनिसेफ, बिल एंड मेलिंडा गेट्स फाउंडेशन और जीएवीआई के साथ मिलकर काम करना चाहिए ताकि हमारे टीकाकरण स्तर को 100 प्रतिशत पर रखा जा सके, ताकि कोई भी बच्चा पोलियो जनित वायरस का शिकार न हो। ऐसा करने के लिए, हमें उन सिद्धांतों पर वापस जाना चाहिए जिन्हें हमने अतीत में इतनी कुशलता से नियोजित किया है: 100 प्रतिशत टीकाकरण प्राप्त करने के लिए राज्य और जिला स्तर पर सरकार के साथ सहयोग करना; ठोस कार्रवाई के लिए राज्य और जिला स्तर पर भागीदारों के साथ नियमित रूप से बैठक करना; राजनीतिक और धार्मिक नेताओं एवं नौकरशाहों के साथ हमारे वकालत के प्रयासों को जारी रखें; और राष्ट्रीय एवं उपराष्ट्रीय टीकाकरण दिवस पर बूथ स्थापित करें। अंतर्राष्ट्रीय पोलियो प्लस समिति के अध्यक्ष पीआरआईडी माइकल मेकगवर्न ने भारत के मंडलों को पोलियो से उत्पन्न चुनौती का सामना करने में मदद करने के लिए निम्नलिखित भारतीय राष्ट्रीय पोलियो प्लस संचालन समिति का गठन किया है:

**अध्यक्ष** : पीडीजी दीपक कपूर

**सलाहकार** : रो ई निदेशक अनिरुद्धा रॉय चौधरी और पीआरआईडी अशोक महाजन

**सदस्य** : रो ई मंडल 3132 के पीडीजी डॉ राजीव प्रधान, लोकेश गुप्ता, रो ई मंडल 3182 के पीडीजी डॉ पी नारायण, अजय सक्सेना और रो ई मंडल 3291 की पीडीजी श्यामश्री सेन।

आइए, हम संकल्प लें कि हम विश्व से पोलियो का उन्मूलन करने के लिए हुई नाटकीय प्रगति से प्राप्त लाभों को व्यर्थ नहीं जाने देंगे। हमें पूरी दुनिया के बच्चों से एक पोलियो-मुक्त विश्व के अपने वादे को निभाना ही पड़ेगा।

*लेखक भारतीय राष्ट्रीय पोलियो प्लस समिति के अध्यक्ष हैं।*

# जेल कैदियों के लिए साक्षरता कार्यक्रम

**रशीदा भगत**

एक दिलचस्प पहल के तहत, रोटरी भारत साक्षरता मिशन (आरआईएलएम) ने एक व्यापक साक्षरता परियोजना के माध्यम से पश्चिम बंगाल में जेल कैदियों के लिए एक दिलचस्प कार्यक्रम शुरू किया है। रो ई के पूर्व अध्यक्ष शेखर मेहता कहते हैं, ''मेरे दोस्त और कोलकाता के एक प्रतिष्ठित सामाजिक कार्यकर्ता इमरान ज़की और पश्चिम बंगाल के सुधार गृह के एडीजी संजय सिंह की पहल एवं मदद की वजह से, आरआईएलएम हमारे वयस्क साक्षरता कार्यक्रम के माध्यम से पश्चिम बंगाल के आठ सुधार गृहों के लगभग 800 जेल कैदियों को साक्षरता का उपहार देने में सफल हो पाया है।''

*साक्षरता प्रशिक्षण सत्र में कैदी।*

जेल के कैदियों के लिए पुनर्वास उपायों को लागू करने में हमेशा कुछ हद तक जोखिम होता है, लेकिन सिंह की मदद से, जो हमेशा कैदियों की भलाई हेतु नए विचारों को अपनाने के लिए तैयार रहते हैं, आरआईएलएम इन आठ सुधार गृहों में अपनी ईच-वन-टीच-वन परियोजना को लागू कर पाया है।

विभिन्न श्रेणियों के कैदियों को मिलाने में निहित चुनौतियों एवं जोखिमों पर काबू पाने के लिए, इस साक्षरता परियोजना के माध्यम से, कई ऑनलाइन अभिविन्यास सत्र आयोजित किए गए और शिक्षित कैदियों को जेल परिसर के भीतर साक्षरता सत्र आयोजित करने के लिए प्रोत्साहित किया गया। मेहता ने कहा कि आरआईएलएम मॉडल के आधार पर 50 से अधिक शिक्षित जेल कैदियों ने आरआईएलएम द्वारा विकसित टूलकिट की मदद से गैर-साक्षर कैदियों को साक्षर बनाने का चुनौतीपूर्ण लेकिन प्रतिफल देने वाला कार्य किया।

उन्होंने एक सुधार गृह का दौरा किया और जेल के निरक्षर कैदियों के साथ एक संक्षिप्त बातचीत की, जिसके दौरान उन्होंने आरआईएलएम वयस्क साक्षरता कार्यक्रम के बारे में बताया और इस बात की जानकारी भी दी कि किस प्रकार यह पहल उन्हें दैनिक जीवन में आत्मविश्वास हासिल करने में मदद कर सकती है। लैपटॉप/कंप्यूटर का उपयोग करके ऑनलाइन अभिविन्यास सत्र आयोजित किए गए थे। जेल अधिकारी और शिक्षित कैदी स्वेच्छा से गैर-साक्षर कैदियों को पढ़ाने के लिए आगे आये और उन्हें कार्यक्रम की जानकारी दी गई और सिखाया गया कि इस परियोजना को कैसे लागू किया जाए ताकि उनके साथी कैदी धीरे-धीरे शब्दों और संख्याओं की जादुई दुनिया तक पहुंच सकें।

2023-24 में इस कार्यक्रम के प्रथम चरण के सफल कार्यान्वयन को सुनिश्चित करने के लिए आरआईएलएम टीम से निरंतर प्रयासों की आवश्यकता थी। मेहता

आरआईएलएम द्वारा डिजाइन की गई शिक्षण किट के साथ कैदी।

को यह बताते हुए खुशी हुई कि जैसे-जैसे साक्षरता कार्यक्रम ने जेल की दीवारों के भीतर जड़ें जमानी शुरू कीं, परिवर्तन देखा जा सकता था। वयस्क साक्षरता कार्यक्रम सकारात्मक जीवन को बढ़ावा देता हैं और इसका कैदियों पर गहरा प्रभाव पड़ा। कई प्रतिभागियों ने मानसिक चिंताओं से राहत की सूचना दी है, जिन्हें ज्ञान से सांत्वना एवं स्पष्टता मिल रही है। सत्रों ने न केवल एक शैक्षिक व्यवस्था प्रदान की है, बल्कि इसने दूसरों के अन्दर भी कार्यक्रम में शामिल होने की इच्छा जगाई है, जिससे सकारात्मक सीखने के माहौल का निर्माण हुआ है जो इस कार्यक्रम की सफलता को भी को भी चिन्हित करता है।

एक आधिकारिक पत्र के माध्यम से आरआईएलएम को जवाब देते हुए, एडीजी ने आठ सुधार गृहों में इस कार्यक्रम को संचालित करने के लिए आरआईएलएम को धन्यवाद दिया। फीडबैक में कहा गया, इस

*आरआईएलएम और जेल अधिकारियों के साथ पीआरआईपी शेखर मेहता, सामाजिक कार्यकर्ता इमरान ज़की (बाएं से तीसरे), एडीजी संजय सिंह (बाएं से छठे)।*

कार्यक्रम के माध्यम से कैदी अच्छा समय बिता रहे हैं और अपनी मानसिक चिंताओं से छुटकारा पा रहे हैं। उनमें से अधिकांश खाली समय में सीखने को लेकर खुश हैं। वे अक्षर, संख्याएं, शब्द बनाना, अपना नाम लिखना, अपने पिता का नाम लिखना, हस्ताक्षर करना और छोटी गणनाएं करना सीखते है। उन्होंने कुछ सामान्य बुनियादी शब्द भी सीखे हैं।

जेल अधिकारियों से मिली प्रतिक्रिया में एक बड़ा सकारात्मक पहलू यह था कि कई नए साक्षर कैदी अब समाचार पत्रों और कहानियों की किताबें पढ़ने की कोशिश कर रहे थे। उन्होंने कहा, वे नैतिकता एवं नैतिक मूल्यों, अनुशासन एवं समयबद्धता पर बातचीत भी कर रहे थे और कई ने इस साक्षरता कार्यक्रम में और अधिक भागीदारी की इच्छा जताई है।

> **नव साक्षर कैदियों ने नैतिकता, नैतिक मूल्यों, अनुशासन और समय की पाबंदी पर चर्चा की। कई लोगों ने साक्षरता कार्यक्रम में अधिक से अधिक शामिल होने में रुचि दिखाई।**

अधिक सीखने के लिए उनका उत्साह और चाह दिल को छू लेने वाला है। पाठ्यक्रम मॉड्यूल वयस्क शिक्षार्थी कैदियों के लिए उपयुक्त है और कार्यक्रम अब पूरी गति से आगे बढ़ रहा है।

''कार्यक्रम की सफलता ने इसके विस्तार की राह प्रशस्त की है, और अब पश्चिम बंगाल में 18 अन्य सुधार गृहों में पहल का विस्तार करने की अनुमति दी गई है।''

इसकी पहुँच बढ़ने के साथ ही, यह कार्यक्रम अनगिनत व्यक्तियों के भविष्य को नया स्वरूप प्रदान करेगा क्योंकि हम सभी जानते हैं कि शिक्षण और ज्ञान एक पूरी तरह से अलग दुनिया के दरवाजे खोल सकता है। अब तक महिलाओं को पहले चरण में शामिल नहीं किया गया है; उम्मीद है कि दूसरे चरण में जेल अधिकारी इस कार्यक्रम को महिला कैदियों तक भी पहुंचाएंगे, मेहता ने आगे कहा। ■

Rotary PEOPLE OF ACTION

# पालघर के आदिवासियों के मददगार रोटेरियन

रशीदा भगत

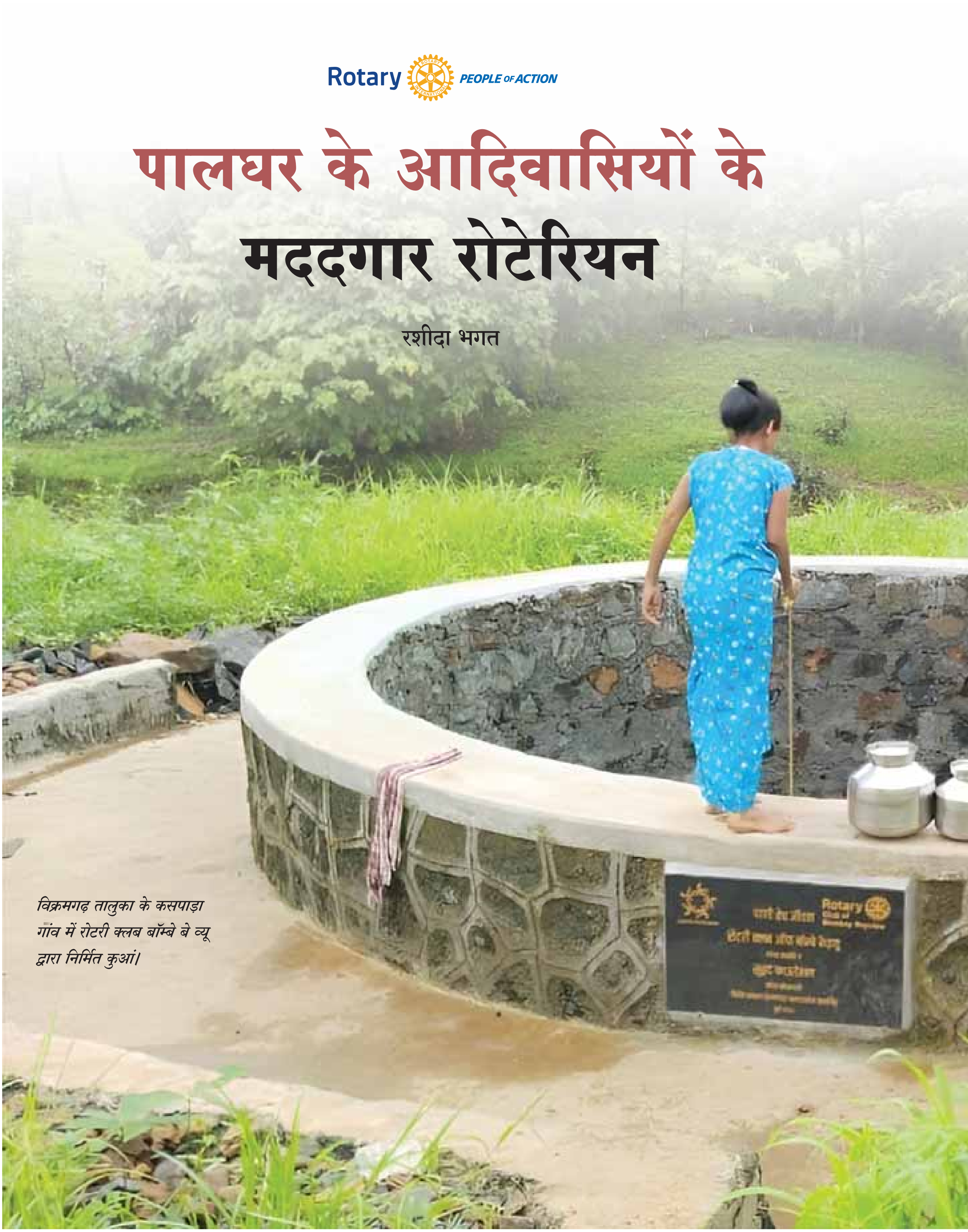


*विक्रमगढ़ तालुका के कसपाड़ा गांव में रोटरी क्लब बॉम्बे बे व्यू द्वारा निर्मित कुआं।*

चाहे आदिवासी गांवों में किसानों की आय बढ़ाने की बात हो, उन गांवों में कुएं की उपलब्धता पर बात हो जहां पहले महिलाओं को अपने सिर पर पानी ढोने के लिए कई किमी पैदल चलना पड़ता था, ग्रामीण स्कूलों में बच्चों को आधुनिक शैक्षणिक सहायक प्रदान करना हो, या आदिवासियों के लिए सामूहिक-विवाह का आयोजन करना हो, रोटरी क्लब बॉम्बे बे व्यू, रो ई मंडल 3141, ने यह सब बड़े अच्छे से किया है।

2002 में अधिकृत, 150 से अधिक सदस्य संख्या वाले इस क्लब ने महाराष्ट्र में मुंबई के पास स्थित पालघर जिले के विक्रमगढ़, दहानू और तलासरी क्षेत्रों के आदिवासी गांवों में बच्चों

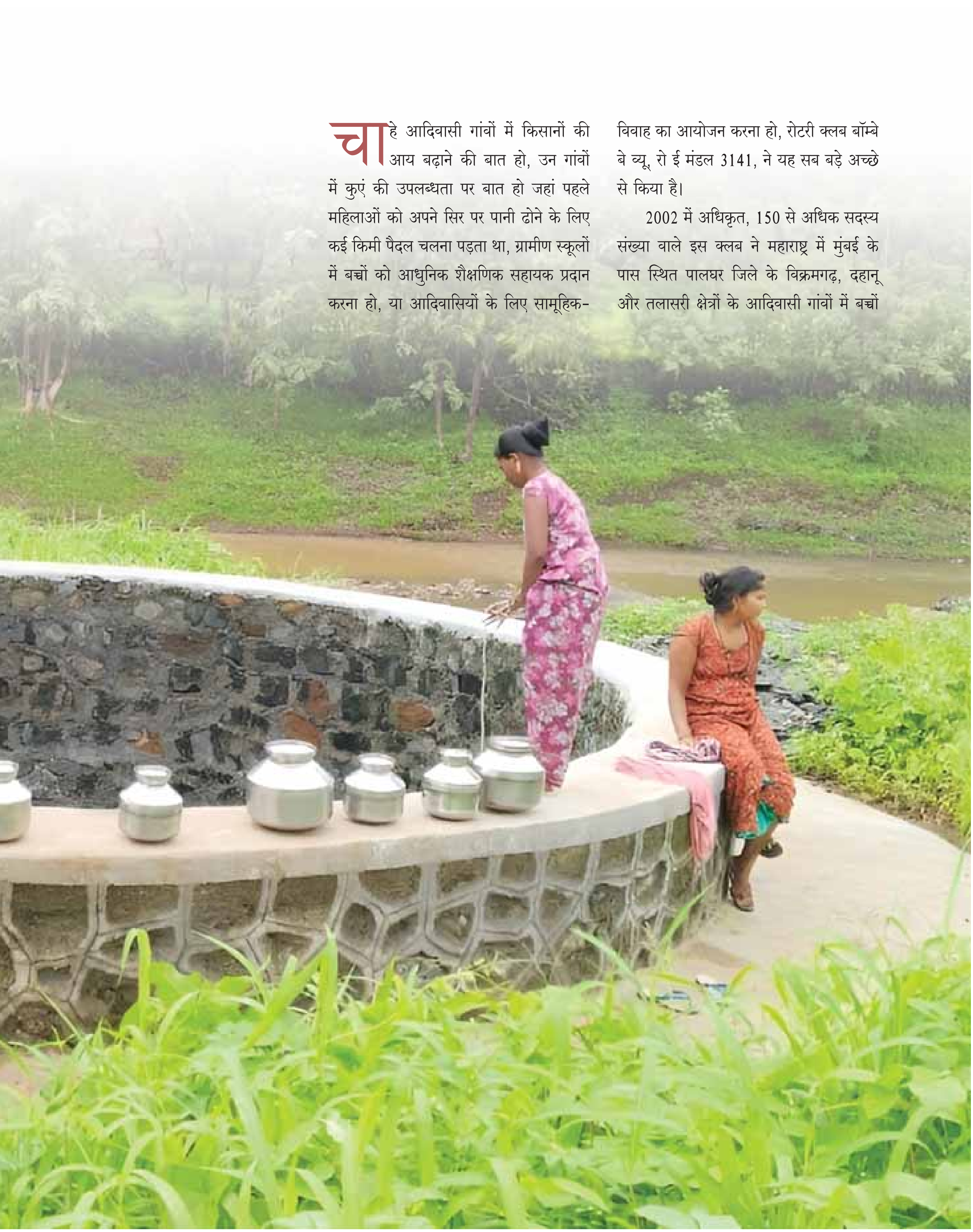

एवं वयस्कों के जीवन में सार्थक बदलाव लाने के लिए कई प्रभावशाली परियोजनाओं को लागू किया है।

क्लब की अध्यक्ष रजनी बरासिया, जो लगभग एक दशक से क्लब की सामुदायिक सेवा परियोजनाओं का नेतृत्व करती आ रही हैं, का कहना है कि उन्होंने अब तक जो सबसे संतोषजनक परियोजनाएं की हैं, उनमें से एक इस क्षेत्र के ऐसे गांवों में कुओं को उपलब्ध कराना हैं जहां पहले से उपलब्ध जल स्रोतों में पानी आम तौर पर जनवरी से मई माह के मध्य में सूख जाता है। फिर जब तक मानसून की बारिश इन स्रोतों को पुनर्भरण नहीं करती, तब तक महिलाओं को अपने घर की जरूरतों को पूरा करने हेतु पानी लाने के लिए पहाड़ी इलाकों में कम से कम कुछ किमी पैदल चलना पड़ता था।

वह यह भी बताती हैं कि कैसे पिछले साल क्लब ने कासपाड़ा गांव, जो मुंबई से लगभग तीन घंटे की दूरी पर है, के 85 परिवारों के लिए एक कुएं का निर्माण किया। रजनी कहती है कि, ''ये लोग फरवरी से जून (मानसून के आने तक) तक पानी की कमी का सामना कर रहे थे और महिलाओं ने अपनी घरेलू आवश्यकता का पानी लाने में काफ़ी समय बिताया।''

इस क्लब ने स्थानीय लोगों से श्रम सहायता प्राप्त करके, और ₹6.5 लाख की आवश्यक राशि एकत्रित करके, जो जरूरत से अधिक थी लेकिन इतना धन आवश्यक था क्योंकि यह एक पहाड़ी इलाका है और पानी के स्रोत को खोजने के लिए खुदाई को गहरा करना पड़ता है, एक कुएं का निर्माण किया। इस कुएं की वजह से, इस इलाके के ग्रामीण अब सूखे के महीनों से निपटने में सक्षम थे, और पूरे साल एक विश्वसनीय जल स्रोत की मदद से, परिवार अब सब्जियों के बगीचे लगा सकते हैं, जिससे उनके पोषण एवं खाद्य सुरक्षा में वृद्धि होगी। इस परियोजना ने समुदाय के लोगों के लिए स्वास्थ्य, स्वच्छता और जीवन की समग्र गुणवत्ता में उल्लेखनीय ढंग से सुधार किया है, जिससे महिलाओं को अन्य उत्पादक गतिविधियों के लिए खाली समय मिल पाया है, वह आगे कहती है।

खेल मैदान उपकरण
**₹9.75**
लाख

**15**
जिला परिषद
स्कूल

**21**
जिला परिषद स्कूलों में
**26**
स्मार्ट क्लासरूम
**₹14.25**
लाख

उस परियोजना की सफलता को देखते हुए, इस साल दूसरे गांव में एक और कुएं का निर्माण किया गया है, और दिसंबर में दूसरे कुएं का निर्माण किया जाएगा, क्योंकि मेरे दानकर्ता ने हमें दो कुओं के निर्माण के लिए पैसे दिए हैं। क्षेत्र में धान की खेती होती है इसलिए वहां अधिक पानी की आवश्यकता होती है। क्लब की सचिव राखी मेहता कहती हैं कि अब तक 10 कुएं बनाए जा चुके हैं, और उन सभी में सूखे के महीनों के दौरान भी पानी मिल रहा है, जो महिलाओं के लिए एक बड़ा वरदान है। वह आगे कहती हैं, ''कुएं बनाने के लिए ग्रामीणों से मिले श्रमदान के बदले में हम उन्हें केसर आम के पौधे देते हैं।''

एक कुआं बनाने की लागत ₹4 से ₹6.5 लाख तक होती है, अगर इलाका पहाड़ी है तो यह अधिक होती है। यह पूछे जाने पर कि वे पैसे कैसे जुटाते हैं, तो रजनी मुस्कुराते हुए कहती हैं, जब भी पानी से संबंधित किसी भी परियोजना की बात आती है तो हमारे क्लब के सभी सदस्य देने में पीछे नहीं हटते जिससे हमें कभी भी जल-संबंधित परियोजनाओं के लिए धन की कमी का सामना नहीं करना पड़ा है।

रजनी कहती हैं, किसानों की आय बढ़ाना हमेशा उनके दिमाग में रहता है। यह पूछे जाने पर कि क्या उन्होंने कृषि संकट को देखा है और महाराष्ट्र के इस सूखाग्रस्त क्षेत्र, जो किसानों की आत्महत्या के लिए कुख्यात है, में किसानों की आत्महत्या के मामले सुने हैं, वह कहती हैं, ''नहीं, हम जिन क्षेत्रों में काम करतें हैं वहाँ किसी भी किसान के आत्महत्या के बारे में हमनें नहीं सुना है। लेकिन किसानों की आय में निश्चित रूप से सुधार की आवश्यकता है और गुंजाइश भी है। अभी, अधिकांश किसान एक ही फसल उगाते हैं – मुख्य रूप से धान, और वह भी खेती के पारंपरिक तरीकों का उपयोग करके। इसलिए अब हम कृषि क्षेत्र में काम कर रहे गैर-सरकारी संगठनों के साथ मिलकर इन आदिवासी गांवों में कृषि कक्षाएं तथा

प्रशिक्षण सत्र आयोजित करने की संभावना के बारे में चर्चा कर रहे हैं। हम उन्हें आधुनिक कृषि पद्धतियों के बारे में सूचना एवं जानकारी देना चाहते हैं जिससे उनकी आय बढ़ सके।''

क्लब ने कम आय वाले एवं सीमांत किसानों की मदद करने के लिए लगभग 2,000 केसर आम और अन्य प्रकार के पौधे वितरित किए हैं, ताकि उनकी खेती से आय में सुधार हो सके और इस पौष्टिक फल का सेवन करके उनके खुद के पोषण स्तर में भी सुधार हो सके।

₹3 लाख से अधिक का योगदान देने वाले एक अन्य दानदाता ने उनसे गुजरात के पांच जिलों के 24

पालघर के गांवों में

2,000

केसर आम के पौधे लगाए गए; गुजरात के पांच जिलों में

1,000

पौधे लगाए गए

*जिला परिषद स्कूल में क्लब द्वारा लगाए गए झूले का आनंद लेते बच्चे।*

चॅरिटेबल ट्रस्ट मुंबई

ब्लॉकों में छोटे किसानों को केसर आम के 1,000 पौधे देने का अनुरोध किया है, ''जो पूरा भी किया जा चुका है। इसका उद्देश्य न केवल पर्यावरणीय स्थिरता को बढ़ावा देना, स्थानीय पारिस्थितिक तंत्र का समर्थन करना है एवं आम की खेती के माध्यम से आर्थिक अवसर प्रदान करना है, बल्कि कुछ गांवों में आदिवासी आबादी के बीच कुपोषण से लड़ने में योगदान देना भी है।''

इस क्लब ने शिक्षा सम्बन्धी परियोजनाएं भी की हैं, जिनमें 15 जिला परिषद स्कूलों में ₹9.75 लाख के खेल के उपकरण प्रदान करना भी शामिल हैं। जुलाई में, 'फिट एंड फन' नामक परियोजना के माध्यम से, पालघर में दहानू और तलासरी तालुकों के दूरदराज के इलाकों में स्थित स्कूलों को यह उपकरण दिए गए थे, जिससे 2,050 से अधिक वंचित आदिवासी छात्र लाभान्वित हुए। रजनी ने कहा कि ''इस परियोजना का उद्देश्य बाहरी गतिविधियों को प्रोत्साहित करना, शारीरिक सेहत को बेहतर करना और छात्रों में समग्र विकास को बढ़ावा देना है,'' रजनी आगे कहती है।

एक अन्य परियोजना में, 21 जिला परिषद स्कूलों को 26 स्मार्ट कक्षाएं उपहार में दी गई और डिजिटल शिक्षण उपकरणों से सुसज्जित एक सामुदायिक पुस्तकालय स्थापित किया गया। ₹14.25 लाख मूल्य की इस परियोजना में, 26 कक्षाओं में 50 इंच कास्मार्ट टीवी, ई-लर्निंग सॉफ्टवेयर किट आदि लगाए गए, जो ग्रामीण भारत के अधिकांश हिस्सों को प्रभावित करने वाले शिक्षक-छात्र के असंगत अनुपात की चुनौती का समाधान करते हैं, और साथ ही ''बच्चों के लिए अधिक संवादात्मक एवं दिलचस्प वातावरण निर्मित होता है,'' राखी कहती है।

वह आगे बताती हैं, ''इसके अलावा, हमने पिछले आठ वर्षों में, दूर-दराज के क्षेत्रों से आने वाले छात्रों को लगभग 300 साइकिलें वितरित की हैं, ताकि वे स्कूल जाने के लिए कम और सीखने के लिए अधिक समय दे सकें।''

बिजली की अनियमित आपूर्ति वाले क्षेत्रों में सौर रोशनी देना एक अन्य परियोजना है; कुछ

*क्लब द्वारा आयोजित 35 आदिवासी जोड़ों का सामूहिक विवाह।*

*एक गांव में आम के पौधे लगाने के लिए तैयार क्लब की अध्यक्ष रजनी बरासिया (बाएं से तीसरे) और सचिव रक्खी मेहता (बाएं) छात्रों के साथ।*

गांवों में, कई घरों में रोशनी नहीं है, और इससे उन्हें तीन बल्बों को रोशन करने में मदद मिलती है।

और एक पंखा भी, मैंने पूछा? रजनी जवाब देती हैं, ''आप हैरान होंगे; अधिकांश घरों में पंखे नहीं होते हैं, इसलिए जब कोई पंखा मांगता है, तो हम कभी 'ना' नहीं करते। हम किसी तरह धन जुटा लेते हैं!''

आखिर के लिए एक मजेदार परियोजना को बचाते हुए, क्लब ने कुछ 35 आदिवासी जोड़ों के लिए एक सामूहिक विवाह का भी आयोजन किया है। उपहार के रूप में, नवविवाहितों को कई घरेलू सामान दिए जाते हैं। ''ऐसा करने के लिए, हम अन्य क्लब के सदस्यों तक भी पहुंचते हैं। जब मैंने अपनी भाभी, रोटरी क्लब मुंबई रॉयल्स की एक सदस्य, को बताया कि हमें इन नवविवाहित जोड़ों को घरेलू सामान देने के लिए कुछ पैसे इकट्ठा करने की जरूरत है, तो उन्होंने इसे अपने व्हाट्सएप ग्रुप पर डाल दिया। तुरंत प्रतिक्रिया मिली; लोग पैसे देने के लिए वास्तव में लड़ रहे थे; कोई बर्तन देना चाहता था, कोई किराने की किट देना चाहता था, और भी बहुत कुछ,'' रजनी हंसते हुए कहती हैं।

वह एक घटना बताती हैं जब मुंबई रॉयल्स की एक सदस्य नवविवाहित जोड़ों के लिए उपहार खरीदने के लिए गई थी। जाहिर है, उनके पति भी साथ थे; ''हमने उन्हें अपनी ज़रूरत की वस्तुओं की एक सूची दी थी, लेकिन उन्होंने और भी बहुत कुछ खरीदने पर जोर दिया, यह कहते हुए कि अब मेरे पति यहाँ हैं, वह हर चीज़ का भुगतान करेंगे, इसलिए मैं और भी बहुत कुछ खरीदने जा रही हूँ! इस तरह की कहानियों को सुनना हमारे लिए बहुत खुशी की बात है, क्योंकि एक अच्छे कार्य में मदद करने के लिए बहुत सारे अच्छे लोग तैयार हैं!''

राखी का कहना है कि एक महिला ने इमीटेशन ज्वेलरी के 25 सेट दिए, जो सभी दुल्हनों ने पहने थे, और वे सभी बहुत सुंदर लग रही थीं।

अध्यक्ष आगे कहती हैं कि इनर व्हील क्लब भी उनकी मदद कर रहा है; ''हमारा एक सिद्धांत है - कहीं से भी पैसा आए, काम तो करना ही है।''

*एन कृष्णमूर्ति द्वारा रूपरेखा*

# इस्तांबुल में रोटरी अध्यक्षीय शांति सम्मलेन

**20 से 22 फरवरी, 2025** के दौरान, तुर्की के इस्तांबुल में रो ई अध्यक्ष स्टेफ़नी अर्चिक के नेतृत्व में 2025 रोटरी अध्यक्षीय शांति सम्मलेन, रोटरी समुदाय एवं भागीदारों के लिए शांति को बढ़ावा देने के लिए रोटरी के प्रयासों का लाभ उठाने का एक अवसर होगी, जिसमें ध्रुवीकृत दुनिया में शांति; प्रौद्योगिकी, मीडिया एवं शांति निर्माण; शांति निर्माण में पर्यावरण की भूमिका; और स्थाई शांति जैसे मुद्दों पर चर्चा होगी।

यह सम्मेलन इस्तांबुल के बहासेसेहिर विश्वविद्यालय के साथ साझेदारी में नए ओटो एंड फ्रैंन वाल्टर रोटरी पीस सेंटर के शुभारंभ का भी साक्षी बनेगा।

तीन दिवसीय सम्मेलन में पैनल चर्चाओं एवं ब्रेकआउट सत्रों के अलावा जाने-माने वक्ताओं के संबोधन भी शामिल हैं जो रोटेरियनों और सामुदायिक नेतृत्वकर्ताओं के शांति का समर्थन करने के कई तरीकों को उजागर करेंगे; स्थानीय और विश्व स्तर पर शांति स्थापित करने हेतु कहानियों, अंतर्दृष्टि और विचारों को साझा करेंगे; और हमारे समुदायों के भीतर और उससे आगे शांति को बढ़ावा देने के बारे में सार्थक बातचीत को बढ़ावा देंगे।

शांति सम्मेलन के लिए पंजीकरण और अपना रूम बुक करने के लिए *www.rotary.org/istanbul25* पर जाएं। ईमेल: ***Istanbul25@rotary.org***

सम्मेलन स्थल: **हिल्टन इस्तांबुल बोमोंटी होटल एंड कांफ्रेंस सेंटर।**

Rotary PEOPLE OF ACTION

# रोटी और रोटरी

किरण ज़ेहरा

रिक्शा चालक ₹10 का खाना खाते हुए।

उत्तर प्रदेश के लखीमपुर में बिजली विभाग के पूर्व कार्यकारी अभियंता हरि कृष्ण त्रिपाठी और उनकी समर्पित सामाजिक कार्यकर्ता पत्नी मधुलिका के लिए सुबह का समय सामान्य नहीं होता। भोर होते ही, रोटेरियन दंपति लखीमपुर में सैकड़ों दैनिक वेतन भोगी श्रमिकों के लिए एक जीवन रेखा रोटरी अन्नपूर्णा रसोई चलाने के एक और दिन की तैयारी शुरू करते हैं।

रसोई का विचार एक रिक्शा चालक के साथ हुई आकस्मिक बातचीत से आया, जो गंभीर पेट दर्द से पीड़ित था, उसने बताया कि वह अक्सर भोजन नहीं करता था क्योंकि उसकी इतनी कमाई नहीं थी। दम्पति उस व्यक्ति की दुर्दशा से प्रभावित हुए और महसूस किया कि क्षेत्र में दैनिक वेतन भोगियों को सस्ता, पौष्टिक भोजन उपलब्ध कराने की आवश्यकता है। उन्होंने अपने क्लब को यह विचार दिया और 2021 में, जब कोविड महामारी ने दूसरी बार दस्तक दी, तो त्रिपाठी दंपति के नेतृत्व में रोटरी क्लब लखीमपुर खीरी, रो ई मंडल 3120, ने एक सामुदायिक रसोई के एक सरल लेकिन परिवर्तनकारी विचार के साथ कदम बढ़ाया, जो सिर्फ 10 में पौष्टिक भोजन प्रदान करेगा, हरि कृष्ण त्रिपाठी कहते हैं।

जो लोग एक दिन में ₹500 जितना कमाते हैं, उनके लिए एक ढाबे में भोजन के लिए ₹80 या उससे अधिक खर्च करना वहन करने योग्य नहीं था। ₹10 का भोजन केवल भोजन नहीं है, यह राहत और सुरक्षा की भावना प्रदान करता है, वह आगे कहते है।

रोटरी अन्नपूर्णा रसोई ने रोटरी सदस्यों और व्यक्तिगत योगदानकर्ताओं के छोटे दान के साथ साधारण शुरुआत की। यह समझते हुए कि बड़े दान कई लोगों के लिए मुश्किल हो सकते हैं, हरि कृष्ण और मधुलिका ने लोगों को जितना हो सके उतना दान करने के लिए प्रोत्साहित किया। आज, रसोई की मासिक संचालन लागत लगभग 1 लाख है, जिसमें भोजन पकाने वाली दो महिलाओं का वेतन भी शामिल है। हर दिन, वे 30-35 किलो चावल और 10 किलो दाल तैयार करते हैं, जिससे लगभग 300 ऐसे दैनिक आगंतुकों को भोजन मिलता है जो इस आवश्यक सेवा पर निर्भर हैं।

''मैं एक दिन में लगभग ₹500 कमा लेता हूं,'' रसोई में नियमित रूप से आने वाले मुकेश (55) कहते हैं। ''अगर मैं खाने पर ₹100 ख़र्च कर दूं, तो मैं अपने परिवार के लिए कम पैसा घर ले जाऊंगा।

*लोग भोजन खरीदने के लिए कतार में इंतजार करते हुए।*

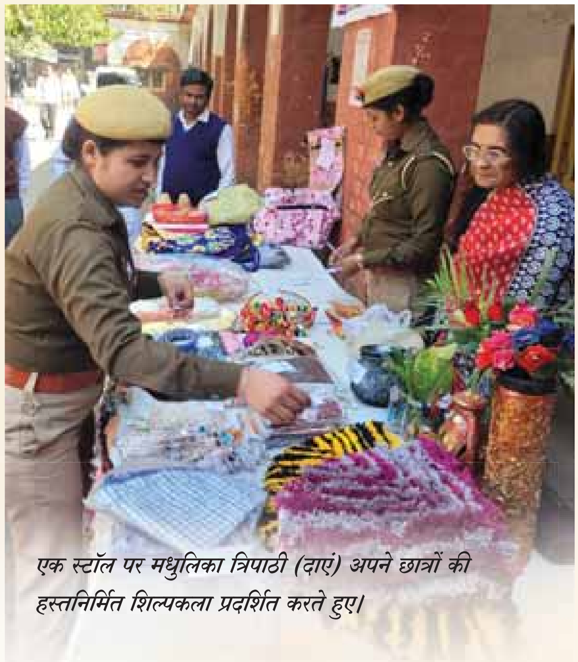

*एक स्टॉल पर मधुलिका त्रिपाठी (दाएं) अपने छात्रों की हस्तनिर्मित शिल्पकला प्रदर्शित करते हुए।*

₹10 के भोजन के साथ, मैं अधिक बचत कर सकता हूं और उनके लिए अधिक कर सकता हूं। यह भोजन मेरी कमाई को बढ़ाने में मदद करता है।''

भोजन सरल लेकिन परिपूर्ण होता है, मधुलिका कहती हैं। रोटियां और सब्जी, दाल, राजमा या कढ़ी के साथ चावल दैनिक भोजन का हिस्सा बनते हैं। दिवाली और नवरात्रि जैसे विशेष अवसरों पर, रसोई एक कदम आगे जाती है और उत्सव की भावना को चिह्नित करने के लिए विभिन्न प्रकार के व्यंजन, फल और मिठाई पेश करती है, वह आगे कहती हैं। जो लोग देर से आते हैं, उनके लिए रसोई बंद होने के बाद, मधुलिका यह सुनिश्चित करती है कि वे भूखे न रहें। वह अपने स्वयं के रसोईघर में अतिरिक्त भोजन तैयार करती है ताकि कोई भी भूखा व्यक्ति बिना खाए ना जा पाए।

## व्यावसायिक प्रशिक्षण पहल

त्रिपाठी दंपति द्वारा संचालित संकल्प हॉबी क्लासेस युवतियों को वित्तीय स्वतंत्रता के लिए आवश्यक कौशल सिखाकर सशक्त बनाती है। रो ई मंडल 5610, यूएसए, के साथ वैश्विक अनुदान सहायता के माध्यम से वित्त पोषित 25 सिलाई मशीनों के साथ, केंद्र सिलाई, कढ़ाई, मेहंदी, शिल्प और सौंदर्य देखभाल में व्यावहारिक प्रशिक्षण प्रदान करता है। एक लाभार्थी ज्योति पूनम कहती हैं, सिलाई कक्षाओं की वजह से, अब मैं प्रति माह करीब 4,000 कमाती हूं, जिससे मुझे अपने परिवार और अपनी बेटी की शिक्षा की सहायता करने में मदद मिलती है। हाल ही में, केंद्र ने छात्रों के काम को दिखाने के लिए एक कला प्रदर्शनी आयोजित की, जिसकी आय इसके विकास के लिए खर्च की गई।

*पीआरआईपी शेखर मेहता रोटरी रसोई में भोजन परोसते हुए। आईपीडीजी सुनील बंसल (दाएं से दूसरे) और मधुलिका भी चित्र में शामिल हैं।*

मधुलिका रसोई और व्यावसायिक केंद्र दोनों के खातों एवं रसद के प्रबंधन में अपने पति की शांत और स्थिर उपस्थिति को श्रेय देते हुए कहती हैं, जब भुगतान में देरी होती है या तत्काल सामग्री की आवश्यकता होती है, तो वह कदम उठाते हैं, और अक्सर अपनी जेब से खर्च करते हैं। हम उनके बिना इतनी दूर नहीं आ सकते थे।

हाल ही में, पीआरआईपी शेखर मेहता ने लखीमपुर का दौरा किया और रोटरी रसोई और संकल्प हॉबी क्लासेस दोनों का दौरा किया। उन्होंने जो देखा उससे वह प्रभावित हुए और हमारे समर्पण की सराहना की। उन्होंने खाना भी परोसा, मधुलिका मुस्कुराती हैं। त्रिपाठी दम्पति के लिए हम तो बस रोटेरियन होने का कर्त्तव्य निभा रहे है। हम वही कर रहे हैं जो हर रोटेरियन करता है। सेवा के आनंद का अनुभव करना संतुष्टिदायक है, वह कहती हैं। ■

# एक रोटेरियन का पर्यावरण प्रेम

**रशीदा भगत**

रोटरी क्लब बैंगलोर कोरमंगला (RCBG), रो ई मंडल 3191 की पूर्व अध्यक्ष (2017-18) जेनेट येन्नेश्वरन ने इसे अपने दिवंगत पति राजनेट येगनेश्वरन की स्मृति में लगाया था जो लगभग 20 साल पहले इसी क्लब में रोटेरियन थे।

यहाँ पर जिस उपहार का जिक्र किया जा रहा वो एक पेड़ है और दो दशकों से अधिक समय से उनके प्रयासों के अंतर्गत बेंगलुरु, कर्नाटक के अन्य हिस्सों के साथ ही तमिलनाडु में 97,000 से अधिक पेड़ लगाए गए। हमारे ग्रह को हरा-भरा करने और भावी पीढ़ियों के लिए पारिस्थितिकी तंत्र को बचाने के साथ ही कृषिवानिकी जैसी विभिन्न परियोजनाओं के माध्यम से लगाए गए इन पेड़ों ने प्राकृतिक आपदाओं से पीड़ितों की सहायता करने, बंजर भूमि पर मफूड फॉरेस्टफ बनाने आदि के साथ हजारों लोगों के दिलों में उम्मीद जगाई है।

उनकी *रीफॉरेस्ट इंडिया* परियोजना ने बॉश इंडिया के साथ साझेदारी की जिससे उन्हें कर्नाटक के अनेकल

*ट्रीज़ फ़ॉर फ्री टीम और इसकी संस्थापक जेनेट येन्नेश्वरन (दाएं)।*

में एक सामुदायिक विकास केंद्र का प्रभारी बनाया गया जो वंचित बच्चों के लिए कंप्यूटर शिक्षा, महिला सशक्तिकरण और पर्यावरणीय स्थिरता जैसी पहलों के साथ 30 गांवों को सेवा दे रहा है।

सामुदायिक कार्यों में गहराई से लिप्त और स्थानीय समुदाय की जरूरतों को पूरा करने के लिए लगातार आगे बढ़ते रहने वाली, बॉश इंडिया फाउंडेशन, के प्रतिनिधि के साथ उनकी हालिया चर्चा ने उनके क्लब द्वारा एक स्वास्थ्य सेवा परियोजना का नेतृत्व किया। मैं उन्हें बेंगलुरु से लगभग 30 किमी दूर स्थित एक गांव, गौरेनहल्ली में स्वास्थ्य सुविधाओं की कमी के बारे में बता रही थी। और उन्होंने हमारे क्लब के साथ साझेदारी के तहत उस गांव में एक विशाल चिकित्सा शिविर आयोजित करने में रुचि व्यक्त की। 2017-18 में क्लब अध्यक्ष बनने से पहले सात साल तक अपने क्लब की सामुदायिक सेवा निदेशक के रूप में इस रोटेरियन को गांवों में ग्रामीण स्वास्थ्य शिविर आयोजित करने का बढ़िया अनुभव है।

132 ग्रामीणों द्वारा भाग लिए जाने वाले इस स्वास्थ्य शिविर में जांच करने वाले डॉक्टरों की टीम द्वारा अत्यधिक संख्या में दांत, आंख और अन्य चिकित्सा समस्याओं का पता लगाया गया। दांतों की समस्याओं जैसे कैविटी भरना, समस्याग्रस्त दांत निकालना और दांतों की सफाई आदि पर काम किया गया। खराब दृष्टि और आंखों की अन्य बीमारियों के लिए भी जांच की गई और 40 लोगों को चश्मे की सलाह दी गई जो क्लब द्वारा नि:शुल्क दिए जाएंगे। पांच मोतियाबिंद रोगियों का पता लगाया गया और हमारे क्लब की नेत्रहीनता से बचाव परियोजना के तहत हमारे क्लब के सदस्य उनकी आँखों के ऑपरेशन में भी मदद करेंगे, वह कहती हैं।

इस शिविर में अनुमानित ₹50,000 खर्च किए गए थे जहाँ पेशेवरों द्वारा किया गया अधिकांश कार्य स्वैच्छिक था; क्लब और फाउंडेशन ने लागत साझा की।

लेकिन इस परियोजना के अन्य आकस्मिक नतीजे अधिक महत्वपूर्ण हैं। उनमें से एक यह था कि इस शिविर का आयोजन करते समय बॉश इंडिया फाउंडेशन के स्वयंसेवकों ने घर-घर जाकर निवासियों को शिविर के लिए आमंत्रित किया, रक्तचाप मापने में चिकित्सकों की सहायता की, दवाएं वितरित कीं, रोगी के विवरण का दस्तावेजीकरण किया आदि। वे वास्तव में इस तरह के सामुदायिक सेवा कार्य से उत्साहित थे; यह उनके लिए अपनी तरह का पहला कार्य था और मुझे यकीन है कि उनमें से कम से कम कुछ तो इससे भावी रोटेरियन बनने हेतु प्रोत्साहित होंगे क्योंकि उन्होंने अब रोटरी के कार्य का स्वाद चख लिया है, जेनेट कहती हैं।

स्थानीय पंचायत नेताओं से बात करने के दौरान उन्होंने खुद यह पाया कि 100 बच्चों वाले गांव के एक प्राथमिक विद्यालय में बहुत काम किए जाने की आवश्यकता है। ''वहाँ के शौचालय सहित पूरे भवन को नवीकरण और पुताई की आवश्यकता है। इस पर करीब ₹4 लाख का खर्च आएगा। छात्रों के पास डेस्क और बेंच नहीं हैं। पंचायत सदस्यों ने मुझे बताया कि इस क्षेत्र के अनेक स्कूलों को नवीनीकरण की आवश्यकता है। कन्नड़ और उर्दू दोनों माध्यमों के 500 छात्रों वाले दो स्कूलों के शौचालय अत्यधिक खराब स्थिति में हैं और उन्हें पुनर्निर्माण की आवश्यकता है।''

जेनेट ने क्षेत्र के 30 स्कूलों का दौरा करके आवश्यक कार्यों एवं लागत का विवरण एकत्रित करने की योजना बनाई। ''हमारे चिकित्सा शिविर ने इस तालुक में जीर्ण-शीर्ण और खराब दिखने वाले स्कूल भवनों की मरम्मत की तत्काल आवश्यकता पर प्रकाश डाला। हमें उम्मीद है कि एक बार जब आप *रोटरी न्यूज़* में इस लेख को छापेंगे तो यह हमारे क्षेत्र के अन्य रोटरी क्लबों, कॉरपोरेटों और अन्य हितधारकों को इन महत्वपूर्ण शैक्षिक सुविधाओं के

*रोटरी क्लब बैंगलोर कोरमंगला की पूर्व अध्यक्ष जेनेट येश्रेश्वरन 15 साल पहले लगाए गए एक पेड़ को गले लगाती हुई।*

"दो दशकों से अधिक समय से जेनेट के प्रयासों से बेंगलुरु, शेष कर्नाटक और यहां तक कि तमिलनाडु में 97,000 से अधिक पेड़ लगाने में मदद मिली है।

*कोलार जिले के कडेनहल्ली गांव में फूड फ़ॉरेस्ट में एक पौधा लगाया जा रहा है।*

नवीनीकरण में योगदान करने हेतु प्रेरित करेगा जिससे बच्चों एवं सम्पूर्ण समुदाय के जीवन पर सार्थक प्रभाव पड़ेगा। हम ग्रामीण क्षेत्रों में रोटरी की सेवा की विशाल संभावनाओं को प्रत्यक्ष रूप से देख रहे हैं क्योंकि ग्रामीण भारत में प्रभावशाली परियोजनाओं के लिए बहुत गुंजाइश है,'' उन्होंने आगे कहा।

### हरियाली की पहल

इस बीच, पृथ्वी को हरा-भरा रखने का उनका जुनून जारी है। उनके चैरिटेबल ट्रस्ट द्वारा अब तक किए गए कार्य अलग-अलग श्रेणी में रहे हैं। पहला कृषिवानिकी है जहाँ सीमांत किसानों से संबंधित भूमि की परिधि पर 10 फलदार पेड़ लगाए गए ''ताकि वे खेती जारी रखने के साथ ही फलदार पेड़ों से अतिरिक्त आय भी प्राप्त कर सकें... स्थानीय फल और नारियल के पेड़।''

एक अन्य योजना के अंतर्गत प्राकृतिक आपदाओं से प्रभावित क्षेत्रों में पेड़ लगाए जाते हैं। ''हमने 2019 में तंजावुर में उन किसानों के लिए 2,000 नारियल के पेड़ लगाए जिन्होंने गाजा चक्रवात के दौरान नारियल के पेड़ खो दिए थे और कुछ समय पहले कावेरी नदी के तट पर 1,000 फल और जंगली पेड़ लगाए थे जब यहाँ लगातार भूस्खलन हो रहा था,'' यह उत्साही पर्यावरणविद् कहती हैं।

उनके ट्रस्ट द्वारा की गई एक दिलचस्प परियोजना किसानों द्वारा उपेक्षित छह एकड़ बंजर भूमि पर एक खाद्य वन शुरू करने की है, ''जिसके परिणाम पहले ही मिलना शुरू हो चुके हैं। गांवों में पेड़ लगाते समय हमने जाना कि बहुत सारी जमीन बंजर पड़ी है क्योंकि किसान टिकाऊ खेती के लिए आवश्यक बुनियादी ढांचे का खर्च उठाने में असमर्थ थे और शिक्षा की कमी एवं बिचौलियों के हस्तक्षेप के कारण सरकारी योजनाएं उन तक नहीं पहुंच सकीं।''

तो यह 'खाद्य वन' कर्नाटक के कोलार जिले के कडेनहल्ली गांव में एक उपेक्षित कृषि भूमि पर लगाया गया था। ''हमने शून्य से शुरू किया, बाड़ को मजबूत किया, बोरवेल का कायाकल्प किया, एक जल भंडारण निकाय निर्मित किया, भूमि को जोता और समतल किया, चौकीदार के शेड का नवीनीकरण किया और ड्रिप एवं स्प्रिंकलर से भूमि को सिंचित किया।''

विभिन्न प्रकार के फलदार पेड़ और फूलों की झाड़ियों को लगाया गया और मधुमक्खी के बक्से स्थापित किए गए। फलों के पेड़ों के बीच के क्षेत्र में साग-सब्जियों आदि की खेती की जा रही है। किसानों और रुचि रखने वाले अन्य लोगों को जागरूक करने और उन्हें प्रशिक्षण देने के लिए इसे एक मॉडल एकीकृत खेत के रूप में तैयार किया गया है। बेंगलुरु के एक्सआईएमई कॉलेज के इंटर्न

गौरेनहल्ली गांव में एक स्वास्थ्य शिविर में दंत जांच।

को इनहाउस प्रशिक्षण भी दिया गया। (*https://youtu.be/JhKv8ScSg_Y*) कॉर्पोरेट स्वयंसेवक भी आगे आकर फाउंडेशन की हरियाली पहलों के लिए श्रमदान करते हैं।

एक चैंपियन जिनके 20 साल के प्रयासों ने आर्मी इंस्टीट्यूट ऑफ फैशन डिजाइन, स्कूल, कॉलेज और आवासीय परिसरों में 97,000 से अधिक पेड़ों को जीवनदान दिया है, जेनेट का कहना है कि वह पेड़ लगाने के लिए कुछ मानदंडों का सख्ती से पालन करती है। ''हम केवल उन स्थानों पर जाते हैं जहाँ हमारे द्वारा लगाए गए पेड़ों की देखभाल करने के लिए लोग हो और इससे भी महत्वपूर्ण बात यह है कि वहाँ पर उन पेड़ों के विकास के लिए एक जल स्रोत उपलब्ध हो। और हम लगाए गए हर पेड़ पर नज़र रखते हैं।'' उनकी टीम द्वारा लगाए गए पेड़ भारतीय सेना, वायु सेना और रेलवे की भूमि पर, स्कूलों, कॉलेजों, सरकारी भवनों और गेटेड समुदायों में फल-फूल रहे हैं जहाँ निवासी कल्याण संघ पेड़ों की देखभाल की जिम्मेदारी निभाते हैं।

*एन कृष्णमूर्ति द्वारा रूपरेखा*

Rotary

DISCOVER, ELEVATE, INSPIRE

Rotary Institute
@ GOD'S OWN COUNTRY
KOCHI 2024
ZONES 4,5,6,7 | 6-8 DECEMBER 2024

THE MAGIC OF ROTARY

*God's Own Country*
*beckons you to witness*
**DIVERSITY IN ACTION**

PDG Dr. John Daniel
& Dr. Meera John
Chairman,
Rotary Institute Kochi

RI Director Anirudha Roy Chowdhury
& Shipra Roy Chowdhury
Convenor

RI President
Stephanie A. Urchick

See you there!

6th - 8th December 2024
Grand Hyatt Kochi Bolgatty

Rotary PEOPLE OF ACTION

# आंध्र-तेलंगाना की बाढ़ में रोटरी बनी सहारा

जयश्री

बंगाल की खाड़ी के ऊपर दबाव बनने के कारण भारी बारिश हुई, जिससे पूरे आंध्र प्रदेश (एपी) और तेलंगाना में बड़े पैमाने पर बाढ़ आ गई। 30 अगस्त से शुरू हुई बारिश सितंबर के पहले सप्ताह तक तेज हो गई, जिसका खामियाजा एपी को भुगतना पड़ा। आई एम डी की एक रिपोर्ट बताती है कि इस राज्य में साल भर में होने वाली कुल बारिश का 27 प्रतिशत केवल 48 घंटों में गिर चुका है। रिपोर्ट में आगे बताया गया है कि यह खराब मौसम एक भूमि-आधारित चक्रवात की वजह से उत्पन्न हुआ था, जिसने अरब सागर और पूर्वी भारत की भूमि की गर्मी दोनों से नमी खींची, जिसके संयोजन के कारण दोनों राज्यों में 31 अगस्त को केवल 24 घंटों में आश्चर्यजनक रूप से 500 मिमी बारिश हुई।

इस मूसलाधार बारिश को जन्म देने वाली वायुमंडलीय स्थितियां "मानसून लो" नामक घटना का हिस्सा हैं। ये तंत्र कमजोर हुए बिना बरकरार रहता हैं, धीरे-धीरे आगे बढ़ता हैं और कम समय में भारी मात्रा में वर्षा करता हैं। परिणामस्वरूप, इन दोनों राज्यों एवं ओडिशा और गुजरात ने 12 सितंबर तक भारी वर्षा का सामना किया।

नदी के जल स्तर में हुई तेजी से हुई वृद्धि और बांधों से पानी छूटने से संकट और गहरा गया। बाढ़ के पानी ने गांवों को डुबा दिया, आवश्यक सेवाओं तक पहुंच काट दी जिससे बड़े पैमाने पर बचाव कार्य करना पड़ा। आंध्र प्रदेश और तेलंगाना को कवर करने वाले रो ई मंडल 3150 के मंडल गवर्नर शरथ चौधरी ने कहा कि सर्वाधिक प्रभावित क्षेत्रों में

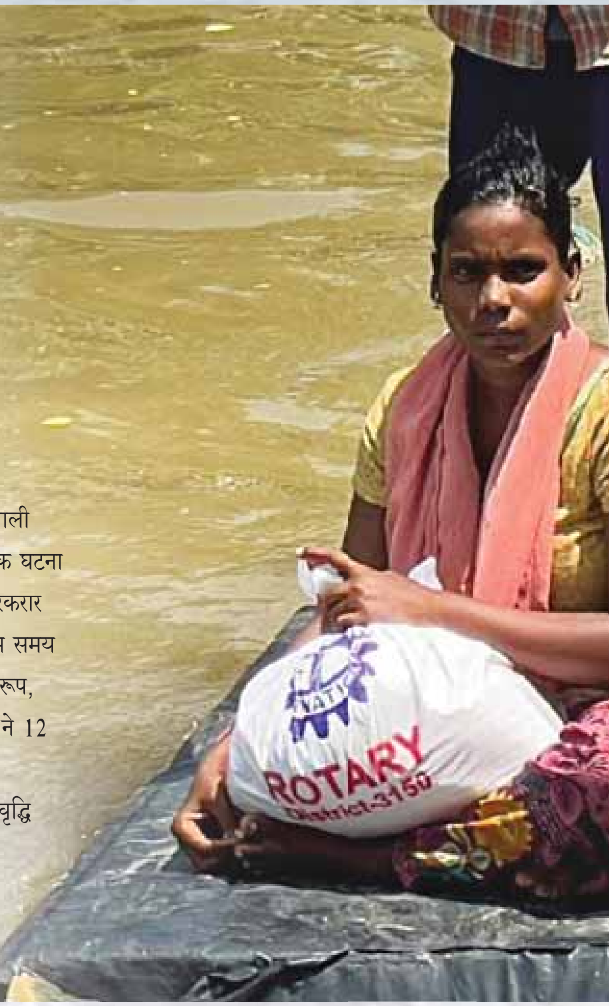


*ऊपर: रोटरी रिलीफ किट एकत्रित करती एक महिला।*

*गुंटूर जिला कलेक्टर जे वेंकट मुरली बाढ़ पीड़ितों को वितरण के लिए तैयार प्रावधानों का निरीक्षण कर रहे हैं। डीजीई एस वी राम प्रसाद बाईं ओर दिखाई दे रहे हैं।*

आंध्र का गुंटूर और तेलंगाना का खम्मम जिला था, जहां वायरा नदी और मधिरा झील उफान पर थी, जिससे और ज्यादा तबाही हुई है। ₹5,000 करोड़ से अधिक की फसलों को नुकसान हुआ, जिससे छोटे किसान बुरी तरह प्रभावित हुए। राष्ट्रीय आपदा प्रतिक्रिया बल (एन डी आर एफ) सहित आपातकालीन सेवाओं को फंसे हुए लोगों को बचाने और उन्हें राहत शिविरों तक पहुचाने के लिए तैनात किया गया था।

डीजी चौधरी ने *आपादबंधु* नामक परियोजना का नेतृत्व किया जो एक बड़े पैमाने की आपदा राहत पहल है। 40 रोटरी क्लबों के योगदान के साथ, परियोजना ने धन जुटाया,

आपूर्ति की खरीद की, और बाढ़ प्रभावित क्षेत्रों में वितरण के लिए 5,000 आपातकालीन किट पैक की। ''रोटेरियनों ने नाव से बाढ़ग्रस्त गांवों का जायजा लिया और सहायता पहुँचाने के लिए कमर तक गहरे पानी में भी गए। इन किटों में एक सप्ताह तक चलने वाला आवश्यक किराने का सामान था।'' आंध्र प्रदेश में रोटरी क्लब पिडीगुरल्ला लाइम सिटी और तेनाली और तेलंगाना में रोटरी क्लब खम्मम, राहत किट के वितरण के लिए समन्वय एजेंसियां थीं।

किटों के नक़ल और लूट को रोकने के लिए, पहले लोगों के बीच कूपन वितरित किए गए और उन कूपन के बदले राहत किट दी गई जिससे यह सुनिश्चित हुआ कि प्रत्येक परिवार को उनका बहुप्रतीक्षित राहत पैकेज मिल सके। स्थानीय आवासीय संघों और गैर-सरकारी संगठनों ने मिलकर लगभग 4,000 कंबल और चादरें वितरित की।

रोटरी क्लब स्मार्ट हैदराबाद की सदस्य अनीता ने कहा कि कृष्णा नदी के किनारे बसे आदिवासी परिवारों के लिए रोटरी आपातकालीन किट विशेष रूप से महत्वपूर्ण साबित हुई। बारिश शुरू होने के बाद से वे 17 दिनों तक फंसे रहे और ''हम नावों में किट लेकर उनके पास पहुंचे।''

**कलेक्टर ने हमारे वितरण स्थलों में से एक में व्यक्तिगत रूप से समाप्ति तिथियों के लिए पैकेटों का निरीक्षण किया। जब उन्होंने हमारे काम और उत्साह को देखा, तो वे प्रभावित हुए और हमारी मदद करने का वादा किया।**

**शरथ चौधरी**
मंडल गवर्नर, रो ई मंडल 3150

यह परियोजना रोटेरियनों की एक सामूहिक भागीदारी थी। रोटरी क्लब बंजारा हिल्स के एक सदस्य, जो खाद्य तेल का व्यापार करते हैं, ने इसे राहत किट में शामिल करने के लिए योगदान दिया। कपड़ा व्यवसाय में कार्यरत कुछ सदस्यों ने कपड़े और चादरें दीं। चौधरी, जो सातवीं बार आपदा राहत परियोजना में भाग ले रहे थे, ने कहा यह बात संतोषजनक थी कि हमने पहले दिन पर्याप्त धन इकट्ठा किया, अगले दो दिनों में सामग्री खरीदी और पैक की, चौथे दिन कूपन वितरित किए और पांचवें दिन तक हमने प्रमुख क्षेत्रों में किटो का वितरण पूरा कर लिया था।

*नीचे: विजयवाड़ा में राहत किट वितरित करने के लिए ट्रैक्टर पर सवार रो ई मंडल 3020 के रोटेरियन।*

लगभग सभी रोटेरियनों ने इस राहत गतिविधियों में भाग लिया। उन्होंने आगे कहा कि मंडल के क्लबों ने अब तक लगभग ₹50 लाख का योगदान दिया है और पैसा अभी भी आ रहा है।

*परियोजना आपादबंधु* को जिला कलेक्टर और राज्य सरकार के अधिकारियों द्वारा सराहा गया। कलेक्टर ने व्यक्तिगत रूप से हमारे वितरण स्थलों में से एक का दौरा किया और एक्सपायरी डेट के लिए पैकेटों का निरीक्षण किया। जब उन्होंने हमारे काम और उत्साह को देखा, तो वह पूरी तरह से प्रभावित हुए और हमारी मदद करने का वादा किया।

*पीडीजी राजा शेखर रेड्डी (दाएं से तीसरे) और रो ई मंडल 3150 के रोटेरियन बाढ़ पीड़ितों को रोटरी आपातकालीन किट वितरित करने के बाद।*

14 सितंबर तक, जब चौधरी रोटरी न्यूज से बात कर रहे थे, तब भी कई क्षेत्रों, विशेष रूप से नदी और नहर के किनारों पर, बाढ़ का पानी कम नहीं हुआ था और लोग राहत शिविरों में ही रुके हुए थे। हमारे पास अब भी काफी बड़ी धनराशि बची हुई है और हमारी राहत योजनाओं के दूसरे चरण में दीर्घकालिक पुनर्वास सेवाएं शामिल हैं, जैसे कि लोगों को व्यवसाय फिर से स्थापित करने में मदद करना, व्यावसायिक कौशल प्रशिक्षण प्रदान करना और बाढ़ प्रभावित क्षेत्रों में चिकित्सा शिविरों का आयोजन करना।

**रो ई मंडल 3020 को टीआरएफ से 25,000 डॉलर का आपदा प्रतिक्रिया अनुदान मिला है और इस धनराशि का उपयोग 1,800 परिवारों को बाढ़ राहत किट प्रदान करने के लिए किया जाएगा।**

**डॉ एम वेंकटेश्वर राव**
मंडल गवर्नर, रो ई मंडल 3020

तटीय आंध्र प्रदेश के कृष्णा जिले में भी भीषण बाढ़ आई है। मीडिया की एक रिपोर्ट बताती है कि विजयवाड़ा में एक ही दिन में 29 सेंटीमीटर से अधिक बारिश दर्ज की गई, जो कृष्णा नदी के इतिहास में अब तक की सबसे खराब आपदाओं में से एक है। इसके जवाब में, कृष्णा जिले के आठ रोटरी क्लब जो रो ई मंडल 3020 के अंतर्गत आते हैं, विभिन्न राहत शिविरों में भोजन वितरित करने के लिए एक साथ आए, जिनमें लगभग 3 लाख विस्थापित लोग रह रहे थे। रो ई मंडल 3020 के डीजी वेंकटेश्वर राव ने कहा, ''इस बीच, जिला कलेक्टर ने हमें दूध उपलब्ध कराने का अनुरोध किया क्योंकि विजयवाड़ा में एक स्थानीय दूध संयंत्र, विजया डेयरी, बाढ़ में डूब गया था और दूध की भारी कमी हो गई थी।'' रोटेरियनों ने अपने संपर्कों के माध्यम से, तुरंत विजयवाड़ा से 30 किमी दूर स्थित जर्सी डेयरी से 5,000 दूध के पैकेट मंगवाए।

उन्होंने कहा, ''लगभग सभी रोटरी क्लबों ने धन एकत्रित करने में योगदान दिया और हमने दूरदराज के इलाकों में कपड़े, कंबल, सैनिटरी पैड, मच्छरदानी इत्यादि सामान वाली किट वितरित की, जिनकी कुल कीमत ₹40 लाख थी। मंडल को हाल ही में टीआरएफ की तरफ से 25,000 डॉलर का आपदा प्रतिक्रिया अनुदान मिला है।'' उन्होंने आगे कहा, ''हम 1,800 परिवारों को ₹2,000 मूल्य की बाढ़ राहत किट वितरित करेंगे। रोटरी क्लब अमरावती ने ₹3 लाख का दान दिया, और इसके एक सदस्य ने सीएम राहत कोष में ₹1 करोड़ का दान दिया।''

राव ने कहा, ''जैसे-जैसे पानी घटेगा और समुदायों का पुनर्निर्माण शुरू होगा, हमारा मानना हैं कि हमारे दीर्घकालिक पुनर्वास प्रयास परिवारों को इस विनाशकारी घटना से उबरने में मदद करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएंगे।'' ■

*रो ई मंडल 3150 के डीजी शरत चौधरी और डीजीई राम प्रसाद वितरण स्थल पर।*

GEN WORKS
NEXT GenWorks
Defining tomorrow, today.
Malar
Rotary
COMPLETE WOMEN WELLNESS SOLUTIONS
SCREEN & TREAT IN A SINGLE SITTING
COLPOSCOPY
THERMAL ABLATION
BREAST SCREENING
EVA Pro
Enhanced Visual Assessment of the cervix
ThermoGlide
Treating precancerous lesions in one sitting
BRASTER® PRO
Works on contact thermography
OUR COLLABORATION WITH ROTARY FOR PROJECT MALAR:
Big success & a game changer for our women's cancer screening
CAMPS CONDUCTED 250+
OVER 20,000+ WOMEN SCREENED
marketing@genworkshealth.com
+91 96320 47604

ADVT.

# ग्लेन किनरॉस सज्जनता के प्रतीक

राजेन्द्र साबू

उषा और मेरी मुलाकात हेतर और ग्लेन किनरॉस से मार्च-अप्रैल 1978 में बोका रैटन, फ्लोरिडा, अमेरिका में रोटरी अन्तर्राष्ट्रीय सभा में हुई थी, क्योंकि हम दोनों ग्रुप डिस्कशन के लीडर थे। अगले साल, हम फिर से उसी स्थान पर उसी भूमिका में मिले। मैं 1981-83 के लिए रो ई निदेशक बन गया और ग्लेन 1982-84 के लिए रो ई निदेशक बन गए। रो ई अध्यक्ष-मनोनीत बिल स्केल्टन के लिए, ग्लेन निदेशक मंडल की कार्यकारी समिति के उपाध्यक्ष और सभापति बने। रोटरी मंच के माध्यम से, हम करीबी दोस्त बन गए, हमने कई रो ई सम्मेलनों का दौरा किया, जिनमें से रोम सम्मेलन उल्लेखनीय था, जहां क्लेम रेनौफ रो ई अध्यक्ष थे। हम रो ई की सभाओ में भी मिले।

1997 में, जब ग्लेन रो ई अध्यक्ष-मनोनीत थे, हम स्कॉटलैंड में अयोजित ग्लासगो सम्मलेन में मिले जहां रोटरी शांति केंद्र कार्यक्रम की शुरुआत की गई थी। उस समय, मैं रोटरी संस्थान का अध्यक्ष था, और लुइस जियाए रो ई अध्यक्ष थे। केंद्र के लिए चयनित विश्वविद्यालयों में से एक ब्रिस्बेन का क्वींसलैंड विश्वविद्यालय था। ब्रिस्बेन की हर यात्रा के दौरान, मैं ग्लेन और उनके परिवार से मिलता था।

10 जनवरी 1998 को, ग्लेन ने अपनी पत्नी हीथर के साथ चंडीगढ़ का दौरा किया, जिनकी उसी वर्ष अक्टूबर में दिल की सर्जरी के बाद दुखद मृत्यु हो गई। पीआरआईपी क्लेम रेनौफ और उनकी पत्नी फर्त ने पीआरआईडी टी डी ग्रिले, जो मेरी रो ई अध्यक्षता के दौरान रो ई निदेशक थे, के साथ इस कार्यक्रम में भाग लिया। उन्होंने ट्रेन से यात्रा की, और उनके लिए दो कोच बुक किए गए। वे पंजाब राजभवन में रुके और हमारे घर पर दोपहर के भोजन के लिए हमारे साथ शामिल हुए, जिसे लॉन में परोसा गया था। रमेश भार्गव मंडल गवर्नर थे और सुनील खेड़ा रोटरी क्लब चंडीगढ़ के अध्यक्ष थे।

सोवियत संघ में भारत के पूर्व राजदूत और केंद्रीय विदेश मंत्री इंद्र कुमार गुजराल को जानने के कारण, मैंने उनसे 1998 में दिल्ली में विधान परिषद की मेजबानी करने को कहा। 12 जनवरी को, हम नई दिल्ली में तत्कालीन

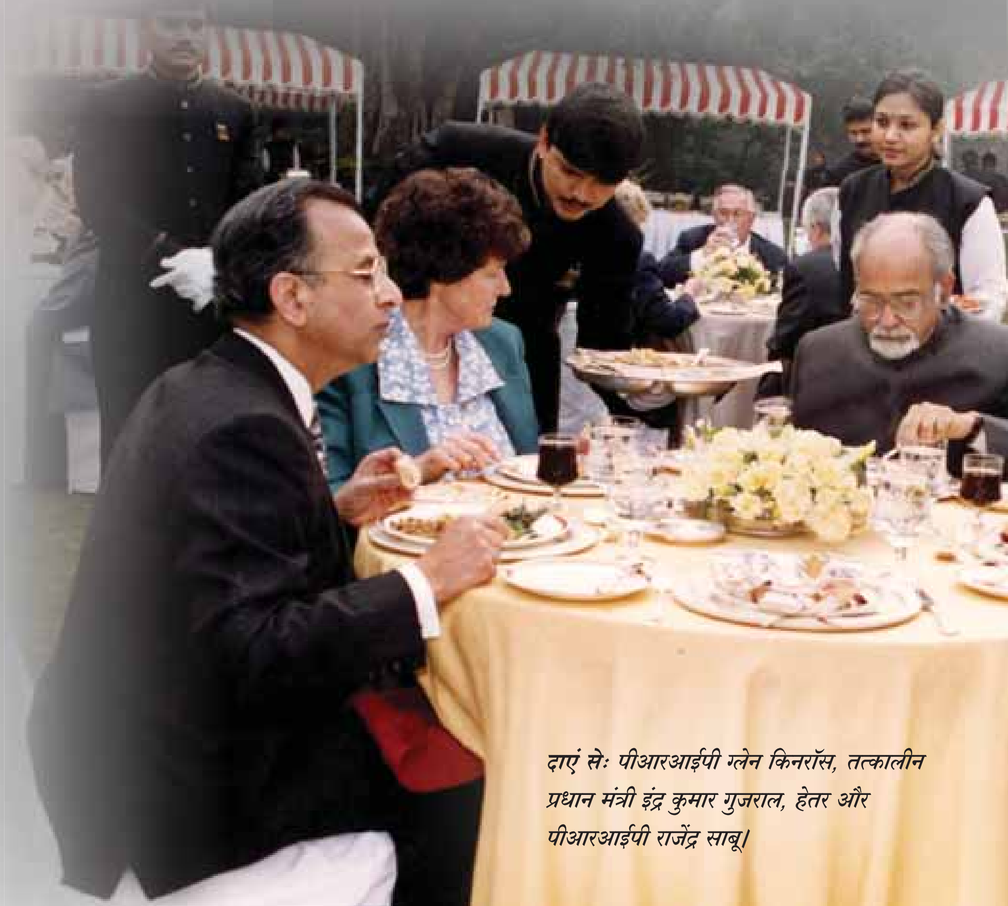

*दाएं सेः पीआरआईपी ग्लेन किनरॉस, तत्कालीन प्रधान मंत्री इंद्र कुमार गुजराल, हेतर और पीआरआईपी राजेंद्र साबू।*

प्रधानमंत्री इंद्र कुमार गुजराल द्वारा अध्यक्ष ग्लेन के लिए आयोजित दोपहर के भोज पर फिर से मिले। दिल्ली में रोटरी की विधान परिषद् पहली बार भारत में आयोजित की गई थी। पीआरआईपी रे क्लिंगिनस्मित विधान परिषद् के अध्यक्ष थे और ग्लेन के सहयोगी जॉन सी कैरिक थे।

दिसंबर 2010 में, ग्लेन मंडल सम्मेलन में रो ई अध्यक्ष के प्रतिनिधि के रूप में चंडीगढ़ लौटे, जिसमें केंद्रीय मानव संसाधन एवं दूरसंचार मंत्री कपिल सिब्बल, हरियाणा के राज्यपाल जगन नाथ पहाड़िया और *द ट्रिब्यून* के प्रधान संपादक राज चेंगप्पा उपस्थित थे। डीजी मधुकर मल्होत्रा ने औपचारिक रूप से रो ई अध्यक्ष रे क्लिंगनस्मिथ के कार्यालय से ग्लेन को इस आयोजन के लिए प्रतिनिधि नियुक्त करने का अनुरोध किया था।

*(बाएं से) ग्लेन किनरॉस, हेतर, उषा और राजेंद्र साबू।*

जब भी उषा और मैं ऑस्ट्रेलिया जाते थे, हम हमेशा पांच दशकों से हमारे करीबी मित्र रहे क्लेम रेनौफ के साथ उनके घर जाते थे। उनके घर पर, हम शाकाहारी नाश्ता किया करते थे। लंच और डिनर के लिए, हम सभी एक इंडियन रेस्टोरेंट में खाने जाया करते थे। हमने रोटरी क्लब हैमिल्टन, ब्रिस्बेन, की क्लब बैठक में भी भाग लिया और उनके क्लब के कुछ भारतीय रोटरी सदस्यों से भी मिले। हमने भारत और ऑस्ट्रेलिया के बीच क्रिकेट मैचों के बारे में भी बातें की।

1990 में, मैंने ऑस्ट्रेलिया के कैनबरा स्थित पीस पार्क का दौरा किया जहां रोटरी द्वारा शांति स्मारक स्थापित किया गया था। ग्लेन जब चंडीगढ़ आए, तो उन्होंने चंडीगढ़ की सुखना झील पर शांति स्मारक देखा।

मार्च 1992 में, हमने रो ई कोषाध्यक्ष-निदेशक केविन हार्डेस के घर का दौरा करने के लिए ऑस्ट्रेलिया की यात्रा की। हम ब्रिस्बेन गए, जो मेरे गुरु सर क्लेम रेनौफ और मेरे दोस्त ग्लेन किनरॉस का घर था। उन्होंने हमारी यात्रा के लिए एक बैठक आयोजित की थी। हम 1998 में रोटरी इंडियानापोलिस सम्मलेन, 1999 में रोटरी सिंगापुर सम्मलेन, 2003 में ब्रिस्बेन में आयोजित रो ई संस्थान और रोटरी सम्मलेन ब्रिस्बेन में मिले।

मार्च 2008 में, मैं रोटरी क्लब फोर्स्टर, न्यू साउथ वेल्स, द्वारा आयोजित एक सम्मेलन में भाग लेने के लिए ऑस्ट्रेलिया गया। उस सम्मेलन में 1991-92 में मेरी रो ई अध्यक्षता के दौरान मेरे सहयोगी पीडीजी जॉन बोआग थे जो बाद में 2012-14 के दौरान रो ई निदेशक बने। वहाँ हम ब्रिस्बेन में ग्लेन के घर पर रहे और सम्मेलन में भाग लेने के लिए एक साथ गए। हम क्लेम के घर भी गए, जहाँ मैंने उनकी पत्नी फर्त का रो ई अध्यक्षों की थीम पिन का संग्रह था। उन्होंने कहा, ''राजा, मेरे पास तुम्हारा नहीं है।'' मैंने तुरंत उन्हें एक दे दिया।

मैं ग्लेन किनरॉस को हमेशा एक सज्जन व्यक्ति के रूप में याद रखूंगा। उषा और मुझे उनकी कमी खलेगी। उनका नाम उच्चतम गुणवत्ता, नवाचार और उपलब्धि का पर्याय बना रहेगा।

*लेखक रोटरी अंतर्राष्ट्रीय के पूर्व अध्यक्ष हैं।*

# एक हृदय जांच बस

**रशीदा भगत**

रोई मंडल 3212 के अंतर्गत आने वाले सभी सात राजस्व जिलों के ग्रामीणों को नि:शुल्क एवं गुणवत्तापूर्ण हृदय सेवा प्रदान करने के लिए मंडल ने ₹1 करोड़ से अधिक की लागत से एक अत्याधुनिक स्वास्थ्य देखभाल बस का अधिग्रहण किया।

रो ई मंडल 3212 के पीडीजी वीआर मुत्तु ने कहा कि मंडल गवर्नर के रूप में उनके कार्यकाल के दौरान 121,000 डॉलर (₹1 करोड़ से अधिक) के वैश्विक अनुदान के साथ इस परियोजना की योजना बनाई गई जिसमें एक अमेरिकी क्लब, रोटरी क्लब लास वेगास वोन (रो ई मंडल 5300) अंतर्राष्ट्रीय साझेदार था। ''विश्व स्वास्थ्य संगठन के आंकड़ों के अनुसार विकासशील देशों में 75 प्रतिशत मृत्यु का कारण दिल का दौरा या आघात हैं। हम सभी जानते हैं कि ग्रामीण क्षेत्रों में स्वास्थ्य सुविधाओं की कमी है, कार्डियोलॉजी, न्यूरोलॉजी आदि जैसी विशिष्ट चिकित्सा सेवा की तो बात ही छोड़ दें। इसलिए हमने एक आधुनिक, पूर्ण रूप से सुसज्जित हृदय सेवा बस लाने का फैसला किया - जिसे हमने कर्मवीरार कामराजार हार्ट केयर बस - नाम दिया है, जो विभिन्न गांवों का दौरा करके संभावित बीमारियों के लिए ग्रामीणों की जांच करने हेतु जांच शिविर आयोजित कर सकेगी।''

तमिलनाडु के एक पूर्व मुख्यमंत्री के नाम पर पावर बैक-अप वाली यह वातानुकूलित बस, ईसीजी मशीन, अल्ट्रासाउंड डायग्नोस्टिक सिस्टम और एक डिफिब्रिलेटर से सुसज्जित है और इसमें एक ऑडियो-विज़ुअल सिस्टम मौजूद है जिसपर हृदय देखभाल से जुड़े वीडियो के अंश चलाए जा सकते है। बस में योग्य डॉक्टरों, नर्सों, इको एवं ईसीजी तकनीशियनों के साथ ही रो ई मंडल 3212 के स्वयंसेवकों और कुछ अन्य व्यक्तियों की एक टीम भी आती है जो रोटरी क्लब द्वारा आयोजित किए जा रहे शिविर के सुचारू संचालन को सुनिश्चित करती है।

पीडीजी मुत्तु ने कहा कि इस बस को तिरुनेलवेली के कावेरी अस्पताल में खड़ा किया जाएगा और दो महीने पहले इसकी शुरुआत के बाद से इस बस ने विभिन्न गांवों में आयोजित 10 स्वास्थ्य शिविरों को पूरा किया है।

*हृदय देखभाल बस के उद्घाटन के अवसर पर डी जी मीरानखान सलीम और पीडीजी वी आर मुत्तु।*

*बस के अंदर एक बच्चे की हृदय विकार जांच।*

रो ई मंडल 3212 के जो क्लब गांवों में जांच शिविर आयोजित करने की योजना बना रहे हैं उन्हें पहले इस शिविर का स्थान निर्धारित करके बाकी तैयारी करने, आवश्यक अनुमति प्राप्त करने और बाकी सभी चीजों का प्रबंध करने के बाद शिविर आयोजित करने से 20 दिन पहले इस बस को बुक करना होगा। यह पूछे जाने पर कि क्या क्लबों को बस को सेवा में लाने के लिए कोई भुगतान करना होगा, मुत्तु ने कहा: उन्हें केवल कावेरी अस्पताल से शिविर स्थल तक बस को ले जाने में लगने वाले ईंधन की लागत का भुगतान करना होगा!

शिविरों के दौरान लाभार्थियों की उच्च रक्तचाप, मधुमेह, हृदय संबंधी बीमारियों के लिए जांच की जाती है और एक सामान्य चिकित्सा परीक्षण भी किया जाता है। इस हृदय सेवा बस के माध्यम से पूर्व में आयोजित 10 हृदय शिविरों के दौरान 1,346 व्यक्तियों की जांच की गई, 623 लोगों को ईसीजी सुविधा का लाभ मिला और 387 लोगों का इको कार्डियोग्राम परीक्षण किया गया; ''70 ग्रामीणों की कुछ ऐसी चिकित्सा समस्याओं का पता चला जिसके लिए उन्हें अस्पताल में आगे इलाज की आवश्यकता है और उन्हें उचित परामर्श दिया गया। हमें यह जानकर खुशी हो रही है कि हमारी बस मार्च 2025 तक हमारे मंडल के रोटरी क्लबों द्वारा बुक की जा चुकी है। हमें लगता है कि यह न केवल हमारी जिम्मेदारी है बल्कि एक विशेषाधिकार भी है कि हम अपने उन साथी भारतीयों की स्वास्थ्य देखभाल आवश्यकताओं को पूरा करने में सक्षम है जिनके पास गुणवत्तापूर्ण चिकित्सा सुविधाओं तक पर्याप्त पहुंच नहीं है,'' उन्होंने आगे कहा।

यदि किसी को गंभीर हृदय स्थितियों से संबंधित चिकित्सा प्रक्रियाओं की आवश्यकता होती है तो रोटरी उस व्यक्ति को सरकारी धन तक पहुंच प्राप्त करने में मदद करेगी जो जरूरतमंदों की स्वास्थ्य देखभाल आवश्यकताओं के लिए निर्धारित किया गया है।

इस विशेष बस का उपयोग करके चिकित्सा शिविरों की योजना के बारे में अधिक जानकारी मंडल के रोटेरियन रोटरी क्लब विरुधुनगर इधायम (मोबाईल : 97509 55445) के सदस्य टी सुडलैवेल से प्राप्त की जा सकती है।■

# बच्चों के लिए कैंसर देखभाल आहार

इस साल 1 जुलाई को, रोटरी क्लब ठाणे घोड़बंदर रोड, रो ई मंडल 3142 ने मुंबई के परेल में सेंट जूड्स चाइल्डकेयर सेंटर में *प्रोजेक्ट अन्नपूर्णा* की शुरुआत की, जिसका उद्देश्य मुंबई के टाटा मेमोरियल अस्पताल में कैंसर का इलाज करा रहे 100 बच्चों को पोषण संबंधी सहायता प्रदान करना है। परियोजना समन्वयक शंकर भगत ने कहा, ''हमारा लक्ष्य पूरे साल हर हफ्ते कैंसर से जूझ रहे बच्चों वाले 100 परिवारों को पौष्टिक आहार पैक उपलब्ध कराना है।'' प्रत्येक सावधानीपूर्वक तैयार किए गए पैक की कीमत ₹500 है और कुल परियोजना लागत ₹26 लाख होने का अनुमान है। इस पहल से टाटा मेमोरियल अस्पताल में इलाज करा रहे और मुंबई भर में सभी 20 सेंट जूड्स केंद्रों में रहने वाले वंचित बच्चों को लाभ होगा।■

# जीवन रक्षक AED मशीनें

**डॉ अक्षय मेहता**

एक 70 वर्षीय वास्तुकार बांद्रा के कार्टर रोड पर सुबह की सैर कर रहे थे; वह अचानक लड़खड़ाकर फुटपाथ पर गिर पड़े। आसपास मौजूद लोग उनकी ओर भागे और सामान्य तरीके से प्रतिक्रिया देने लगे, किसी ने उनके मुंह पर पानी छिड़कने का सुझाव दिया, किसी ने उन्हें अस्पताल ले जाने का सुझाव दिया, आदि।

सौभाग्य से, वहाँ के राहगीरों में एक सज्जन व्यक्ति समीर फिरस्ता थे जो ऐसी स्थितियों से निपटने के लिए अच्छी तरह प्रशिक्षित थे। उन्होंने पीड़ित के दोनों कंधों को हल्के से दबाया और उनके सांस के संकेतों पर गौर करने के लिए उनकी छाती को देखा। ''कोई प्रतिक्रिया नहीं, कोई सांस नहीं!'', उन्होंने कहा और जल्द ही यह निष्कर्ष निकाला कि पीड़ित को दिल का दौरा पड़ा है। फिर उन्होंने दिल के दौरे से पीड़ित व्यक्ति को बचाने के लिए सबसे महत्वपूर्ण तीन कदम उठाए।

सबसे पहले उन्होंने मदद के लिए ऐसे व्यक्ति को बुलाया जो दौड़कर पास के ओटर्स क्लब से AED मशीन ला सकें। फिर उन्होंने उस व्यक्ति की छाती को पंप करना शुरू किया ठीक उसी तरह जैसे उन्हें सिखाया गया था - 2'' गहरा, एक मिनट में 100 बार। इससे मस्तिष्क तक रक्त संचार को सुनिश्चित किया जाता है ताकि व्यक्ति की मृत्यु न हो। तीसरे चरण में पीड़ित को बिजली का झटका देने के लिए AED मशीन का उपयोग किया जाता है।

उन्होंने कर दिखाया और सबको चौंकाते हुए यह मुंबई के लिए पहला ऐसा उदाहरण बना जब एक गैर-चिकित्सकीय आम आदमी ने AED मशीन का उपयोग किया और साथ ही सामयिक एवं उचित सीपीआर की मदद से एक पीड़ित की जान सफलतापूर्वक बचा ली गई।

जब किसी को दिल का दौरा पड़ता है तो उस व्यक्ति का उपचार मौके पर ही होना चाहिए क्योंकि हर पल मायने रखता है। यदि व्यक्ति के दिल ने धड़कना बंद कर दिया और उसके मस्तिष्क तक रक्त संचार रुक गया तो कुछ ही मिनटों में उस व्यक्ति की मृत्यु हो सकती है।

मस्तिष्क तक रक्त को संचारित किए बिना यदि पीड़ित को अस्पताल ले जाया जाता है (अक्सर काफी समय बीतने के बाद) तो आमतौर पर अस्पताल द्वारा पीड़ित को वहाँ पहुंचते ही मृत घोषित किया जाता है।

इसलिए पीड़ित के आसपास मौजूद लोगों का यह कर्तव्य है कि वो मस्तिष्क तक रक्त का संचार करने और पीड़ित को किसी भी तरह की क्षति या मृत्यु से बचाने के लिए मौके पर ही छाती को पंप करना शुरू करें। दूसरा महत्वपूर्ण कदम AED (ऑटोमेटेड एक्सटर्नल डिफिब्रिलेटर) की मदद से बिजली का झटका देकर हृदय को पुनर्जीवित करना है जैसा कि हवाई अड्डों पर देखा जाता है। (सौभाग्य से नवीनतम दिशानिर्देशों के अनुसार मुंह से मुंह में सांस देने की आवश्यकता नहीं है)।

इसलिए जनता को AED का उपयोग करने के लिए आसानी से प्रशिक्षित किया जा सकता है ताकि वो आवश्यकता पड़ने पर इसका उपयोग करके किसी की जान बचा सकें।

**एक शाम में 64 AED मशीनों की प्राप्ति... और भी आने वाली है!**

हम रोटरी क्लब बॉम्बे एयरपोर्ट (आरसीबीए) ने एक अनूठा संगीत कार्यक्रम आयोजित किया जिसमें ट्यूनिंग फॉक्स नामक एक चिकित्सा सलाहकार समूह ने समाज की सेवा के रूप में एक अद्भुत संगीत प्रदर्शन के साथ दर्शकों को

*रोटरी क्लब बॉम्बे एयरपोर्ट के आईपीपी डॉ अक्षय मेहता (बाएं से तीसरे), आईपीडीजी अरुण भार्गव (दाएं से तीसरे) सीपीआर के माध्यम से जीवन बचाने के प्रतीक कला संरचना के सामने।*

मंत्रमुग्ध कर दिया। आरसीबीए ने समीर फिरस्ता, ऊपर वर्णित रक्षक, रिवाइव हार्ट फाउंडेशन से उनके प्रशिक्षक, सुमैया और उन भाग्यशाली पीड़ित को सार्वजनिक रूप से सम्मानित करने के लिए इस अवसर का उपयोग किया। फिरस्ता द्वारा इस महान बचाव कार्य की सच्ची कहानी और भविष्य में इस तरह की और अधिक सफल कहानियों की संभावना से दर्शक इतने प्रभावित हुए कि दर्शकों में बैठे लोगों द्वारा कुल 64 AED मशीनों का एक सहज वादा किया गया! इसलिए आरसीबीए ने लोगों को दिल के दौरे को पहचानकर उचित प्रतिक्रिया देने के लिए प्रशिक्षित करने के साथ ही रेलवे स्टेशनों जैसे विभिन्न सार्वजनिक स्थानों पर इन मशीनों को स्थापित करने की एक बड़ी परियोजना करने का फैसला किया।

### रेलवे स्टेशनों पर AED मशीनें!

क्लब ने मुंबई सबअर्बन रेलवे स्टेशनों पर संगीत कार्यक्रम के माध्यम से एकत्रित AED को स्थापित करना शुरू किया जिनमें से कुछ पर प्रति दिन 10 लाख से अधिक लोगों की भीड़ देखी जाती है; लगभग 20 स्थापित की जा चुकी हैं और भी होने वाली है। कर्मचारियों और आरपीएफ कर्मियों को सीपीआर देने और AED का इस्तेमाल करने के लिए प्रशिक्षित किया गया है। इस अभ्यास की वजह से हाल ही में अगस्त के अंत में मरीन लाइन्स रेलवे स्टेशन पर बेहोश हुए एक 41 वर्षीय यात्री को ड्यूटी कर रहे एक स्टेशन अधीक्षक ने सीपीआर देकर और नव-स्थापित AED का इस्तेमाल करके बचाया। स्थानीय अखबार में छपे उद्धरण से, हाल ही में रोटरी क्लब बॉम्बे एयरपोर्ट द्वारा AED के संचालन पर आयोजित प्रशिक्षण अभ्यास के माध्यम से मैं एक जीवन को बचा पाया।

इस दौरान सीपीआर प्रशिक्षण के साथ-साथ हृदय स्वास्थ्य संबंधी शिक्षा स्कूलों और पार्कों में जारी रही बाद में ''वॉक विद द डॉक'' नामक एक कार्यक्रम आयोजित किया गया जिसमें शहर के पांच हृदय रोग विशेषज्ञों की भागीदारी के साथ सात पार्कों में 14 रोटरी क्लबों ने भाग लिया।

आरसीबीए ने अपने पांच सदस्यों को प्रमाणित महार्ट मार्शलफ के रूप में प्रशिक्षित किया जो कहीं भी, कभी भी जीवन बचा सकते हैं। सीपीआर के माध्यम से जीवन बचाने के प्रतीक के रूप में एक सुंदर कला संरचना को बांद्रा बैंडस्टैंड प्रोमेनेड पर स्थापित किया गया। इसमें सार्वजनिक शिक्षा के लिए AED मशीनों के उपयोग और पुनः होश में लाने वाले चरणों को दर्शाने के लिए साइनबोर्ड भी हैं।

*एक इंटरवेंशनल कार्डियोलॉजिस्ट और रोटरी क्लब बॉम्बे एयरपोर्ट, रो ई मंडल 3141 के आईपीपी हैं।*

# रोटरी संस्थान (भारत) को मिला बेस्ट सी एस आर पार्टनर अवार्ड

**टीम रोटरी न्यूज़**

*बाएं से: पर्यावरणविद् पीपल बाबा, प्राकृतिक खेती विशेषज्ञ सुभाष पालेकर, टीआरएफ प्रमुख संजय परमार और रो ई दक्षिण एशिया कार्यालय से वरिष्ठ कार्यक्रम सहयोगी (सीएसआर) भावना वर्मा, नेस्ट मैन ऑफ इंडिया राजेश खत्री और सीएसआर स्टोरीटेलिंग दिग्गज पवन कौशिक।*

रोटरी संस्थान (भारत) को 22 अगस्त को नई दिल्ली में आयोजित 14वें इंडिया सी एस आर अवार्ड्स में 'सर्वश्रेष्ठ सी एस आर कार्यान्वयन भागीदार (वैश्विक संगठन) पुरस्कार' से सम्मानित किया गया।

रोटरी संस्थान (भारत) के अध्यक्ष और पीआरआईडी कमल संघवी ने खुशी व्यक्त करते हुए कहा, ''यह सम्मान रोटरी संस्थान (भारत) के लिए गर्व का क्षण है और देश भर में रोटरी क्लबों और मंडलों द्वारा किए गए अथक प्रयासों का प्रतिबिंब है। प्रभावशाली सी एस आर परियोजनाओं को करने के उनके समर्पण ने हमें इस उपलब्धि तक पहुंचाया है। मैं सभी रोटेरियनों को इस सार्थक कार्य को जारी रखने के लिए प्रोत्साहित करता हूं, क्योंकि भारत में सी एस आर वृद्धि की अपार संभावनाएं हैं। साथ मिलकर, हम नई ऊंचाइयों को छू सकते हैं और स्थायी परिवर्तन करने की रोटरी की क्षमता को और मजबूत कर सकते हैं।''

2016 से, रोटरी संस्थान भारत मजबूत कॉर्पोरेट संबंधों को बढ़ावा देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है। अकेले पिछले तीन वर्षों में, संगठन ने परियोजनाओं की संख्या में 81 प्रतिशत की प्रभावशाली वृद्धि देखी है, पूरे भारत में 300 से अधिक कॉर्पोरेट्स के साथ सहयोग किया है, और 21 मिलियन डॉलर (31 मार्च, 2024 तक) की 390 से ज्यादा पहलों का समर्थन किया है।

इंडिया सी एस आर नेटवर्क द्वारा 2011 में शुरू किए गए इंडिया सी एस आर अवार्ड्स उत्कृष्ट परियोजनाओं को पुरस्कृत करते हैं जो उनके नवाचार, दीर्घकालिकता और बढ़ा करने की क्षमता के साथ सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करते है।■

*रोटरी क्लब पुणे सेंट्रल द्वारा संचालित कचरा वैन।*

Rotary PEOPLE OF ACTION

# रोटरी क्लब पुणे सेंट्रल ने जुटाए 45 मिनट में ₹1.2 करोड़

**जयश्री**

*व्हीलचेयर वितरण समारोह में क्लब के पूर्व अध्यक्ष उदय धर्माधिकारी (दाएं) और अजय चिटनिस।*

केवल 45 मिनट में, रोटरी क्लब पुणे सेंट्रल, रो ई मंडल 3131, ने अपने वार्षिक 'स्पिरिट ऑफ गिविंग' कार्यक्रम के दौरान अपने 118 सदस्यों से ₹1.2 करोड़ की एक प्रभावशाली प्रतिबद्धता प्राप्त की। यह अनूठा धन संचयन कार्यक्रम, जो इस 40 वर्षीय क्लब का नियमित कार्यक्रम बन चुका है, क्लब की विभिन्न सेवा परियोजनाओं का समर्थन करने के लिए हर साल धन एकत्रित करता है।

क्लब के पूर्व अध्यक्ष उदय धर्माधिकारी कहते हैं, ''पारंपरिक धन संचयन के तरीकों के विपरीत, यह कार्यक्रम हमारे सदस्यों को एक ऐसे कारण से गहराई से जुड़ने की अनुमति देता है जो उनके उद्देश्यों के साथ मेल खाते है, जिससे वित्तीय सहायता और व्यक्तिगत भागीदारी दोनों को प्रोत्साहन मिलता है।''

हर साल अगस्त में आयोजित किया जाने वाला यह कार्यक्रम एक नियमित क्लब बैठक के साथ शुरू होता है है जिसमें क्लब अध्यक्ष रोटरी वर्ष के लिए प्रस्तावित सेवा परियोजनाओं को प्रस्तुत करते है। सदस्य तब उन परियोजनाओं में योगदान देने की प्रतिज्ञा करते हैं जो उन्हें सबसे अधिक प्रेरित करती हैं। वह समझाते हैं, ''हर सदस्य जो कुछ भी दे सकता है देता है, चाहे वह ₹10,000 हो या ₹20 लाख हो, और परियोजना के निष्पादन में सीधे शामिल होता है। उल्लेखनीय है कि इस कार्यक्रम में ₹40-45 लाख का सर्वाधिक योगदान लगातार हमारे पूर्व अध्यक्ष मधुसूदन राठी की ओर से दिया जा रहा है, जिन्होंने 1998-99 में अपने कार्यकाल के दौरान इस पहल की शुरुआत की थी।''

जब भी कोई परियोजना निष्पादन के लिए तैयार होती है, तो क्लब अपने सदस्यों को सूचित करता है, और योगदान मिलना

शुरू हो जाता है। ''यह सिर्फ एक धन संचयन अभ्यास नहीं है; यह सामूहिक दान की भावना को जागृत करता है, जहां हर योगदान, बड़ा या छोटा, जरूरतमंद लोगों के जीवन में एक ठोस अंतर लाने की दिशा में एक कदम होता है,'' धर्माधिकारी कहते हैं।

जुटाए गए धन से क्लब ने मोतियाबिंद एवं जन्मजात हृदय सर्जरियाँ, स्कूलों में ई-लर्निंग तंत्र की स्थापना, चेक डैम का निर्माण और वनीकरण प्रयासों जैसी प्रभावशाली परियोजनाएं शुरू की है। वह आगे कहते है, ''हमारे सदस्यों राठी, नितिन देसाई और शोना नाग ने सूर्य सह्याद्री अस्पताल में 7 करोड़ की लागत वाले विकिरण केंद्र की स्थापना के लिए सर्वाधिक योगदान दिया। पिछले कुछ वर्षों में, क्लब ने मुलशी तालुक के गांवों में एम्बुलेंस और स्कूल बसें, येरवदा जेल के कैदियों के लिए चश्मे और शारीरिक रूप से विकलांगों के लिए व्हीलचेयर प्रदान की हैं। इस वर्ष की परियोजनाएं कैंसर देखभाल, जल, पर्यावरण, नेत्र देखभाल और हृदय रोग पर केंद्रित हैं।''

2017 के बाद से, पुणे के पास मुलशी तालुक में गोनवाड़ी गांव साफ दिखाई देता है, और ऐसा एक कचरा वैन की वजह से संभव हुआ है जो 3,000 घरों और 14 रेस्टोरेंट एवं भोजनालयों के दरवाजे पर जाती है, कचरे को अलग करके इकट्ठा करती है और गांव में एक केंद्रीकृत कचरा डिपो में इसका निपटान करती है। राठी द्वारा प्रायोजित वाहन का संचालन और रखरखाव क्लब द्वारा किया जाता है। ''हमने इस गांव को गोद लिया है और कई वर्षों से यहां आवश्यक सेवाएं प्रदान कर रहे हैं,'' धर्माधिकारी कहते हैं।

क्लब ने हाल ही में मिस्टर आरसीपीसी की मेजबानी की, जो सदस्यों के बीच सौहार्द को मजबूत करने के लिए डिज़ाइन किया गया एक कार्यक्रम है। सदस्यों में हर पीढ़ी के लोग शामिल है, सबसे कम उम्र के सदस्य 38 साल के है, वहीं 86 साल के राठी सबसे उम्रदराज है। रोटरी एन्स कार्य्रकम की जज थी। शशि तलवार (84) ने खिताब जीता और कार्यक्रम ने क्लब में तीन नए सदस्यों को आकर्षित किया।■

# रो ई मंडल 3090 में इंटरेक्ट की वृद्धि

**माणिक राज सिंगला**

2021 से 2024 के बीच रो ई मंडल 3090 में इंटरेक्ट क्लबों की संख्या 7 से बढ़कर 382 हो गई। इस वृद्धि का श्रेय 125 रोटरी क्लबों के अमूल्य समर्थन को जाता है, जिससे मंडल 3090 भारत में तीसरे और दक्षिण एशिया में चौथे स्थान पर पहुंच गया। मैंने 1 जुलाई 2021 को इंटरेक्ट चेयरमैन के रूप में पदभार संभाला और जून 2024 तक इस भूमिका में कार्य किया।

हमने स्कूल अधिकारियों को समझाया कि जहां स्कूल छात्रों के आईक्यू (इंटेलिजेंस कोशेंट) को बढ़ाने पर काम करते हैं, वहीं रोटरी उनके ईक्यू (इमोशनल कोशेंट), एसक्यू (सोशल कोशेंट) और एक्यू (एडवर्सिटी कोशेंट) को विकसित करने का मंच देता है, जिससे वे भविष्य के नेता बन सकें।

## इंटरेक्ट क्लब्स का महत्व

हर साल इंटरेक्ट क्लबों को कम से कम दो सामुदायिक सेवा परियोजनाएं करनी होती हैं, जिनमें से एक अंतरराष्ट्रीय समझ और सद्भावना को बढ़ावा देती है। इन प्रयासों से छात्र नेतृत्व कौशल, व्यक्तिगत जिम्मेदारी, और अंतरराष्ट्रीय संबंधों की अहमियत को समझते हैं। वर्तमान में 109 देशों में 14,000 से अधिक इंटरेक्ट क्लब हैं, जिनमें 3,40,000 से अधिक युवा जुड़े हुए हैं।

हमने सरकारी, अर्ध सरकारी, सहायता प्राप्त और निजी स्कूलों में क्लब स्थापित किए। अच्छे इंटरेक्टर्स आगे चलकर रोटेरियन बनते हैं। विभिन्न प्रतियोगिताओं और आरवाईएलए जैसे कार्यक्रमों के माध्यम से छात्रों को प्रोत्साहित किया गया।

## चुनौतियाँ

इन तीन वर्षों के दौरान, कुछ प्रमुख चुनौतियों का सामना करना पड़ा:

- स्कूलों और संस्थानों में इंटरेक्ट के बारे में जागरूकता की कमी।
- क्लबों की संख्या बढ़ाने पर अधिक ध्यान और मौजूदा क्लबों की गुणवत्ता पर कम ध्यान।
- हर साल नई टीम के आने से कार्यक्रमों में निरंतरता का अभाव।
- नए महानिदेशक क्लबों की स्थापना पर ज्यादा ध्यान देते हैं, जबकि मौजूदा क्लबों को पोषित नहीं किया जाता।

## आगे का रास्ता

इंटरेक्टर्स को नेतृत्व कौशल विकसित करने के पर्याप्त अवसर दिए जाने चाहिए। रोटेरियन को स्कूलों को इंटरेक्ट के महत्व के बारे में जागरूक करना चाहिए ताकि छात्रों को सही दिशा में बढ़ाया जा सके।

*लेखक रोटरी क्लब पटियाला मिडटाऊन, रो ई मंडल 3090 के सदस्य हैं।*

# 4,000 महिलाओं के लिए मोबाइल कैंसर सेवा

वी मुत्तुकुमारन

खेतों में काम करने वाली विमला (49) अपने कैंसर से तब तक अनजान थी जब तक उसने रोटरी क्लब मेट्टुपालयम, रो ई मंडल 3203 द्वारा संचालित मोबाइल कैंसर जांच इकाई में जाकर अपनी जांच नहीं करवाई। मैमोग्राफी बस तमिलनाडु के कोयंबटूर के पास उनके पड़ोसी गांव में वयस्क महिलाओं में स्तन एवं सर्विकल कैंसर की जांच करने के लिए आई थी। मुझमें कोई लक्षण नहीं थे इसलिए मुझे अपने निजी अंगों में इस तरह की चिकित्सा प्रक्रिया करवाने की जरूरत महसूस नहीं हुई। लेकिन रोटेरियनों द्वारा इस विषय पर जागरूकता अभियान चलाए जाने के बाद मैंने इस नैदानिक बस के अंदर अपनी जांच कराई। मुझे यह जानकर झटका लगा कि मुझे शुरुआती चरण का कैंसर था। इसके बाद कोयंबटूर के एक अस्पताल में इसे हटाने के लिए उनकी एक मामूली सर्जरी की गई। यही हाल रानी (58) का भी था जो विमला के साथ इस रोटरी शिविर में आई थीं।

*पीआरआईपी शेखर मेहता, इरोड (तमिलनाडु) के पेरुंदुरई तालुका में प्रोजेक्ट हील शिविर में, साथ में (बाएं से) पीडीजी ए कार्तिकेयन और डॉ डी विजयगिरी, पूर्व अध्यक्ष, रोटरी क्लब मेट्टुपालयम और प्रोजेक्ट हील ट्रस्ट के सचिव।*

प्रोजेक्ट HEAL - हाई अवेर्नेस (उच्च जागरूकता), अर्ली डिटेक्शन (शुरुआती पहचान), एफोरडेबल ट्रीटमेंट (किफायती उपचार) और लो मॉर्टलिटी (निम्न मृत्यु दर) - ने अब तक 100 से अधिक मोबाइल कैंसर जांच शिविर आयोजित किए हैं जिससे 4,000 वयस्क महिलाएं (6,000 से अधिक जाँचों के माध्यम से) लाभान्वित हुई। जिन लोगों की जांच की गई उनमें से 500 को आगे के परीक्षण, जांच और मूल्यांकन के लिए कोवई मेडिकल सेंटर एंड हॉस्पिटल (केएमसीएच) में भेजा गया जो ग्रामीण महिलाओं की कैंसर की जांच करने की इस विशाल पहल में हमारे साझेदार हैं, बाल विशेषज्ञ-सह-लेप्रोस्कोपिक सर्जन, डॉ डी विजयगिरि कहते हैं जिन्होंने क्लब अध्यक्ष (2019-20) के रूप में अपने कार्यकाल के दौरान कैंसर का पता लगाने हेतु शिविरों के आयोजन की योजना बनाई। केएमसीएच में परीक्षणों के दौरान 40 महिलाओं में प्रारंभिक चरण का कैंसर पाया गया, और अस्पताल में उन सभी की या तो सर्जरी की गई या अनुवर्ती उपचार प्रदान किया गया, वह कहते हैं।

### प्रमुख बाधाएं

मोबाइल कैंसर सेवा के रास्ते में आने वाली शुरुआती बाधाओं को याद करते हुए प्रोजेक्ट HEAL ट्रस्ट के मुख्य परिचालन अधिकारी सुरेश अनंतकृष्णन

कहते हैं, हमने दिसंबर 2019 में इस ट्रस्ट का गठन किया और फरवरी 2020 में सीमेंस, जर्मनी से एक डिजिटल मैमोग्राफी इकाई (₹1.15 करोड़) का ऑर्डर किया। लेकिन कोविड आ गया और इस मशीन के शिपमेंट में देरी हो गई। हमें अक्टूबर 2020 में यह इकाई प्राप्त हुई मगर फिर एक अनुकूलित बस में इसकी स्थापना भी महामारी के चलते अवरुद्ध हो गई। पहला HEAL शिविर अप्रैल 2021 में आयोजित किया गया इसके बाद उसी महीने में दो और कैंसर जाँचें की गई, जिसके बाद हमने कोविड के चरम स्तर की वजह से छह महीने के लिए इस परियोजना को अस्थायी रूप से बंद कर दिया।

हालांकि, 2023-24 में इस मोबाइल कैंसर जांच में तेजी आई। इस अवधि में हमने कोयंबटूर के ग्रामीण इलाकों में महिलाओं को कवर करते हुए 50 से अधिक HEAL शिविर लगाए, अनंतकृष्णन कहते हैं। अब इस नौ वर्षीय वैश्विक अनुदान परियोजना को 2030 तक बढ़ा दिया गया है और हम औसतन 5-8 शिविर आयोजित करते हैं जिससे 300 लाभार्थियों तक पहुंचकर स्तन (मैमोग्राम) और सर्विकल (पैप स्मीयर परीक्षण) कैंसर दोनों के लिए 600 जाँचें की जाती है।

इस मोबाइल क्लिनिक को केएमसीएच में खड़ा किया जाता है और अस्पताल के दो डॉक्टरों और चार तकनीशियनों की छह सदस्यीय टीम शिविरों के दौरान महिलाओं का परीक्षण करती है जो ज्यादातर कोयंबटूर और मेट्टुपलायम के ग्रामीण इलाकों में आयोजित किए जा रहे हैं जिससे रो ई मंडल 3201 और 3203 दोनों कवर हो रहे हैं। यह अत्याधुनिक वाहन अपने मूल अस्पताल के 100 किमी के दायरे में स्थित गांवों को कवर करेगा और लगभग दो घंटे के समय में वहाँ पर पहुंच सकता है। प्रोजेक्ट क्ए-ङ के लिए एक स्थान निर्धारित करने के पहले हम स्थानीय रोटरी क्लब और उस क्षेत्र के सक्रिय गैर सरकारी संगठनों से वहाँ के कारखानों, मिलों, पंचायत, सामुदायिक हॉल, स्कूलों और गांव के स्वयं सहायता समूहों में जागरूकता शिविर आयोजित करने के लिए कहते हैं ताकि महिलाओं को स्वयं की जांच करवाने की आवश्यकता पर जागरूक किया जा सके, सीओओ समझाते है।

लेकिन मुख्य चुनौती यह है कि, जागरूकता सत्रों में भाग लेने वालों में से केवल 50 प्रतिशत ही कैंसर जांच शिविर में आने के लिए सहमत होते हैं। हमें ग्रामीण महिलाओं को स्वयं की जांच कराने हेतु प्रेरित करना होगा क्योंकि उन्हें अपने निजी अंगों की जांच कराने में अजीब लगता है या शर्मिंदगी महसूस होती हैं, डॉक्टर विजयगिरी कहते है। कभी-कभी कई महिलाएं अंतिम समय में हिचकिचाहट या सामाजिक दबाव के चलते पीछे हट जाती हैं। HEAL कैंप में जांच की गई महिलाओं में से लगभग 10 प्रतिशत को केएमसीएच में आगे के परीक्षण करवाने के लिए कहा जाता है क्योंकि हो सकता है स्कैन की गई छवि स्पष्ट न हो या फिर उनमें कैंसर के लक्षण हो। यदि उनकी मैमोग्राम जांच होती है, तो उनका अल्ट्रासाउंड परीक्षण या फिर बायोप्सी की जाती है और यदि उनकी पैप स्मीयर जांच होती है तो रोगी को आगे कोल्पोस्कोपी या इससे संबंधित बायोप्सी करवानी पड़ती है। यदि अनुवर्ती परीक्षण प्रारंभिक चरण के कैंसर की ओर इशारा करते हैं तो रोगियों की नि:शुल्क सर्जरी की जाती है, लेकिन गैर-घातक ट्यूमर, सिस्ट या संक्रामक लक्षणों के लिए अस्पताल में सामान्य उपचार भी किया जाता है, अनंतकृष्णन बताते हैं।

*रोटरी क्लब तिरुपुर भारती की चार्टर अध्यक्ष एस राजलक्ष्मी मेट्टुपलायम के एस जी के अस्पताल में 100वें शिविर में महिला लाभार्थियों को प्रमाण पत्र सौंपती हुई। साथ में (बाएं से) डॉ विजयगिरी, परियोजना समन्वयक के पी नागेश्वरन और प्रोजेक्ट हील ट्रस्ट के सीओओ सुरेश अनंतकृष्णन भी चित्र में दिखाई दे रहे हैं।*

## प्रारंभिक कार्य

दिसंबर 2018 में प्री-PETS के दौरान तत्कालीन डीजीई ए कार्तिकियन ने मरोटरी विजन फॉर पब्लिक मिशनफपर बात की और 'एक प्रभावशाली परियोजना' के लिए सुझाव मांगे ताकि बड़ी संख्या में लोगों को लाभ मिल सकें। फिर मैंने प्रोजेक्ट HEAL के माध्यम से उन ग्रामीण महिलाओं को घर बैठे कैंसर की जांच प्रदान करने का विचार रखा जिनके पास आधुनिक स्वास्थ्य सेवा तक पहुंच नहीं है या जो चिकित्सीय देखभाल प्राप्त करने के लिए शहरों की यात्रा करने में असमर्थ हैं, विजयगिरि याद करते हैं।

पीडीजी कार्तिकियन ने मुस्कुराते हुए कहा, ''मुझे यह जानकर खुशी हो रही है कि 40 महिलाओं ने कैंसर की सर्जरी या इलाज कराया है और अब वे अपने परिवारों के साथ खुशहाल जीवन बिता रही हैं।''

₹3.3 करोड़ की बजट परियोजना लागत में से डीडीएफ (20,000 डॉलर), कार्तिकियन (15,000 डॉलर), एन्सी एरोमैटिक्स (33,800 डॉलर) से सीएसआर निधि, क्लब सदस्यों (71,000 डॉलर) और टीआरएफ के मिलान अनुदान (82,000 डॉलर) प्रमुख योगदानकर्ता हैं। रोटरी क्लब जुआरेज़ कम्पेस्टर, रो ई मंडल 4110, मेक्सिको वैश्विक साझेदार है। इसके अलावा 100 से अधिक व्यक्तिगत और कॉर्पोरेट दानदाता और रो ई मंडल 3203 के 23 रोटरी क्लबों के 50 रोटेरियनों ने मिलकर इस परियोजना को प्रायोजित किया। प्रोजेक्ट टीम ने धन संचयन समारोह की एक श्रृंखला आयोजित की और कैंसर सेवा शिविर के निधियन के लिए क्राउडफंडिंग पोर्टल लॉन्च किए और इस तरह केवल चार महीनों में ही निधियन पूरा हो गया।■

# आपके गवर्नर्स से मिलिए

**किरण ज़ेहरा**

**नीरव निमेष अग्रवाल**
रियल एस्टेट
रोटरी क्लब मथुरा सेंट्रल, रो ई मंडल 3011

## रोटरेक्टर से रोटेरियन बनने की चुनौती

शुरूआत में नीरव निमेश अग्रवाल रोटरी में शामिल होने के इच्छुक नहीं थे और पहले तीन वर्षों तक निष्क्रिय ही रहे मगर बाद में उन्हें रोटरी का महत्वपूर्ण प्रभाव तब समझ आया जब उनके क्लब ने मथुरा के जानकी देवी स्कूल में शौचालय का निर्माण किया और कक्षाओं का नवीनीकरण करके बिजली भी प्रदान की जिससे इस स्कूल में छात्राओं की संख्या 150 से बढ़कर 600 हो गई।

''हालिया परिवर्तनों के माध्यम से रोटरेक्टरों को रोटरी फाउंडेशन तक अधिक पहुंच प्रदान करना, उनके लिए वार्षिक शुल्क में कमी और आयु सीमा की समाप्ति से सवाल यह उठता है कि रोटरेक्टर रोटरी क्लब में शामिल होने के लिए अपने क्लबों को छोड़ने का विकल्प क्यों चुनेंगे। इस परिवर्तन के मुद्दे को संबोधित करना जरूरी है,'' वह कहते हैं।

डीईआई पर वह कहते हैं, समावेशन और समानता पर ध्यान केंद्रित करना महत्वपूर्ण है। ''महिलाओं का स्वागत करने में उन क्लबों की अरुचि को संबोधित करने की आवश्यकता है जहाँ पर सदस्यों की औसत आयु 60 वर्ष से अधिक है। हो सकता है इनमें से कुछ क्लब पृथक महिला क्लब चाहते हो।'' उन्होंने यह भी कहा कि कुछ महिलाएं अखिल-महिला क्लबों को पसंद करती हैं, ''उन्हें लिंग निरपेक्ष क्लबों में शामिल होने के लिए प्रोत्साहित करना महत्वपूर्ण है।''

अग्रवाल संभावित सदस्यों को परियोजनाओं में भाग लेने, उनके साथ पूर्व के कार्यक्रमों या पहलों पर चर्चा करने और परियोजनाओं का एक संग्रह बनाकर नए सदस्यों के सामने प्रस्तुत करने का सुझाव देते हैं ताकि उन्हें रोटेरियन बनने के लिए प्रेरित किया जा सके।

उनके मंडल का टीआरएफ लक्ष्य 555,000 डॉलर का है।

**सुरेश बाबू**

चिकित्सा अभ्यास

रोटरी क्लब ऊटकामुंड, रो ई मंडल 3203

**मोहन पाराशर**

ऑडिटिंग

रोटरी क्लब जालोर, रो ई मंडल 3055

**देव आनंद**

ऑडिटिंग

रोटरी क्लब उडुपी मिडटाउन, रो ई मंडल 3182

## वार्षिक निधि चुनौती के विजेता

1999 से एक रोटेरियन रहे सुरेश बाबू ने रोटरी में अपने समय का पूरा आनंद लिया। वह वर्तमान में अपने मंडल में 97 क्लबों की देखरेख करते हैं और इस संख्या को बढ़ाकर 105 करने की योजना बना रहे हैं। उनके मंडल ने पहले ही 100 डॉलर प्रति क्लब वार्षिक निधि चुनौती को जीत लिया है और अब वह अर्ली अचीवर अवार्ड को प्राप्त करने के लिए तैयार है।

सुरेश बाबू नए सदस्यों में रोटरी की गहन समझ पैदा करने के महत्व पर जोर देते हैं। ''जो रोटेरियन रोटरी के सार को समझते हैं वो इसके लिए अधिक प्रतिबद्ध रहते है और दूसरों के लिए भी रोटरी अनुभव को बेहतर बना सकते है,'' वह कहते हैं।

वह नए सदस्यों के लिए अभिविन्यास कार्यक्रमों का समर्थन करते हैं। उनका सुझाव है कि जिन रोटेरियनों को रोटरी सदस्य रहते हुए 3 से 5 साल हो चुके है, उन्हें भी अपनी समझ और जुड़ाव को और गहरा करने के लिए इन कार्यक्रमों में भाग लेना चाहिए।

उनके मंडल में केवल 7.3 प्रतिशत महिला सदस्यों के साथ महिला प्रतिनिधित्व में वृद्धि करने की स्पष्ट आवश्यकता झलकती है। ''हालांकि हमने डीईआई में विकलांगों एवं ट्रांसजेंडर सदस्यों को शामिल करके प्रगति की है पर अभी भी बहुत महत्वपूर्ण काम बाकी है,'' वह कहते हैं।

उनके मंडल का लक्ष्य टीआरएफ में 450,000 डॉलर योगदान करने का है।

## आरसीसी पर ध्यान

उनकी सबसे प्रिय रोटरी स्मृति में 2014 में मैत्री विनिमय कार्यक्रम में भाग लेना है जो मोहन पाराशर को साउथ अलबामा, रो ई मंडल 6880, यूएसए ले गई। उनके लिए यह अनुभव जीवन परिवर्तक है और वह हर रोटेरियन को इसमें भाग लेने हेतु प्रोत्साहित करते है।

उनका प्रमुख ध्यान अपने मंडल में रोटरी कम्युनिटी कॉर्प्स (आरसीसी) को बढ़ावा देने पर है। ''ग्रामीण क्षेत्रों से जुड़ने का सबसे अच्छा तरीका आरसीसी है क्योंकि आरसीसी सदस्य उन्हीं गांवों से होते है जिनकी वे सेवा करते हैं, वो अपने समुदायों की जरूरतों को बहुत अच्छे से समझते हैं और उन जरूरतों को पूरा करने की दिशा में सही ढंग से काम कर सकते हैं।''

पाराशर अपने अध्यक्षों से सदस्य संख्या से अधिक उनकी गुणवत्ता को प्राथमिकता देने का आग्रह करते है। वह रोटरी की प्रभावशाली परियोजनाओं विशेष रूप से एंड पोलियो नाउ अभियान के बारे में नए सदस्यों को शिक्षित करने के महत्व पर जोर देते हैं। वह अध्यक्षों को ''अपने क्लब एवं मंडल से परे देखने और मंडल के बाहर की परियोजनाओं से सीखने के लिए प्रोत्साहित करते है।''

उन्हें गर्व है कि उनका मंडल डीईआई मंत्र को अपना रहा है। हमारे पास नेत्रहीन सदस्यों के लिए एक क्लब है और उनमें एवं किसी अन्य रोटेरियन के बीच कोई अंतर नहीं है। उन्हें मंडल की महिला सदस्यता दर पर भी गर्व है।

इस वर्ष के लिए मंडल का टीआरएफ लक्ष्य 200,000 डॉलर का है। पाराशर 1996 में रोटरी से जुड़े थे।

## सीएसआर जागरूकता, समय की मांग

वह मजाक में कहते है कि कभी-कभी उनकी पत्नी इस बात पर ईर्ष्या महसूस करती है कि वह रोटरी को उनसे ज्यादा समय देते है। देव आनंद रोटरी की सार्वजनिक छवि को बढ़ाने के लिए विभिन्न वर्गीकरणों, ''विशेष रूप से विभिन्न पेशेवर क्षेत्रों के सदस्यों के महत्व पर जोर देते हैं।''

सदस्य प्रतिरोधन के लिए वह अभिविन्यास कार्यक्रमों का समर्थन करते है। डीईआई के बारे में आनंद अपने मंडल की विविधता पर प्रकाश डालते हैं साथ ही महिला सदस्यों के इतने कम प्रतिशत को लेकर चिंतित हैं। वह रोटेरियनों की पत्नियों को रोटरी में शामिल होने हेतु प्रोत्साहित करके इसे 11 प्रतिशत से बढ़ाकर 33 प्रतिशत करना चाहते है।

आनंद अपने मंडल में सीएसआर परियोजनाओं की कमी महसूस करते हैं, जिसका कारण इस अवधारणा के बारे में सीमित जागरूकता होना है। उनका मानना है कि ''क्लब अध्यक्षों को कंपनियों से संपर्क करने और उनके साथ समझौते की बारीकियों को समझने हेतु प्रशिक्षित किया जाना आवश्यक है।'' वह अपने मंडल में पॉल हैरिस सोसाइटी (पीएचएस) के 100 सदस्यों को शामिल करना चाहते है। उनके मंडल का टीआरएफ लक्ष्य 300,000 डॉलर है। वह 1988 से एक रोटेरियन हैं।

*एन कृष्णमूर्ति द्वारा रूपरेखा*

# मंडल गतिविधियाँ

### रोटरी क्लब पांडिचेरी लिगेसी
### रो ई मंडल 2981

एनसीआर कॉर्पोरेशन इंडिया में आयोजित एक रक्तदान शिविर में लगभग 125 यूनिट रक्त एकत्रित किया गया जिसे विल्लुपुरम के सरकारी अस्पताल को दान कर दिया गया।

### रोटरी क्लब गंधर्वकोट्टई
### रो ई मंडल 3000

नए रोटरी वर्ष की प्रथम परियोजना के रूप में शारीरिक रूप से विकलांग लोगों को भोजन के पैकेट वितरित किए गए।

### रोटरी क्लब विशाखापट्टनम
### रो ई मंडल 3020

डीजी एम वेंकटेश्वर राव ने शंभुवानीपालेम में क्लब के समर्थन से आदिवासी महिलाओं द्वारा स्थापित किराने की दुकान का दौरा किया।

### रोटरी क्लब नागपुर साउथ ईस्ट
### रो ई मंडल 3030

जीवन आधार बहुउद्देशीय संस्था और शालिनीताई मेघे अस्पताल के साथ साझेदारी में दो गतिशील अस्पतालों को शुरू किया गया।

### रोटरी क्लब वाधवान मेट्रो
### रो ई मंडल 3060

30 गर्भवती महिलाओं को पौष्टिक भोजन, आयरन और कैल्शियम की दवाइयाँ वितरित की गईं।

RID 3070

RID 3110

RID 3080

RID 3120

RID 3100

**रोटरी क्लब जम्मू एलीट**
**रो ई मंडल 3070**

जम्मू के आर एस पुरा तालुक में मूसा चाक के सरकारी मिडिल स्कूल में लगभग 50 पौधे लगाए गए।

**रोटरी क्लब अंबाला इंडस्ट्रियल एरिया**
**रो ई मंडल 3080**

अंबाला छावनी के बी डी सीनियर सेकेंडरी स्कूल में नौ छात्रों ने वक्तृत्व कला प्रतियोगिता में भाग लिया।

**रोटरी क्लब मुरादाबाद मिड टाउन**
**रो ई मंडल 3100**

सी एल गुप्ता आई इंस्टीट्यूट के साथ संयुक्त रूप से आयोजित एक तीन दिवसीय नेत्र जांच शिविर में 370 से अधिक बच्चों की जांच की गई।

**रोटरी क्लब कानपुर आर्यन्स**
**रो ई मंडल 3110**

विश्व पर्यावरण दिवस को चिह्नित करने के लिए न्यू एंजेल अस्पताल के साथ साझेदारी में ग्रीन बेल्ट क्षेत्र में 150 से अधिक फलदार पेड़ लगाए गए।

**रोटरी क्लब प्राइड मऊ**
**रो ई मंडल 3120**

क्लब अध्यक्ष जितेंद्र रखोलिया के नेतृत्व में रोटेरियनों ने बस स्टॉप और आजमगढ़ रेलवे स्टेशन के आसपास 50 रिक्शा चालकों को बरसातियाँ दीं।

# दिन-रात कहानियों के साथ

पुरानी और नई किताबों के संकलन में से अकस्मात कुछ पढ़कर हमें पता चलता है कि उनमें सभी के लिए कुछ न कुछ है।

**संध्या राव**

इस बार मेरी ऑनलाइन लाइब्रेरी से दो एकदम अलग किताबें निकली। पहली एक आश्चर्य के साथ किसी और की नहीं बल्कि लुईसा मेय अल्कोट की किताब थी। जी हाँ, आपने सही पढ़ा। वही लेखिका जिनकी अत्यंत लोकप्रिय किताबें, *लिटिल वुमन, लिटिल मेन* और *जोस बॉयज़* उनकी मृत्यु के सौ से अधिक वर्षों के बाद भी पाठकों को मंत्रमुग्ध करती है। (क्या ये किताबें अभी भी युवाओं की टीबीआर सूची में हैं? शायद।) यहाँ जिस किताब की बात की जा रही है उसका नाम है *ए लॉन्ग फैटल लव चेज़।* ऐसे शीर्षक से अधिक उत्तेजक और क्या हो सकता है! वो भी लुइसा मेय अल्कोट की कलम से?

ऐसा लगता है कि वह नियमित रूप से पॉटबॉयलर लिखा करती थी जिन्हें मैगज़ीन में धारावाहिक के रूप में प्रकाशित किया जाता था ताकि लोगों के घरों की आग जलती रहें। यह किताब लुइसा की मृत्यु के बहुत लंबे समय बाद 1995 में तब प्रकाशित हुई जब संपादक केंट बिकनेल ने इस हस्तलिपि को खोजकर उसे संवारा और प्रकाशित किया। 1866 में जब इसे लिखा गया था यह तभी प्रकाशित क्यों नहीं हुई वो भी बोस्टन के जेम्स आर इलियट नामक एक पल्प फिक्शन प्रकाशक के विशिष्ट अनुरोध पर? आखिरकार, उन्होंने पहले भी उनकी ऊर्जस्वी रोमांचक किताबें प्रकाशित की थी। लुइसा ने अपनी पत्रिका में दर्ज किया है कि यह इलियट के लिए भी बहुत लंबा और अत्यधिक सनसनीखेज था! उपन्यास के अंत में बिकनेल एक नोट में लिखते हैं कि उस समय के पाठक 'आधुनिक मुद्दों के बारे में पढ़कर भौंचक्के रह गए होंगे जिनसे यह उपन्यास भरा पड़ा है: एक महिला का स्वतंत्र एवं आज़ाद होने का अधिकार, महिला-महिला या महिला-पुरुष की घनिष्ठ मित्रता की उपचारात्मक शक्ति, अत्याचारपूर्ण संबंधों की मनोवैज्ञानिक गतिशीलता, पादरी का ब्रह्मचर्य, तलाक, द्विविवाह, आत्महत्या और हत्या...' *ए लॉन्ग फेटल लव चेज़* में यह सब कुछ है और इतनी अच्छी तरह से बयां किया गया है जिससे लेखिका के निपुण लेखन का पता चलता है। स्टीफन किंग *न्यू यॉर्क टाइम्स* में इस उपन्यास के बारे में लिखते है कि यह 'एक रोमांचक और पूरी तरह से आकर्षक कहानी है... और यह 19वीं सदी में देश की सबसे प्रभावशाली नारीवादी के रूप में अल्कोट की पुष्टि करता है। *पब्लिशर्स वीकली* की एक समीक्षा में कहा गया, 'यह रोमांचक और रहस्यमयी कहानी एक महिला के बारे में है जिसके पीछे उसका पूर्व प्रेमी, एक अथक पीछा करने वाला व्यक्ति पड़ा है, जो आज की सुर्खियों से प्रेरित लगता है। यह आकर्षक उपन्यास एक जटिल एवं दूरदर्शी लेखक की छवि को परिभाषित करता है।'

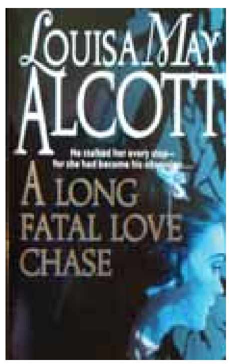


*बुकलेस इन बगदाद* शशि थरूर द्वारा लिखित निबंधों का एक संग्रह है जिसमें किताबो, लेखकों, समीक्षाओं, समीक्षकों, साहित्यिक उत्सवों और अभी बहुत कुछ के बारे चर्चा की गई है। शशि थरूर को हम सभी पाठक, लेखक, पूर्व राजनयिक और राजनेता के रूप में जानते हैं जो शब्दों के खेल में निपुण है। अन्य विषयों के बीच वह इस बात पर अफसोस जताते हैं कि रूसी लेखक अलेक्जेंडर पुश्किन जैसे प्रतिभाशाली व्यक्ति को अपने देश के बाहर बहुत कम जाना जाता है वहीं वह इस तथ्य से हैरान है कि आर के नारायण इतने प्रतिष्ठित है। जाहिर है, वह राष्ट्रीय धरोहर नारायण पर अपनी राय व्यक्त करने से कतराते नहीं हैं। वह हमें याद दिलाते है कि हम भारत में पी जी वोडहाउस को इतना पसंद क्यों करते है, औपनिवेशिक खुमारी पर धिक्कार है!

व्यक्तिगत रुचि की समीक्षा पर एक छोटा सा अंश है, जिस दौरान वह सांस्कृतिक विनियोग के विवादास्पद मुद्दे को उठाते है: अर्थात, कौन व्यक्ति उस संस्कृति का प्रतिनिधित्व कर सकता है या उसपर बोल सकता है या नहीं जिससे वह संबंधित नहीं है। साहित्यिक कृतियों में इस विषय पर काफी चर्चा होती है। मैं इस संदर्भ में पाठकों से इस पर विचार करने के अनुरोध के साथ एक छोटा सा अंश उद्धृत करूँगी: 'कुलमिलाकर साहित्य के बारे में पूर्ण रूप से यह कहा जा सकता है कि भले ही यह किसी विशिष्ट संस्कृति से उभर सकता है मगर इसे अन्य भाषाई

और सांस्कृतिक परंपराओं के पाठकों से भी जुड़ाव रखना चाहिए क्योंकि अच्छे लेखन में जो चीज़ स्थायी होती है वह संस्कृति विशिष्ट नहीं होती। हम हमेशा अन्य संस्कृतियों का साहित्य पढ़ते हैं और हम ऐसा इसलिए करते हैं क्योंकि वो साहित्य भले ही किसी ऐसे समाज से हो जिसे हम जानते हो या न जानते हो मगर वह मानवीय स्थिति के बारे में हमारी समझ को और गहरा एवं उजागर करने में सहायक होता है।'

यह हमें सीधे नादिया वासेफ के *क्रॉनिकल्स ऑफ ए काइरो बुकसेलर* पर ले जाता है जो चेन्नई में एक किताबों की दुकान के साथ मेरे स्वयं के जुड़ाव के कारण स्पष्ट रूप से समझ आता है। गुडबुक्स, जो विशेष रूप से बच्चों के लिए 2000 में स्थापित किया गया था और नादिया द्वारा जिक्र की गई कितनी बातें गुडबुक्स के उतार-चढ़ाव की याद दिलाती है। जब वह इस तथ्य का उल्लेख करती है कि अक्सर लोग किताबें उधार लेने के लिए आते थे न कि उन्हें खरीदने के लिए तो मुझे भी इसी तरह के अनुभव याद आते है। वास्तव में, हमारे सभी घरों में किताबों के लिए एक विशेष समर्पित कमरा हुआ करता था; यह जगह उन लोगों के लिए थी जो शांति से बैठकर पढ़ना चाहते थे। पूरे देश से ऐसी खबरें सुनने को मिलती हैं कि युवाओं के समूह पार्कों और अन्य सार्वजनिक स्थानों पर एक साथ बैठकर चुपचाप पढ़ाई करते है। गुडबुक्स भी अपने समय में मजेदार था मगर आर्थिक समस्याओं की वजह से टिक नहीं पाया। हालांकि, इसने युवाओं की एक पूरी पीढ़ी को पाला है, जो विभिन्न कार्यशालाओं और गतिविधियों में भाग लेने के साथ ही पढ़ाई में लिप्त रहते हुए सचमुच गुडबुक्स में ही बड़ी हुई है। हालांकि नादिया अब आगे बढ़ चुकी है मगर उनके द्वारा सह-स्थापित, दीवान बुकस्टोर अब भी जीवित है और धीरे-धीरे काहिरा में कई शाखाओं को शामिल करने के लिए इसका विस्तार हुआ है।

*क्रॉनिकल्स ऑफ़ ए काईरो बुकसेलर* कई लोगों के लिए दूसरे स्तर पर प्रतिध्वनित होगा, विशेष रूप से औपनिवेशिक संबंधों वाले लोगों के लिए। जब नादिया कहती हैं, 'विदेशी भाषा के स्कूलों में जाने वाले अनेक मिश्रवासियों की तरह ही हिंद (लेखिका की बहन) और मैंने अरबी के अलावा एक अन्य भाषा सीखी और पढ़ी। जटिल और दुर्गम शास्त्रीय अरबी ने हमें भाषाई रूप से अनाथ कर दिया; अंग्रेजी ने हमें अपनाया और हमने भी उसे खुशी-खुशी स्वीकार किया,' हम में से कई लोग सहमति जताते हुए अपना सिर हिलाएंगे। फिर, वह लिखती है, 'मैं एकजुटता और एकता के लक्षणों के साथ बड़ी हुई। मेरी मां कॉप्टिक थीं और मेरे पिता मुस्लिम। उन्होंने इतिहास को एक लंबे समय के रूप में वर्णित किया, अरबी, फ्रेंच और अंग्रेजी को स्वाभाविक रूप से प्रमुख भाषाओं के रूप में नहीं बल्कि सहस्राब्दियों तक फैले मिस्र की महान विजय गाथाओं की हालिया अभिव्यक्तियों के रूप में पढ़ाया। यह व्यक्तिगत नहीं था, सिर्फ औपनिवेशिक था। लेकिन हाल के दशकों में अन्यता की स्वीकृति और धार्मिक भिन्नताओं की सहिष्णुता फीकी पड़ गई है।' (यह किताब 2021 में प्रकाशित हुई थी।) कुछ परिचित लगता है?

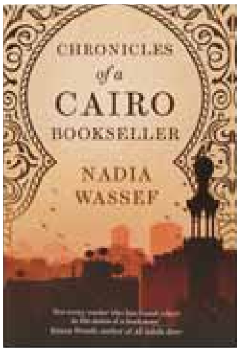


और *अरेबियन नाइट्स* से कौन परिचित नहीं है? यह कई पुस्तकालयों में प्रमुख रूप से पाई जाती है, बच्चों के हिसाब से इन कहानियों को हल्का-फुल्का बनाया गया है जबकी मूल कहानी अत्यंत उत्तेजक है। अरबी में इसे अल्फ लैला के रूप में जाना जाता है और इसकी कहानियों को फारसी, भारतीय, अरबी और ग्रीक लोककथाओं से लिया गया है। यह सर्वविदित है कि किसी शहरज़ादी ने मृत्यु से बचने के लिए एक राजा को ये कहानियाँ सुनाईं थी। नादिया इसके पूर्व की कहानी बयां करती है कि दो राजा, शहरयार और शाहज़मान थे, जिन्हें पता चला कि उन्हें उनकी रानियाँ धोखा दे रही है। शहरयार इतना उग्र हो गया कि उसने हर रात एक कुंवारी लड़की से शादी करने के बाद उसे अपमानित कर उसका सर कलम करके अपना प्रतिशोध लेने का फैसला किया। यह सिलसिला तब तक चलता रहा जब तक कि एक शहरज़ादी ने आकर उस राजा को हर रात एक कहानी सुनाना शुरू नहीं कर दिया और वह हर दिन अपनी कहानी को एक रहस्यमयी मोड़ पर छोड़ जाती थी ताकि आगे की कहानी को सुनने की जिज्ञासा में वो राजा उसे जिंदा रखने पर मज़बूर हो जाए। यह सिलसिला 1001 रातों तक चला जिसके अंत में उस राजा ने उसे माफ कर दिया और वे खुशी से साथ में रहने लगे।

एक पुरुष-प्रधान समाज में एक शक्तिशाली महिला होने की चुनौतियों से निपटने के लिए नादिया शहरज़ादी का अपना संस्करण प्रस्तुत करती है: 'मैंने इस समाज में पुरुषों पर काबू पाने का एक चतुराईपूर्ण सबक सीखा था: प्रशंसा करके प्रेरित करने से अधिक महत्वपूर्ण होता है किसी के मन में डर पैदा करना। समय के साथ मैंने इस हथियार का रणनीतिक तरीके से धीरे-धीरे इस्तेमाल करना सीखा। अपशब्द परमाणु हथियारों के शस्त्रागार की तरह होते है: जब हर कोई जानता है कि आपके पास यह हथियार है तो आपको उनका उपयोग करने की आवश्यकता नहीं होती।' जैसा कि एक विद्वान और नियमित ग्राहक ने टिप्पणी की: 'आपकी अलमारियों में बहुत शक्ति है। इसका उचित इस्तेमाल करें।'

हमारी अलमारियों में रखी किताबों में इतनी ताकत है कि अगर वो सही हाथों में रहें तो दुनिया बदल सकती है।

> *साहित्य की उत्पत्ति भले ही किसी खास संस्कृति से हुई हो, लेकिन उसे अलग-अलग भाषाई और सांस्कृतिक पृष्ठभूमि के पाठकों के साथ जुड़ना चाहिए। अच्छे लेखन में जो चीज टिकती है, वह किसी खास संस्कृति से बंधी नहीं होती।*

*स्तंभकार बच्चों की लेखिका और वरिष्ठ पत्रकार हैं।*

# एक परिपूर्ण रोटेरियन

एस आर मधु

24 मार्च, 2020 को पीडीजी रामकृष्ण राजा का निधन हो गया था। इससे ठीक एक महीने पहले उन्हें रोटरी क्लब मद्रास साउथ की हीरक जयंती पर रो ई मंडल 3230 द्वारा डॉयन ऑफ रोटरी पुरस्कार से सम्मानित किया गया। क्लब के सदस्य सदमे में थे - वे 60 वर्षों से उनके कुशल मार्गदर्शन और सलाह के इतने आदी थे कि उनसे उनका न होना बर्दाश्त ही नहीं हो पा रहा था। हालांकि वो साधारण कद-काठी के थे मगर उन्हें अक्सर रोटरी में उनके पद, उनके व्यापार और सामाजिक जीवन की वजह से उयरन्द मनिदन (एक ऊँची शख्सियत) के रूप में जाना जाता था। प्रत्येक रोटरी गवर्नर ने उन्हें उनके ज्ञान, परिपक्वता, निष्पक्षता और समर्पण के लिए एक आदर्श माना।

*द हिंदू* समूह के निदेशक और संगीत अकादमी के अध्यक्ष एन मुरली द्वारा 1 सितंबर को चेन्नई में *रामकृष्ण राजा, ए कम्प्लीट जेंटलमैन* शीर्षक से रोटेरियन आर वी राजन द्वारा लिखित एक छोटी सी जीवनी का विमोचन किया गया। पूर्व एडमैन राजन रोटरी क्लब मद्रास साउथ के पूर्व अध्यक्ष हैं और 45 वर्षों से अधिक समय से इसके सदस्य हैं। वह हर किसी की तरह रामकृष्ण राजा से बहुत प्रभावित थे।

उनकी किताब में राजा के रोटरी में शानदार 60 साल के करियर और संगीत अकादमी में 31 साल के कार्यकाल के साथ ही एक उद्यमी (उन्होंने एक सफल वायर मेश कंपनी चलाई), बिजनेस लीडर, दोस्त, परिवार के मुखिया और संरक्षक के रूप में उनकी अनेक भूमिकाओं का वर्णन किया गया है। ''वह रोटेरियनों के बीच एक राजा थे,'' पीडीजी एस कृष्णास्वामी कहते हैं।

राजा ने 1960 में 23 साल की उम्र में रोटरी क्लब मद्रास साउथ के चार्टर सचिव के रूप में अपनी सेवा दी; वह 1968-69 में अध्यक्ष, 1973-74 में मंडल सचिव और 1986-87 में रो ई मंडल 3230 के मंडल गवर्नर बने। गवर्नर के रूप में उन्होंने मंडल में रोटरी का प्रसिद्ध पोलियो प्लस अभियान और नशे के खिलाफ भी एक अभियान चलाया। वह 2005 से 2020 में अपने निधन तक संगीत अकादमी के कोषाध्यक्ष थे। ''मैंने कभी उनसे ज्यादा ईमानदार, विश्वसनीय और सच्चा इंसान नहीं देखा,'' एन मुरली कहते हैं।

राजा अपने संपर्क में आने वाले हर व्यक्ति को अपनी गर्मजोशी और विनम्रता से सराबोर कर देते थे। उनके चेहरे पर हमेशा मुस्कान बनी रहती थी और उनके पास लोगों के नाम व चेहरें याद रखने की अभूतपूर्व स्मृति थी। वो अक्सर दूसरों की मदद करने के लिए हद से गुजर जाते थे - नवीन पदस्थ रोटरी गवर्नरों को आशीर्वाद और समर्थन देने से लेकर हवाई अड्डों पर मेहमानों

**रामकृष्ण राजा, ए कम्पलीट मन**

लेखक : आर वी राजन
प्रकाशक : क्रिएटिव वर्कशॉप, चेन्नई
मूल्य : ₹ 300

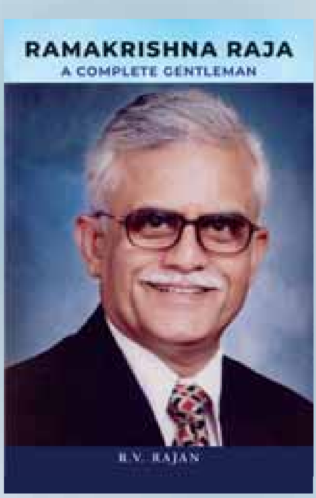

*हिंदू समूह के निदेशक एन मुरली, पीडीजी रामकृष्ण राजा को तमिलनाडु की पूर्व मुख्यमंत्री जे जयललिता से मिलवाते हुए।*

का अभिवादन करने, घर पर उनका स्वागत-सत्कार करने या अप्रत्याशित उपहार लाने और विचारशील भाव जताने तक वो कभी किसी चीज़ में पीछे नहीं रहें।

पूर्व रो ई अध्यक्ष कल्याण बेनर्जी ने कहा कि चेन्नई में वह हमेशा राजा के घर में रहे। ''एक बार रोटरी निदेशक बनने के मेरे असफल प्रयास के बाद राम मेरा हौसला बढ़ाने के लिए चेन्नई से मुंबई पहुंचे। उन्होंने जोर देकर यह बात कही कि ''रोटरी के माध्यम से वह जिन अविस्मरणीय लोगों से मिले उनमें से राजा सूची में सबसे ऊपर थे।''

पीआरआईपी के आर रवींद्रन ने कहा, ''मैं राम से अपने रोटरी सफ़र के बहुत पहले मिला था। बहुत जल्द ही मुझे यह एहसास हुआ कि वह बहुत ही बुद्धिमान, खुशनुमा और सजग व्यक्ति थे। मैं उनका बहुत बड़ा प्रशंसक था। पिछले कई रो ई अध्यक्षों ने उन्हें सर्वोच्च सम्मान दिया।'' पीआरआईडी पी टी प्रभाकर ने कहा कि राजा ''अपने कार्यकाल के दौरान हिम्मत, समर्थन और मार्गदर्शन के स्रोत थे। उनके ज्ञान और अनुभव से मुझे बहुत मदद मिली।''

पांच दशक से अधिक समय से राजा के मित्र, उद्योगपति सुरेश कृष्ण ने कहा, ''रामकृष्णन से मिलना मतलब उन्हें पसंद करना।'' उन्हें जानना मतलब उनका सम्मान एवं प्रशंसा करना। उद्योगपति और परोपकारी आर टी चारी ने याद किया कि राजा ने उन्हें रोटरी और संगीत अकादमी से परिचित कराया जहाँ चारी एक मूल्यवान सदस्य बन गए और एक अद्वितीय संगीत संग्रह स्थापित किया।

आर्किटेक्ट तारा मुरली याद करती हैं कि जब उनके पिता एम एस पट्टाभिरामन ने राजा के घर के झूले की सराहना की तो उन्होंने तुरंत उसे उपहार में दे दिया था!

जब राजा रोटरी के बारे में बात करते थे तो वह इसके प्रचारक, रूढ़िवादी या तार्किक नहीं होते थे। वह बस सरल और व्यावहारिक थे। उन्होंने पीआरआईडी ए एस वेंकटेश से कहा, अपने परिवार और अपने व्यवसाय को अपनी पहली प्राथमिकता दें। तभी आप रोटरी चुनौतियों से बेहतर तरीके से निपट पाएंगे। क्लब के सदस्य पीडीजी नटराजन नागोजी कहते हैं, ''मैंने उनकी तरह सोचने की कोशिश की। जब भी मेरे सामने कोई चुनौती होती तो मैं सोचता कि राजा होते तो वो क्या करते। मैंने उनसे शोभनीय और उद्देश्यपूर्ण जीवन जीना सीखा,'' लेखक, शोधकर्ता और पारिवारिक मित्र प्रेमा श्रीनिवासन कहती हैं। महान टेनिस खिलाड़ी रामनाथन कृष्णन, जो राजा के लोयोला के सहपाठी हैं, याद करते हैं कि सर्दियों में कड़ाके की एक सर्द रात में टोक्यो हवाई अड्डे पर राजा ने उनका स्वागत किया था। (कृष्णन वहाँ पर टेनिस के लिए गए थे और राजा व्यवसाय के लिए।) राजा ने कृष्णन को उनके जीवनसाथी ललिता के बारे में फैसला लेने में मदद की और कहा कि वह उनके टेनिस करियर में बहुत बड़ी समर्थक बनेंगी।

> **बहुत पहले ही मुझे एहसास हो गया था कि वे ज्ञान, प्रकाश और शिक्षा के धनी व्यक्ति थे। मैं उनका बहुत सम्मान करता था। कई पूर्व रो ई अध्यक्षों ने उनका बहुत सम्मान किया।**
>
> पीआरआईपी
> के आर रविन्द्रन

> **एक बार मेरे रोटरी निदेशक बनने के असफल प्रयास के बाद, राम मुझे खुश करने के लिए चेन्नई से मुंबई आए। रोटरी में जितने भी अविस्मरणीय लोग मिले हैं, उनमें से राजा सबसे ऊपर थे।**
>
> पीआरआईपी
> कल्याण बेनर्जी

राजा अपने परिवार के साथ कुछ समय बिताने और अपनी कुछ स्वास्थ्य समस्याओं से उबरने के लिए 2019 के अंत में अमेरिका में अपने बेटे रंगनाथ से मिलने गए। लेकिन उन्होंने अपने क्लब की हीरक जयंती समारोह के लिए समय पर चेन्नई लौटने का फैसला किया। राजा, जहाँ इस समारोह में डूबे हुए थे वहीं अपने क्लब की उपलब्धि पर बहुत खुश भी थे.. मार्च में उनकी मृत्यु के बाद रोटरी क्लब मद्रास साउथ ने उनके नाम पर एक वार्षिक पुरस्कार की घोषणा की।

राजा को क्लब के प्रथम मंडल गवर्नर सी वी जॉर्ज का यह उद्धरण बहुत पसंद था: ''हमें अतीत की कैद में न रहकर भविष्य का मुसाफ़िर बनना चाहिए। इस बात ने रोटरी के प्रति उनके दृष्टिकोण को अभिव्यक्त किया।''

यह किताब अमेज़ॅन पर उपलब्ध है या इसे कॉमपुप्रिन्ट से प्राप्त किया जा सकता है (फोन: 63822 03140)।

*लेखक रोटरी क्लब मद्रास साउथ, रो ई मंडल 3234 के सदस्य हैं*

# व्हीलचेयर बास्केटबॉल टूर्नामेंट

टीम रोटरी न्यूज़

शारीरिक रूप से विकलांग व्यक्तियों को प्रेरित करने के लिए रोटरी क्लब पांडिचेरी गैलेक्सी, रो ई मंडल 2981, द्वारा एक व्हीलचेयर बास्केटबॉल टूर्नामेंट आयोजित किया गया था। खेल प्रतियोगिता इंदिरा गांधी स्पोर्ट्स स्कूल के मैदान में आयोजित की गई थी, जिसमें पुडुचेरी और उसके आसपास से बड़ी संख्या में प्रतिभागियों ने भाग लिया।

क्लब अध्यक्ष के मुरली और रोटेरियन उन टीमों का हौसला बढ़ाने के लिए मौजूद थे, जिन्होंने अपनी अपंगता के बावजूद प्रतिस्पर्धी भावना के साथ खेल खेला। क्लब ने ₹32,000 की लागत से टूर्नामेंट की मेजबानी की।■

# रो ई दक्षिण एशिया कार्यालय से

### असाधारण अनुदान रिपोर्टिंग के लिए मंडल का सम्मान

अपनी अप्रैल 2023 की बैठक में, टीआरएफ न्यासियों ने सालाना उन मंडलों को सम्मानित करने का फैसला किया जो रोटरी वर्ष के दौरान अनुदान रिपोर्टिंग आवश्यकताओं का कम से कम 90 प्रतिशत अनुपालन करते हैं। अधिक जानकारी के लिए टीआरएफ नीतियों के खंड 34.050.3 को देखें।

### रिपोर्टिंग में उत्कृष्टता का जश्न

रोटरी वर्ष 2023-24 के लिए, दुनिया भर के 59 मंडलों को असाधारण अनुदान रिपोर्टिंग के लिए न्यासी प्रमुख बैरी रेसिन से प्रशंसा पत्र प्राप्त हुआ। दक्षिण एशिया का रो ई मंडल 3220 विशिष्ट प्राप्तकर्ताओं में से एक था। न्यासी भरत पंड्या और रोटरी के स्टूअर्ड्शिप विभाग ने इस उपलब्धि पर रो ई मंडल 3220 को बधाई दी।

रोटरी सभी मंडलों से क्लब-प्रायोजित वैश्विक अनुदानों के लिए 90% से अधिक रिपोर्टिंग अनुपालन और 2024-25 में मंडल अनुदानों एवं मंडल-प्रायोजित वैश्विक अनुदानों के लिए 100% अनुपालन का प्रयास करने का आग्रह करता है। पारदर्शी रिपोर्टिंग के प्रति आपकी प्रतिबद्धता सार्थक सामुदायिक प्रभाव बनाने के लिए महत्वपूर्ण है। अधिक जानकारी के लिए, *stewardshipdepartment@rotary.org* से संपर्क करें

### रोटरेक्ट गिविंग सर्टिफिकेट

2023-24 में, 882 रोटरेक्ट क्लबों ने टीआरएफ में 391,558 डॉलर का दान करके रोटरेक्ट गिविंग सर्टिफिकेट अर्जित किया, जो 2022-23 में 640 क्लबों द्वारा 242,000 डॉलर के दान से काफी ज्यादा है। प्रमाण पत्र उन क्लबों को दिया जाता है जो सालाना टीआरएफ में कम से कम 100 डॉलर का योगदान करते हैं। ऐसे प्रत्येक क्लब को 2023-24 के न्यासी अध्यक्ष बैरी रेसिन द्वारा हस्ताक्षरित एक प्रमाण पत्र प्राप्त होगा। 2019-20 से, रोटरेक्टरों ने इस पहल के माध्यम से 830,059 डॉलर से अधिक का योगदान दिया है।

### प्रमुख दानकर्ता मान्यता दिशानिर्देश

- प्रमुख दानकर्ता मान्यता केवल व्यक्तिगत योगदान के लिए है, और इसमें जीवनसाथी का योगदान शामिल हो सकता है।
- यदि कोई परिवार-नियंत्रित कंपनी या न्यास योगदान देता है, तो वह मालिक/न्यासी को श्रेय देने के लिए लिखित निर्देश प्रदान कर सकता है।
- प्रमुख दानकर्ता मान्यता स्वतः नहीं दी जाती है; इसके लिए दानकर्ता को उत्कीर्णन निर्देशों के साथ रो ई कर्मचारियों को रिपोर्ट करने की आवश्यकता होती है।
- वार्षिक कोष, पोलियो प्लस और वैश्विक अनुदान में योगदान के लिए फाउंडेशन मान्यता अंक प्रदान किए जाते हैं। अक्षय निधि कोष, निर्दे शित योगदान या सी एस आर योगदानों के लिए कोई अंक नहीं दिए जाते हैं।■

Rotary PEOPLE OF ACTION

# एक झलक

टीम रोटरी न्यूज़

## अग्रणी न्यूरोलॉजिस्ट

डॉ पृथिका चारी, रोटरी क्लब मद्रास टेम्पल सिटी की सदस्य, अपोलो हॉस्पिटल्स, चेन्नई में शामिल होने वाली पहली न्यूरोलॉजिस्ट और न्यूरोसर्जन थीं। उन्होंने न्यूरोलॉजी विभाग को आकार दिया, नैदानिक सेवाएँ, उपचार प्रोटोकॉल, ईईजी लैब और विशेष मिर्गी सेवाएँ स्थापित कीं। अपोलो में न्यूरोलॉजी संस्थान के 41वें वर्ष को चिह्नित करने के लिए एक डाक टिकट जारी किया गया।

**अग्रणी न्यूरोलॉजिस्ट**

*डाक टिकट विमोचन के अवसर पर न्यूरोलॉजिस्ट डॉ. पृथिका चारी (बाएं से तीसरी), अपोलो हॉस्पिटल्स के चेयरमैन डॉ. प्रताप रेड्डी और कार्यकारी उपाध्यक्ष प्रीता रेड्डी के साथ।*

## मरीजों के परिचारकों के लिए सुविधा

रोटरी क्लब मेट्टुपालयम प्राइम, रो ई मंडल 3203, ने हेल्पिंग हार्ट्स फाउंडेशन और मेट्टुपालयम नगरपालिका के साथ साझेदारी में, मेट्टुपालयम के सरकारी अस्पताल में परिचारकों के लिए बेड, टॉयलेटरीज़ और पंखे से सुसज्जित दो लिंग-विशिष्ट डॉर्मिटरी का निर्माण किया है। परियोजना अध्यक्ष डॉ. अरविंद कार्तिकियन ने कहा कि जल्द ही पुस्तकालय, टीवी और लॉकर की सुविधा भी शामिल की जाएगी।

**मरीजों के परिचारकों के लिए सुविधा**

*मेट्टुपालयम के सरकारी अस्पताल में नवनिर्मित डॉर्मिटरी में से एक में क्लब के सदस्य।*

**वयस्कों के लिए ज्ञान केंद्र**

*वयस्क साक्षरता केंद्रों में से एक में क्लब के सदस्यों एवं लाभार्थियों के साथ पीडीजी राजेंद्र राय।*

## साहसिक और बहादुर कार्यशाला

रो ई मंडल 3291 की पहल प्रोजेक्ट विरांगना के तहत रोटरी कल्ब नॉर्थ कलकत्ता ने उत्तरी कोलकाता के बागबाजार बहुउद्देशीय कन्या शाला में एक आत्मरक्षा कार्यशाला का आयोजन किया। कार्यशाला में आत्मरक्षा, इष्टतम आहार और मानसिक स्वास्थ्य पर चर्चा की गई। साठ लड़कियों ने भाग लिया और प्रमाण पत्र प्रदान किए गए।

**साहसिक और बहादुर कार्यशाला**

*मार्शल आर्ट कर्य्रशाला में भाग लेती छात्राएं।*

## वयस्कों के लिए ज्ञान केंद्र

अगस्त में, रोटरी कल्ब बैंगलोर पामविल, रो ई मंडल 3191, ने कोलार में पांच वयस्क साक्षरता केंद्रों का उद्घाटन किया। क्लब ने फोकस ट्रस्ट के साथ मिलकर इन केंद्रों को प्रायोजित किया। शिक्षकों और छात्रों को नोटबुक और स्टेशनरी वितरित की गई। पीडीजी राजेंद्र राय ने परियोजना का उद्घाटन किया।■

# ग्रीनवाशिंग या जैविकः सच क्या है?

प्रीति मेहरा

**ग्रीनवाशिंग और कंपनियों द्वारा किए गए झूठे दावे आपको उत्पाद खरीदते समय गुमराह कर सकते हैं। लेकिन उम्मीद अभी बाकी है...**

क्या सुपरमार्केट की अलमारियों पर रखें मग्रीनफ चिह्नित उत्पाद वास्तव में ग्रीन या पर्यावरण अनुकूल हैं? एक ऐसे दौर में जहाँ उपभोक्ता पर्यावरण के प्रति अधिक जागरूक हो रहे हैं, वहाँ मार्केटर्स अनजान खरीदारों को जैविक, रासायन मुक्त, 100 प्रतिशत प्राकृतिक, टिकाऊ यहाँ तक कि शाकाहारी जैसे लेबल के साथ लुभाने में कोई कसर नहीं छोड़ रहे। ये टैग खाद्य उत्पादों से लेकर सौंदर्य प्रसाधनों तक विभिन्न सामानों पर दिखाई दे सकते हैं और अक्सर आधे सच्चे या झूठे दावे कर सकते हैं।

ग्रीनवाशिंग की दुनिया में आपका स्वागत है, यह एक एक ऐसा शब्द जो जलवायु परिवर्तन और पर्यावरण संबंधी मुद्दों से जूझती दुनिया में तेज़ी से प्रचलित हो रहा है। ग्रीनवाशिंग तब होती है जब कोई कंपनी दावा करती है कि उसके उत्पाद पर्यावरण के अनुकूल हैं, लेकिन ये दावे कभी-कभी भ्रामक या झूठे होते हैं।

यह अक्सर चालाकीपूर्ण मार्केटिंग के बारे में होता है जो उपयोग की जाने वाली सामग्री से संबंधित विशिष्ट तथ्यों को छुपा देती है। उदाहरण के लिए एक कीट से प्राप्त किए जाने वाले एक रंगीन तत्व को लेबल पर छोटे अक्षरों में छुपाया जा सकता है ताकि ऐसे मुद्दों के प्रति संवेदनशील उपभोक्ताओं की नज़र से यह बच सकें।

मेरी एक मित्र जो हाल ही में शाकाहारी बनी है, अपने द्वारा उपयोग किए जाने वाले सौंदर्य प्रसाधनों को लेकर बहुत सतर्क रहती है कि उन उत्पादों के निर्माण के दौरान जीवित प्राणियों को नुकसान या उनका उपयोग न किया गया हो। जब उसे पता चला कि कई जैविक रूप से तैयार किए गए सौंदर्य प्रसाधनों में जो मकारमाइनफ होता है उसे स्केल्ड कीड़ों को कूटकर बनाया जाता है, जिसमें झींगुर भी शामिल है तो उसका आश्चर्यचकित होना स्वाभाविक था। कृत्रिम कार्मिनिक एसिड का उत्पादन एक जटिल और महंगी प्रक्रिया है और अधिकांश निर्माता कीट-व्युत्पन्न उत्पाद का उपयोग करते हैं।

जब से उसे यह सब पता चला उसने कई सौंदर्य प्रसाधनों का बहिष्कार करना शुरू कर दिया और अपनी प्राकृतिक त्वचा के रंग और बनावट पर भरोसा करने लगी और इसका अच्छा असर हो रहा है!

हाल ही के वर्षों में खाद्य उत्पाद भी 'ग्रीन' हो गए हैं। पैक दालों, फलों और सब्जियों पर कीटनाशक और उर्वरक मुक्त दावे होना आजकल आम बात है। क्या हम इन दावों पर भरोसा कर सकते हैं? जैविक खेती का अर्थ है कि फसलें किसी कारखाने में निर्मित कीटनाशकों, रासायनिक उर्वरकों और आनुवंशिक रूप से संशोधित बीजों के बिना उगाई गई है। इसका अर्थ है ऐसी कृषि प्रथाएं जो

फसल चक्र का पालन करती हैं और इससे खेती की गई भूमि का उपजाऊ पन बना रहता हैं। संक्षेप में, जैविक खेती का अर्थ है आधुनिक तरीकों को छोड़ना क्योंकि यह उत्पादन को तो बढ़ाते हैं लेकिन अंततः उत्पाद पर अस्वास्थ्यकर दुष्प्रभाव भी डालते हैं।

हमारे लिए उन खेतों का निरीक्षण करना असंभव है जहाँ एक ब्रांड नाम के तहत बेचे जाने वाले उत्पाद उगाए जाते है। सौभाग्य से भारतीय खाद्य सुरक्षा और मानक प्राधिकरण (FSSAI) ने एक नया लोगो - यूनिफाइड इंडिया ऑर्गेनिक - प्रस्तावित किया जो जल्द ही सभी प्रमाणित जैविक उत्पादों पर दिखेगा। इस हरे रंग के लोगो में एक वृत्त, एक पत्ती और एक टिक का निशान है। यह मौजूदा इंडिया ऑर्गेनिक और जैविक भारत लोगो की जगह लेगा।

सब्जियों के लिए उन स्थानीय जैविक खेतों पर भरोसा करना सबसे अच्छा है जिन्हें आपने स्वयं देखा हो या जिससे आपके मित्र परिचित हो। जब तक कोई विश्वसनीय ब्रांड प्रमाणित जैविक सब्जियां नहीं बेचता तब तक आप अपनी खरीद की गुणवत्ता को लेकर आश्वस्त नहीं हो सकते। समस्या की जड़ यह है कि जैविक सब्जियां और फल महंगे बिकते हैं और सस्ते उत्पादों को जैविक के रूप में बेचने का लालच कई बेईमान व्यापारियों को प्रोत्साहित करता है। साथ ही याद रखें कि जैविक सब्जियाँ और फल उतने आकर्षक और रंगीन नहीं लग सकते जितने कीटनाशकों और रासायनिक उर्वरकों के साथ उगाई गई फल-सब्जियाँ लगती है।

चूंकि पर्यावरणीय प्रभाव उपभोक्ता निर्णयों को प्रभावित करता है और बढ़ती संख्या के साथ लोग पर्यावरण अनुकूल उत्पादों के लिए अतिरिक्त भुगतान करने को तैयार है, कई कंपनियां अपने पर्यावरण अनुकूल प्रयासों और पर्यावरणीय प्रतिबद्धता को बढ़ा-चढ़ा कर पेश करने की कोशिश करती हैं ताकि ब्रांड निष्ठा बनाई जा सकें। पिछले कुछ वर्षों में अनेक शिकायतें मिलने के बाद भारतीय विज्ञापन मानक परिषद (ASCI) ने विज्ञापनों में ग्रीनवाशिंग की जांच करने के लिए दिशानिर्देश तैयार किए हैं। इसके साथ ही वाणिज्य मंत्रालय के अंतर्गत भारत के केंद्रीय उपभोक्ता संरक्षण प्राधिकरण (CCPA) ने झूठे या भ्रामक पर्यावरणीय दावों को लक्षित करने के लिए दिशानिर्देशों का प्रारूप जारी किया हैं।

हालाँकि आप इस क्षेत्र के विशेषज्ञों द्वारा निर्धारित कुछ दिशानिर्देशों का पालन करके ग्रीनवाशिंग का पता लगा सकते हैं। एक रणनीति जिसे निर्माता अपनाते हैं वो है सकारात्मक पहलुओं को उजागर करना और नकारात्मक पहलुओं को कम करके बताना। इसलिए फास्ट फैशन (सस्ते, स्टाइलिश और कम कीमत वाले कपड़े) के प्रमोटर आपको बताएंगे कि यह कितना किफायती है, कितनी विविधता प्रदान करता है और कैसे रोजगार उत्पन्न करता है। लेकिन वे आपको यह नहीं बताएंगे कि इसके द्वारा कितना अपशिष्ट पदार्थ उत्पन्न होता है, इसकी पानी की खपत कितनी है या इसका कार्बन फुटप्रिंट कितना है।

मूल सिद्धांत का पालन करने के लिए मार्केटिंग प्रचार से परे देखना पड़ता है। प्राकृतिक, पर्यावरण अनुकूल, टिकाऊ और गैर हानिकारक जैसे शब्दों के झांसे में न आएं। बिना किसी प्रमाण के उत्पाद के लेबल पर किए गए ऐसे दावे अस्पष्ट होते हैं जो निरर्थक है। आपको बिना किसी सबूत के उन शब्दों से प्रभावित नहीं होना चाहिए। उदाहरण के लिए कागज से बने उत्पाद पुन: प्रयोज्य होते हैं लेकिन कागज बनाने के लिए काटे गए पेड़ों का क्या? निर्माता द्वारा वृक्षारोपण करना किसी उत्पाद को बनाने के लिए काटे गए हरे-भरे वन के बराबर नहीं होता।

ग्रीनवाशिंग तब भी होती है जब कोई कंपनी एक स्वच्छ ग्रह के प्रति अपनी प्रतिबद्धता के बारे में बयान देती है। इसलिए, जब कोई उपभोक्ता किसी कंपनी द्वारा निर्मित उत्पाद द को खरीदता है जिसके लेबल पर पर्यावरण अनुकूल होने का दावा किया गया है तो उपभोक्ता यह मान लेता है कि यह उत्पाद पर्यावरण अनुकूल ही होगा। लेकिन यह हमेशा सच नहीं होता। इसी तरह जंगलों, झरनों और जानवरों की प्रकृति-आधारित छवियों का उपयोग इस बात पर यकीन दिलाने के लिए किया जाता है कि यह उत्पाद प्राकृतिक है।

यहां तक कि लेबल पर जारी किए गए प्रमाणपत्रों को उनकी प्रामाणिकता सुनिश्चित करने के लिए ध्यान से पढ़ा जाना चाहिए। ऐसे कई उदाहरण सामने आए हैं जब निर्माताओं ने उन संगठनों के साथ साझेदारी

> "
> भारतीय खाद्य सुरक्षा एवं मानक प्राधिकरण (FSSAI) ने एक नया लोगो बनाया है – जिसमें एक वृत्त, एक पत्ता और एक टिक मार्क है। यह मौजूदा भारत जैविक और जैविक भारत लोगो की जगह लेगा।

की है जो उनके उत्पादों के लिए आधिकारिक रूप से पर्यावरण अनुकूल होने का प्रमाण पत्र प्रदान करते हैं। एक उदाहरण जो अक्सर उद्धृत किया जाता है, वह है अमेरिका और कनाडा में सस्टैनबल फॉरिस्ट्री इनिश्यटिव अर्थात सतत वानिकी पहल (एसएफआई) जिसे लकड़ी उद्योग द्वारा उपभोक्ताओं के लिए पर्यावरण के अनुकूल प्रथाओं का आभास दिलाने के लिए शुरू किया गया था!

भारत में विज्ञापन में ग्रीनवाशिंग की जांच के लिए भारतीय विज्ञापन मानक परिषद के नए दिशानिर्देश मदद करेंगे। इसी तरह केंद्रीय उपभोक्ता संरक्षण प्राधिकरण (सीसीपीए) द्वारा तैयार किए गए प्रारूप नियम भी सहायक होंगे। एक बार अनुमोदित होने के बाद यह नियम सत्यापित, सटीक और प्रमाणित पर्यावरणीय दावों को सुनिश्चित करेंगे जो साक्ष्य और खुलासे द्वारा समर्थित होंगे। पर्यावरण अनुकूल दावों और हरित आपूर्ति श्रृंखला को सिद्ध करने के लिए विज्ञापनों को भी क्यूआर कोड या लिंक के साथ प्रमाणित किया जाएगा। ये नियम सभी विज्ञापनदाताओं, सेवा प्रदाताओं, उत्पाद विक्रेताओं, विज्ञापन एजेंसियों या समर्थकों पर लागू होंगे।

यूनाइटेड इंडिया ऑर्गेनिक सर्टिफिकेशन यह सुनिश्चित करने में एक महत्वपूर्ण कदम होगा कि जब हम कोई जैविक उत्पाद खरीदें तो वो वास्तव में जैविक ही हो। इसके लिए बधाई! अगली बार जब भी आप कोई पर्यावरण अनुकूल उत्पाद खरीदें तो उसके लेबल पर एक बार ओर नज़र डालें।

*लेखिका एक वरिष्ठ पत्रकार हैं,*
*जो पर्यावरण के मुद्दों पर लिखती हैं।*

# वृद्धाश्रम को मिले वयस्क डायपर

टीम रोटरी न्यूज़

रोटरी क्लब मापुसा एलिगेंस के सदस्य गोवा के सेंट जोसेफ ओल्ड एज होम में निवासियों को वयस्क डायपर सौंपते हुए।

रोटरी क्लब मापुसा एलिगेंस, रो ई मंडल 3170, ने गोवा और उसके आसपास के वृद्धाश्रमों में वयस्क डायपर प्रदान करने के लिए अगस्त में एक कार्यक्रम शुरू किया। क्लब के पूर्व अध्यक्ष अजय मेनन कहते है, ''वृद्धाश्रमों में हर महीने सबसे बड़ा खर्च वयस्क डायपर पर होता हैं जो हमारे बुजुर्गों की स्वच्छता और गरिमा को सुनिश्चित करता हैं। यहां तक कि 10-15 निवासियों वाले एक छोटे से वृद्धाश्रम में वयस्क डायपर पर प्रति माह ₹30,000 की लागत आती है।'' शुरुआत में, क्लब ने गोवा के बस्तोरा में सेंट जोसेफ ओल्ड एज होम को वयस्क डायपर के 30 पैकेट दान किए और 100 पैकेटों की अतिरिक्त खेप का आर्डर दिया है।

वह कहते है, ''हमने दानकर्ताओं एवं रोटेरियनों से ₹600, जो एक पैकेट की लागत है, का साधारण दान मांगकर इसे जमीनी स्तर का आंदोलन बनाने का फैसला किया है। किसी व्यक्ति, कॉर्पोरेट या संस्था द्वारा दान किये गए वयस्क डायपर के प्रत्येक पैकेट का मिलान हमारे द्वारा किया जाएगा जिससे शुद्ध प्रभाव दोगुना हो जायेगा।''■

# किताबें एवं ज़रूरी चीज़ें: बच्चों की खुशी का राज़

रोटरी क्लब नागपुर साउथ ईस्ट के सदस्य छात्रों को स्कूल की आवश्यक वस्तुएं उपहार स्वरूप देने के बाद उनके साथ।

सामाजिक रूप से वंचित छात्रों के लिए एक आउटरीच कार्यक्रम में, रोटरी क्लब नागपुर साउथ ईस्ट, रो ई मंडल 3030, ने नागपुर और आसपास के पांच शहरी स्कूल एवं 23 जिला परिषद स्कूलों में छात्रों को 6,000 किताबें, 300 स्कूल बैग, 500 पानी की बोतलें, 300 लंच बॉक्स, 300 ज्यामिति बॉक्स और 175 यूनिफार्म वितरित की।

क्लब अध्यक्ष विजय बाजरे ने कहा कि रोटरी का जादू साफ झलक रहा था, ''क्योंकि हम ग्रामीण छात्रों के चेहरों पर ख़ुशी ला पाए और उन्हें सीखने के लिए प्रेरित कर पाए। उपहारों ने उनके चेहरे पर तत्काल मुस्कान ला दी।'' बाजरे ने कहा, ''हम चाहते हैं कि ये बच्चे गरीबी की बेड़ियों से मुक्त हों। इसके अलावा, स्कूल की आवश्यक चीजें पाने वाले प्रत्येक बच्चे को यह अहसास भी हुआ कि वे मायने रखते हैं, और प्यार और सहायता के योग्य हैं।''■

*बाएं से: एजी प्रसन्ना खजगीवाले, डीजीई सुधीर लाटूरे, क्लब सदस्य सुशीला मोडक, परियोजना समन्वयक बिंदु शिरसाठ और क्लब अध्यक्ष स्वीटी पंजाबी, रात्रि स्कूल के छात्रों और उनके शिक्षक के साथ।*

Rotary PEOPLE OF ACTION

# रोटरी ई क्लब द्वारा नाइट स्कूल के शिक्षार्थियों का सशक्तिकरण

**जयश्री**

रोटरी ई क्लब ऑफ एम्पावरिंग यूथ, रो ई मंडल 3132, ने अहमदनगर के 25 नाइट स्कूलों को लाभान्वित करने के लिए अगस्त माह में साक्षरता पहलों की शुरुआत की। नाइट स्कूल ऐसे युवाओं के लिए एक महत्वपूर्ण सहारे के रूप में काम करता हैं, जो वित्तीय बाधाओं के बावजूद, खुद को आगे बढ़ाने के लिए काम करते हुए शिक्षित होने के लिए दृढ़ संकल्पित हैं। परियोजना समन्वयक बिंदू शिरसथ बताती हैं कि लगभग 25-28 वर्ष के आयु के ये छात्र काम और पढाई के बीच एक अत्यंत नाजुक संतुलन का प्रबंध करते है ताकि दिन में मजदूरी करके रात के समय पढाई कर सके। ये स्कूल आम तौर पर हर शाम दो घंटे के लिए संचालित होते हैं, जिनमें से प्रत्येक में लगभग 100 छात्र होते हैं।

इन वयस्क शिक्षार्थियों का समर्थन करने के लिए, रोटरी ई क्लब ने विशेष रूप से कक्षा 10 के छात्रों को उनकी बोर्ड परीक्षा की तैयारी करवाने के लिए एक एस एस सी स्टडी ऐप उपलब्ध करवाया है। बिंदु कहती हैं, ''इस ऐप को उनके मोबाइल फोन या लैपटॉप पर इंस्टॉल किया जा सकता है, जिससे यह उन छात्रों के लिए एक सुविधाजनक अध्ययन उपकरण बन जाता है, जिन्हें अक्सर समय की कमी होती है।'' ऐप में अभ्यास पत्र और प्रश्न पत्र सेट शामिल हैं, जो छात्रों को उनकी परीक्षा की तैयारी को बेहतर बनाने के लिए महत्वपूर्ण संसाधन प्रदान करते हैं। डीजी सुरेश साबू और डीजीई सुधीर लाटूरे ने क्लब द्वारा प्रायोजित अध्ययन सामग्री और स्टेशनरी किट वयस्क शिक्षार्थियों को वितरित की।

क्लब ने रोटरी क्लब ठाणे घोडबंदर, रो ई मंडल 3142, के सहयोग से ऑनलाइन परामर्श सत्र आयोजित किये, जिसमें इनमें से कई छात्रों के सामने आने वाले परीक्षा से संबंधित तनाव को संबोधित किया गया। एक कारण-आधारित क्लब, रोटरी क्लब ऑफ एडिक्शन प्रिवेंशन, रो ई मंडल 3141, के विशेषज्ञों ने एक ऑनलाइन कार्यक्रम में मादक द्रव्यों के सेवन और डिजिटल लत के दुष्प्रभावों पर प्रकाश डाला, जिसमें 15 नाइट स्कूलों के छात्रों ने हिस्सा लिया।

छात्रों की आगे और मदद करने के लिए, क्लब ने एक कौशल विकास प्रदर्शनी का आयोजन किया, जहां प्लंबर, बढ़ई, इलेक्ट्रीशियन और होटल जगत के पेशेवरों ने अपने व्यवसायों के बारे में जानकारी साझा की। इसने छात्रों को प्रेरित करते हुए एवं उनकी व्यावहारिक समझ को बढ़ाते हुए संभावित कैरियर पथों का वास्तविक ज्ञान प्रदान किया। शिक्षक दिवस पर, क्लब ने एक नाइट स्कूल शिक्षक को नेशन बिल्डर अवार्ड से सम्मानित किया। इन शिक्षक ने स्कूल छोड़ने वालों छात्रों को फिर से दाखिला लेने और अपनी शिक्षा जारी रखने के लिए प्रोत्साहित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

अहमदनगर स्थित तीन साल पुराने ई क्लब में पूरे महाराष्ट्र से 12 सदस्य हैं; इनमें से दो अमेरिका और कनाडा में स्थित हैं। जैसा कि नाम से पता चलता है, क्लब के सदस्य युवाओं के सशक्तिकरण से सम्बंधित सेवा गतिविधियों में संलग्न हैं। क्लब की अध्यक्ष स्वीटी पंजाबी ने कहा, ''इस साल की शुरुआत में हमने एक स्कूल को पंखे और छात्रों को स्टेशनरी किट और शैक्षिक खिलौने प्रदान किए। क्लब ने एक कारण-आधारित इको क्लब की शुरुआत की है जो अहमदनगर में पर्यावरण देखभाल से संबंधित परियोजनाओं को निष्पादित करता है,'' और सुनने और बोलने में अक्षम बच्चों के लिए एक इंटरेक्ट क्लब की भी शुरुआत की है। ■

# दीर्घायु के लिए स्वस्थ जीवन

भरत और शालन सवुर

19वीं शताब्दी की स्वीडिश कसरत आधुनिक कैलिस्थेनिक्स का मूल स्रोत है – आज के पश्चिमी व्यायामों का प्रमुख स्रोत एवं पाठ्यक्रम। ऐसा माना जाता है कि स्वीडिश जमींदारों ने जब उनके यहाँ काम करने वाले किसानों के थके और झुके कंधे देखें तो वह दंग रह गए। जमींदार चाहते थे कि उनके आदमी सैनिकों की तरह सीधे रहें। इसलिए उन्होंने सैन्य शैली की तर्ज पर व्यायाम और चाल निर्धारित की। सीधी रीढ़ और चौड़े कंधों के लिए उन्हें कैलिस्थेनिक्स सिखाया गया।

लेकिन छाती को ऊपर, कंधे को पीछे और सिर सीधा रखने वाले व्यायाम से अक्सर रीढ़ पर अनावश्यक दबाव पड़ता है जिससे पीठ में दर्द होने लगता है। हमारे कंधों का आकार प्राकृतिक होता है। इसलिए यह विचार न केवल तार्किक रूप से अस्वीकार्य है बल्कि शारीरिक रूप से भी हानिकारक है खासकर उन लोगों के लिए जो न तो सैनिक हैं और न ही एथलीट है। क्योंकि शरीर को सीधा रखने का अर्थ उसपर अतिरिक्त दबाव डालना नहीं होता।

20वीं सदी जिसे बार्बी डॉल और जीआई जो का युग माना जाता है, ने खूबसूरत शारीरिक बनावट के विश्वास को जन्म दिया। इन आदर्शों के पीछे का विज्ञान और इनकी बिक्री एक आकर्षक दृश्य प्रस्तुत करती है और फैशन समग्र रूप से दिखावट का केंद्र बन गई है – कैजुअल या फिटनेस परिधान और इनसे जुड़े समान उद्योग समाज में फैशन के नाम पर दिखावे की ओर अग्रसर लोगों की इच्छाओं की पूर्ति करते है। असल में शौकिया वस्तुओं और खेल ब्रांडों की मार्केटिंग पहले कभी इतनी सक्रिय और आर्थिक रूप से इतनी लाभकारी नहीं रही। लेकिन सुंदर त्वचा केवल बाहरी आकर्षण है असली सुंदरता तो समग्र स्वास्थ्य में छुपी है जो तन और मन दोनों को सुंदर बनाता है।

हालांकि जाहिर तौर पर वे एक समान स्रोत को साझा करते हैं मगर उनका उद्देश्य और साधन बिल्कुल भिन्न हैं। इसी संदर्भ में चलिए कुछ सामान्य विचारों पर और अधिक स्पष्टता प्राप्त करें चाहे वो पुराने हो या नए, सच्चे हो या गलत।

## नकली या असली

इंटरनेट और मोबाइल फोन जैसे आधुनिक मीडिया माध्यमों के आने के बाद कई प्रभावशाली लोग हमारे सामने झूठी खबरों को सच की तरह पेश करते है। उदाहरण:

- व्यायाम करते समय कभी भी पानी न पीने की सलाह शायद सबसे प्रमुख मिथकों में से एक है। यह गलत है क्योंकि शरीर की कोशिकाएं ऊर्जा प्राप्त करने के साथ ही शरीर से अपशिष्ट पदार्थों को बाहर निकालने के लिए परिसंचरण पर निर्भर करती हैं। यदि शरीर में पानी की मात्रा की कमी होगी तो मांसपेशियां अपना उचित प्रदर्शन नहीं कर सकेंगी जिससे सीधे तौर पर हमारे हृदय पर दबाव पड़ेगा। इसलिए निर्जलीकरण से बचने के लिए व्यायाम से पहले और व्यायाम के दौरान पानी या कोई भी पौष्टिक तरल पदार्थ पीते रहना बहुत जरूरी है। और दिनभर में 2 लीटर या उससे अधिक पानी पीने का ध्यान रखें। खासकर तब जब आप व्यायाम करने जा रहे हो।
- व्यायाम से पहले सेवन की गई चीनी ऊर्जा स्तर को बढ़ाती है। यह गलत है, संक्षेप में, आपको चीनी की आवश्यकता केवल तब होती है जब आप किसी बड़ी गतिविधि जैसे मैराथन दौड़, गोल्फ का एक पूरा राउन्ड, टेनिस आदि में भाग लेते है।
- नमक की गोलियां थकान को रोकती हैं। नमक की गोली नमकीन जल का एक ठोस रूप होती है। और जब यह पेट के श्लेष्मल झिल्ली पर जम जाती है तो इसके परिणामस्वरूप मतली या उल्टी हो सकती है। इसके बजाय व्यायाम करने से पहले या इसके बाद अपने भोजन में थोड़ा नमक डालें मगर अधिक मात्रा में नहीं। शरीर नमक का भंडारण नहीं कर सकता इसलिए इसकी अधिक मात्रा से ऐंठन और मांसपेशियों की कमजोरी हो सकती है।

इसके अलावा और भी कई सच्चे-झूठे मिथक हैं। और हम उन पर भी चर्चा करेंगे – अगर जगह रही

## शारीरिक भाषा

मानव रूप को मूल रूप से तीन प्रकारों में वर्गीकृत किया जा सकता है: मेसोमोर्फ, एक्टोमोर्फ और एंडोमोर्फ। साधारण भाषा में यह क्रमशः भारी, पतले और बीच के लोग होते है। भारी लोग वो

**गलत सलाहों से सावधान रहें... जैसे कि व्यायाम करते समय कभी भी तरल पदार्थ न पिएं। आपको व्यायाम से पहले, उसके दौरान और बाद में पानी या पौष्टिक तरल पदार्थ पीना चाहिए।**

होते है जिनकी हड्डियाँ बड़ी और मांसपेशियाँ मजबूत होती है और वे अपनी ताकत का प्रदर्शन करते हैं। पसीना उनकी पहचान है, प्रतियोगिता उनका धर्म है और विजय उनका देवता है! समस्या तब आती है जब वे आपके फिटनेस ट्रेनर और संदर्भ बिंदु बन जाते हैं। और यदि आप स्वयं मेसोमोर्फ नहीं हैं तो या तो आप उनके दबाव में रहेंगे या उनके खेल से बाहर हो जाएंगे। यह जांचने की भी एक सीमा होती है कि जब आप पर दबाव डाला जाता है तो आप कितने पुश-अप कर सकते हैं। वास्तव में मांसपेशियों को बनाने के और भी आसान तरीके हैं जो वाकई काम करते हैं। इसके अलावा हम यहाँ बाहरी सुंदरता या दिखावट की बात नहीं कर रहे हैं बल्कि सिर्फ जीवन की बात कर रहे हैं। और यहीं से समग्र स्वास्थ्य एक नया आंतरिक आयाम प्राप्त करता है।

'एरोबिक' वो सूक्ष्म जीव है जो केवल वायुमंडलीय ऑक्सीजन की उपस्थिति में पाया जाता है। और एरोबिक उस विशेषण को दर्शाता है। हर जीव को ओज़ोन जोन की आवश्यकता होती है। यह शरीर और मस्तिष्क के बीच एक स्वास्थ्यप्रद तालमेल बैठाने में एक पुल की तरह काम करता है। इसलिए, अपने फिटनेस स्तर की जांच करना अनिवार्य है। यह दांव खेल के मैदान और सशस्त्र बलों से परे है। शायद आप उन लोगों में से न हो। आपकी लंबी उम्र काफी हद तक आपके हृदय स्थिति पर निर्भर करती है। दो सरल परीक्षणों द्वारा अपने फिटनेस स्तर की जाँच करें:

आपके हाथों की पकड़ यह दर्शाती है कि आपके जीवन पर आपकी कितनी पकड़ है। यह लगभग हर गतिविधि के साथ नज़र आती है। अपने आप को उठाएं और जब तक संभव हो तब तक लटकें रहें। जो पुरुष और महिलाएं शून्य से 20 सेकंड तक लटक सकते है वो नौसिखिए की श्रेणी में आते है। जो पुरुष 30 सेकंड तक और जो महिलाएं 20 सेकंड तक लटक सकती है उन्हें मध्यवर्ती श्रेणी में रखा जाता है। पुरुषों एवं महिलाओं के लिए उन्नत अवस्था क्रमशः 60 सेकंड से अधिक और 40 सेकंड से अधिक है।

अपनी अंतर्निहित ताकत की जांच करने के लिए अपने दोनों हाथों में बराबर वजन उठाएं और 90 सेकंड तक चलें। धीरे-धीरे इस वजन को बढ़ाते हुए अपने शरीर के वजन के 70 प्रतिशत तक ले जाएं और फिर 90 सेकंड तक चलें। यह पुरुषों और महिलाओं दोनों के लिए अच्छा है।

अपने पारिवारिक डॉक्टर से परामर्श लें, पहले एरोबिक रूप से फिट बनें और फिर अपने शरीर, विशेष रूप से इसकी मुख्य मांसपेशियों को मजबूती प्रदान करने वाले इन व्यायामों को शामिल करें।

## तनाव मुक्त रहें, मजबूत बनें

अपने हाथों को सिर के ऊपर जितना हो सकें उतना ऊँचा उठाएं। अपने पूरे शरीर पर खिंचाव महसूस करें। फिर अपनी दोनों भुजाओं को बग़ल में फैलाकर अपने धड़ को दोनों दिशाओं में जितना हो सकें उतना झुकाएं। और/या तेज संगीत की धुन पर उसकी ताल के अनुरूप नृत्य करें। अपनी उम्र को 220 से घटाने के बाद अपने अंगों और धड़ को अपनी आदर्श पल्स बीट के 60 प्रतिशत होने तक अच्छी तरह से खींचें और लचीला बनाएं।

## दीवार के सामने

अपने हाथों को दीवार पर कंधे के स्तर पर रखें। आगे की ओर झुकें। कोशिश करें कि आपकी छाती दीवार तक पहुंचें। फिर सामान्य स्थिति पर आ जाएं। इसे 15 या 20 बार दोहराएं। यह एक सेट है। ऐसे 3 सेट करने का लक्ष्य रखें। इससे आपके धड़ और भुजाओं को फायदा मिलेगा।

## प्लैंक

अपने शरीर को फर्श की ओर रखें। अपनी कोहनी को अपने कंधों के नीचे रखें। अपने शरीर को अपने पैर की उंगलियों सहारे फर्श के समानांतर स्थिति में ऊपर उठाएं। इस स्थिति में 1 मिनट तक रहने का प्रयत्न करें। एक मिनट पूरा करने के बाद सप्ताह में दो या अधिक बार 2 से 3 सेट दोहराएं। यह संपूर्ण शरीर का व्यायाम है जो हमारी आंतों या पेट पर भी प्रभाव डालता है। धीरे-धीरे आप अपने अभ्यासों को या अपने होल्डिंग समय को बढ़ा सकते हैं। क्या आप दुबली-पतली और छरहरी काया चाहते हैं? प्लैंक में वो सब कुछ है।

उत्तम स्वास्थ्य का दायित्व अब आपके हाथों में है। अपने शरीर को मजबूत बनाने का समय आ गया।

*लेखक* फिटनेस फॉर लाइफ, *और* बी सिम्पली स्पिरिचुअल - यू आर नैचुरली डिवाइन *के लेखक है और फिटनेस फॉर लाइफ कार्यक्रम के शिक्षक है।*

# मंडल गतिविधियाँ

### रोटरी क्लब सोलापुर
### रो ई मंडल 3132

एक सरकारी स्कूल में बच्चों को स्कूल यूनिफॉर्म वितरित की गई और परियोजना अध्यक्ष शालिनी सिंघल ने इस कार्यक्रम का समन्वय किया।

### रोटरी क्लब मुंबई एलिगेंट
### रो ई मंडल 3141

प्रोजेक्ट स्टेप फारवर्ड के अंतर्गत भगवान महावीर विकलांग सहायता समिति में 24 दिव्यांगों को जयपुर फुट (₹1.2 लाख) वितरित किए।

### रोटरी क्लब भिवंडी सेंट्रल
### रो ई मंडल 3142

क्लब के *प्रोजेक्ट अन्नपूर्णा* दिवस के अंतर्गत भिवंडी तालुक के ओवली गांव में 50 ईंट भट्ठा श्रमिकों एवं उनके परिवारों को भोजन के पैकेट वितरित किए गए।

### रोटरी क्लब गुलबर्गा आर्य
### रो ई मंडल 3160

सरकारी अस्पताल में लगभग 100 नई माताओं और गर्भवती महिलाओं को प्रसव पूर्व एवं प्रसवोत्तर देखभाल के बारे में शिक्षित किया गया।

### रोटरी क्लब होनवर
### रो ई मंडल 3170

खारवा गांव के सिद्धिविनायक हाई स्कूल में संगम सेवा ट्रस्ट और केएमसी अस्पताल, मणिपाल के साथ संयुक्त रूप से आयोजित एक दंत चिकित्सा शिविर में 240 से अधिक रोगियों की जांच की गई।

RID 3182

RID 3261

RID 3201

RID 3262

RID 3234

**रोटरी क्लब करकला**
**रो ई मंडल 3182**

सनूर के वर्धमान प्राथमिक विद्यालय में कक्षा 3 से 6 तक के विद्यार्थियों के लिए डेंगू विरोधी जागरूकता सेमिनार आयोजित किया गया।

**रोटरी ई-क्लब मेट्रोडायनामिक्स**
**रो ई मंडल 3201**

*प्रोजेक्ट विनवेली* (₹3.2 लाख) के अंतर्गत पंचायत यूनियन मिडिल स्कूलों के विद्यार्थियों के लिए एक दूरबीन बनाने की कार्यशाला आयोजित की गई जिससे खगोल विज्ञान में उनकी रुचि बढ़ेगी।

**रोटरी क्लब नंगनल्लूर एलीट**
**रो ई मंडल 3234**

मीनमबक्कम और नंगनल्लूर में ट्री गार्ड के साथ 100 पौधे लगाए गए, 100 ताड़ के बीज और 2,000 बीज गोले वितरित किए गए।

**रोटरी क्लब रायपुर क्वींस**
**रो ई मंडल 3261**

रायपुर के डॉ भीमराव अम्बेडकर मेमोरियल हॉस्पिटल में प्रसवोत्तर माताओं को प्रोटीन सप्लीमेंट वितरित किए गए।

**रोटरी क्लब जाजपुर**
**रो ई मंडल 3262**

आईपीडीजी जयश्री मोहांटी और पीडीजी अशोक महापात्रा ने जरूरतमंद परिवारों के लिए विकसित की गई एक आवासीय कॉलोनी, रोटरी नगर का उद्घाटन किया।

*वी मुत्तुकुमारन द्वारा संकलित*

# मृतक अंग दान जागरूकता - समय की आवश्यकता

संदीप चौहान

अंगदान एक जीवनरक्षक कार्य है जो अनगिनत व्यक्तियों के जीवन को बदल सकता है। भारत में, मृतक अंग दान के बारे में जागरूकता बढ़ाने की आवश्यकता महत्वपूर्ण है। चिकित्सा प्रौद्योगिकी में प्रगति और प्रत्यारोपण की आवश्यकता वाले रोगियों की बढ़ती संख्या के बावजूद, अंगों की मांग और उनकी उपलब्धता के बीच एक महत्वपूर्ण अंतर है।

भारत में सांस्कृतिक और धार्मिक मान्यताएं, जागरूकता की कमी और गलत सूचना के कारण, मृत्यु के बाद अंग दान करने में झिझक होती है। कई परिवार अंग दान की प्रक्रिया और लाभों से अनभिज्ञ हैं, जिसके कारण मृत दाताओं से अंग पुनर्प्राप्ति के लिए सहमति दर कम है।

मृत अंग दान का संभावित प्रभाव बहुत अधिक है। एक एकल दाता अपने हृदय, फेफड़े, यकृत, गुर्दे, अग्नयाशय और आंतों को दान करके आठ लोगों की जान बचा सकता है। कॉर्निया, त्वचा और हड्डियों जैसे ऊतक कई और प्राप्तकर्ताओं के लिए जीवन की गुणवत्ता बढ़ा सकते हैं। अंग आपूर्ति और मांग के बीच अंतर को पाटने के लिए इन संभावनाओं के बारे में जनता को शिक्षित करना महत्वपूर्ण है।

सार्वजनिक अभियान, प्रत्यारोपण प्राप्तकर्ताओं और दाता परिवारों की आवाज़ को शामिल करते हुए, शक्तिशाली आख्यान बना सकते हैं जो जनता के बीच गूंजते हैं। स्वास्थ्य देखभाल पेशेवरों को शोक संतप्त परिवारों के साथ अंग दान के बारे में बातचीत को संवेदनशील तरीके से संभालने के लिए प्रशिक्षण प्राप्त करना चाहिए। इसके अतिरिक्त, अंग दान शिक्षा को स्कूल पाठ्यक्रम में एकीकृत करने से कम उम्र से ही दान देने की संस्कृति को बढ़ावा मिल सकता है।

इस मिशन में सरकारी पहल महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। राष्ट्रीय अंग और ऊतक प्रत्यारोपण संगठन (एनओटीटीओ) नीति ढांचे और जन जागरूकता अभियानों के माध्यम से अंग दान को बढ़ावा देने में सहायक रहा है। सरकार, गैर-लाभकारी संस्थाओं और चिकित्सा समुदाय के बीच सहयोग के साथ इन प्रयासों को मजबूत करने से संदेश को बढ़ाया जा सकता है। गलतफहमियों को दूर करके, जनता को शिक्षित करके और परोपकारिता की संस्कृति को बढ़ावा देकर, हम अनगिनत लोगों की जान बचा सकते हैं और एक अधिक दयालु और स्वास्थ्य के प्रति जागरूक राष्ट्र बना सकते हैं।

अंग दान जागरूकता समाज की आवश्यकता है जिसके लिए हमारे जिले से पीडीजी बाघ सिंह पन्नू ने हाल ही में श्रीनगर, लेह और लद्दाख में अभियान चलाया। मृतक अंग दान जागरूकता कार्यक्रम रो ई मंडल 3090 में हमारी प्रमुख परियोजना है। हम इस क्षेत्र में अपने प्रयास जारी रखेंगे।

*लेखक एक पीडीजी और नेफ्रोलॉजिस्ट हैं तथा सात वर्षों से अंगदान को बढ़ावा दे रहे हैं।*

# मंडल टीआरएफ योगदान

स्रोत: रो ई दक्षिण एशिया कार्यालय

वार्षिक कोष (AF) में SHARE, फोकस के क्षेत्र और विश्व कोष शामिल हैं।
पोलियोप्लस में बिल और मेलिंडा गेट्स फाउंडेशन शामिल नहीं है।

अगस्त 2024 तक

(अमेरिकी डॉलर में)

| मंडल संख्या | एनुअल फण्ड | पोलियो प्लस फंड | एंडोमेंट फण्ड | अन्य निधि | कुल योगदान |
|---|---|---|---|---|---|
| 2981 | 28,498 | 1,120 | 0 | 38 | 29,656 |
| 2982 | 21,987 | 3,247 | 100 | 9,487 | 34,820 |
| 3000 | 15,268 | 1,717 | 0 | 238,096 | 255,081 |
| 3011 | 19,959 | 3,847 | 1,000 | 100,602 | 125,408 |
| 3012 | 360 | 101 | 500 | 0 | 961 |
| 3020 | 17,752 | 4,481 | 10,000 | 2,738 | 34,971 |
| 3030 | 2,293 | 138 | 1,000 | 0 | 3,431 |
| 3040 | 1,283 | 88 | 0 | 13,574 | 14,946 |
| 3053 | 11,011 | 0 | 0 | 0 | 11,011 |
| 3055 | 10,762 | 42 | 1,000 | 9,048 | 20,852 |
| 3056 | 2,691 | 0 | 0 | 133 | 2,824 |
| 3060 | 85,975 | 1,000 | 299 | 36,985 | 124,259 |
| 3070 | 5,477 | 0 | 0 | 0 | 5,477 |
| 3080 | 7,974 | 3,502 | 10,241 | 3,609 | 25,326 |
| 3090 | 1,301 | 30 | 0 | 0 | 1,331 |
| 3100 | 7,189 | 1,543 | 0 | 3,265 | 11,997 |
| 3110 | 1,519 | 24 | 0 | 0 | 1,543 |
| 3120 | 7,864 | 100 | 8,337 | 0 | 16,302 |
| 3131 | 207,783 | 3,830 | 12,000 | 36,053 | 259,665 |
| 3132 | 24,526 | 200 | 0 | 4,569 | 29,294 |
| 3141 | 212,115 | 8,511 | 51,000 | 474,979 | 746,605 |
| 3142 | 173,534 | 9,601 | 0 | 33,805 | 216,940 |
| 3150 | 50,675 | 1,899 | 6,250 | 250,100 | 308,923 |
| 3160 | 2,670 | 1,071 | 0 | 3,287 | 7,028 |
| 3170 | 21,404 | 11,388 | 0 | 974 | 33,766 |
| 3181 | 14,925 | 2,173 | 0 | 0 | 17,098 |
| 3182 | 4,201 | 108 | 0 | 0 | 4,309 |
| 3191 | 12,349 | 1,564 | 0 | 0 | 13,913 |
| 3192 | 14,968 | 1,349 | 0 | 1,976 | 18,293 |
| 3201 | 27,983 | 2,571 | 0 | 27,290 | 57,844 |
| 3203 | 16,348 | 1,398 | 15,000 | 4,601 | 37,347 |
| 3204 | 3,390 | 224 | 0 | 0 | 3,614 |
| 3211 | 8,688 | 525 | 0 | 3,048 | 12,261 |
| 3212 | 99,891 | 7,285 | 0 | 43,875 | 151,052 |
| 3231 | 11,065 | 2,785 | 30,238 | 0 | 44,088 |
| 3233 | 5,999 | 1,589 | 0 | 5,383 | 12,971 |
| 3234 | 36,726 | 3,324 | 9,566 | 62,269 | 111,885 |
| 3240 | 56,797 | 3,113 | 35,000 | 7,437 | 102,346 |
| 3250 | 104,329 | 1,141 | 1,000 | 870 | 107,340 |
| 3261 | 985 | 0 | 0 | 5,205 | 6,190 |
| 3262 | 6,205 | 100 | 0 | 0 | 6,305 |
| 3291 | 46,338 | 2,181 | 15,000 | 6,514 | 70,033 |
| 3220 Sri Lanka | 25,383 | 37 | 0 | 3,775 | 29,195 |
| 3271 Pakistan | 4,685 | 0 | 0 | 6,300 | 10,985 |
| 3292 Nepal | 13,449 | 3,169 | 0 | 23,363 | 39,982 |
| 63 (former 3272) | 200 | 283 | 0 | 0 | 483 |
| 64 (former 3281) | 510 | 624 | 1,000 | 0 | 2,134 |
| 65 (former 3282) | 164 | 500 | 0 | 0 | 664 |

* Undistricted

LBW

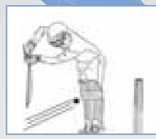

# फैशन या टेंशन

टीसीए श्रीनिवासा राघवन

क्या बूढ़े लोगों को नए कपड़े पहनने चाहिए? मैं यह सवाल पूरी गंभीरता से पूछ रहा हूँ क्योंकि पिछले दस सालों से इस बात पर मेरी पत्नी के साथ मेरी अनबन जारी है। मुझे पुराने कपड़े पसंद हैं। वास्तव में मैंने अपने पूरे जीवन में ऐसा ही किया है। इतना ही नहीं। मैं एक ही रंग के कपड़े पहनना पसंद करता हूँ - ग्रे या खाकी पतलून और एक सफेद या ग्रे बुश शर्ट। इससे विचलित न होने का मेरा दृढ़ संकल्प लगभग 30 साल पहले और प्रबलित हुआ। किसी ने मुझे एक लाल रंग की शर्ट भेंट की थी जिसे मैंने शायद ही कभी पहना हो। लेकिन एक दिन मुझे इसे पहनने के लिए मजबूर किया गया। मुझे किसी को लाने के लिए रेलवे स्टेशन जाना था। मैंने खाकी शॉर्ट्स पहने हुए थे जिसे मेरे पांच साल पुराने खाकी पतलून से बनाया गया था।

जब मैं ट्रेन के आने का इंतजार कर रहा था तब अपनी पत्नी और एक छोटे बच्चे के साथ एक परेशान दिखने वाले आदमी ने मुझे अपने दो सूटकेस उठाने के लिए कहा। उसने मेरे खाकी शॉर्ट्स और लाल शर्ट के कारण मुझे कुली समझ लिया था। लगभग आधे मिनट तक मैं उससे अनुग्रह करवाने के विचार के साथ खिलवाड़ करता रहा लेकिन तभी जिस ट्रेन का मैं इंतजार कर रहा था वो आ चुकी थी। इसलिए मैंने उससे कहा कि मैं ₹150 लूंगा जो तीन दशक पहले बहुत बड़ी राशि थी। मुझे कोसने के बाद वह आदमी चला गया।

खैर मूल प्रश्न पर वापस लौटते हुए, मुझे लगता है कि पुराने लोग नवीनतम फैशन और यहाँ तक कि एकदम नए कपड़ों में काफी अजीब लगते हैं। यह मेरी निजी राय है इसलिए अगर आपको नए कपड़े पसंद हैं तो कृपया नाराज न हों। आगे बढ़ें और अपने मन के हिसाब से कपड़े पहनें। लेकिन मैं आपको यह बताना चाहूँगा कि मेरा एक दोस्त है जो मुझसे दो साल बड़ा है या 75 साल का है और वो हमेशा एक मॉडल की तरह कपड़े पहनता है। मुझे नहीं पता कि वह इन कपड़ों को कैसे खरीदता है। जब भी हम मिलते हैं तो मुझे 1960 के दशक का एक पुराना पंजाबी नाटक का ख्याल आता है। उसका नाम था *चढ़ी जवानी बुड्ढे नूं*। 1970 के दशक में इसपर एक फिल्म बनी। दिलचस्प बात यह है कि मेरी तरह ही उसकी पत्नी भी हमेशा पुराने कपड़े ही पहनती है। वह हमेशा गरिमापूर्ण सादगी में रहती है जबकि मेरा दोस्त इसके एकदम विपरीत दिखता है।

यह सिर्फ पुराने कपड़ों की पसंद की बात नहीं है (जो अब मैं अपने बेटों से उनके लिए मेरे द्वारा लाए गए नए कपड़ों के बदले में लेता हूँ)। बात यह भी है कि मुझे रंगीन कपड़े पसंद नहीं हैं। लगभग पचास साल पहले मेरी एक प्रेमिका थी जिसने मुझे रंगीन बुश शर्ट दिलाने का फैसला किया। हम एक कपड़े की दुकान पर गए जिसमें एक स्थानिक दर्जी भी था। उसने दो कपड़े चुने। एक काली धारियों के साथ पीले रंग का था और दूसरा चेक्स के साथ नीले रंग का था।

जब वो शर्ट सिलकर आए तो उसने कहा कि मैं बहुत अच्छा लग रहा हूँ। लेकिन मैंने कहा कि मुझे बहुत अजीब लग रहा है और कुछ महीनों बाद मेरे कुछ भी पहनने, कहने या करने से उसको एतराज़ होने लगा और हम अलग हो गए। मैंने तुरंत उन कपड़ों को एक भिखारी को दे दिया जिसने हमेशा की तरह आशीर्वाद दिया: कि मेरी प्रेमिका मेरी पत्नी बन जाए! सौभाग्य से जिस लड़की से आखिरकार मेरी शादी हुई, भले ही वह लगातार बड़बड़ाती रहती हो मगर उसने कभी भी मुझे अपने पहनावे को बदलने पर ज़ोर नहीं दिया। हमारे बीच तय हुआ था कि वो जो चाहे पहने मैं उसे कभी नहीं टोकूँगा और वो भी इस बात के लिए मुझसे कुछ नहीं कहेगी। मेरा यकीन मानिए, यह काम करता है।

बेशक, किसी विशेष अवसर पर मैं कुछ रंगीन और नया पहनता हूँ। आखिरी बार मैंने मेरे बेटों की शादी में उनके द्वारा ज़ोर दिए जाने पर ऐसा किया था। मैंने हार मान ली क्योंकि मैं अक्खड़ या मज़ा खराब करने वाला नहीं कहलाना चाहता था। मैं यह स्वीकार करता हूँ कि तस्वीरें वाकई अच्छी लग रही थी। हालांकि मैंने तब से वे कुर्ते नहीं पहने और मैं उन्हें अपने बेटों को सौंपने का इंतजार कर रहा हूँ। जब कपड़ों की बात आती है तो उन दोनों की पसंद बहुत खराब है। वे उन्हें पाकर खुश होंगे।■

Rotary
District 3212

THE MAGIC OF ROTARY

Rotary club of Virudhunagar

# VIGNANA RATHAM

## Science made easy

CROSSING OVER
606
PROGRAMS
ALL OVER TAMILNADU

## SUCCESSFUL JOURNEY OF SCIENCE ON WHEELS

As on 31.08.2024
Total No. of Schools Visited
**590**

Total No. of Colleges Visited
**16**

Total No.of Students Explored
**1,73,499**

Total No. of Days Travelled
**413**

Total No. of Teachers Participated
**7,463**

Total No. of Kilometres Travelled
**32,182**

The idea of Vignana Ratham is to kindle student's interest towards Science. It is to aid students in understanding the magic of Science through creative and fun-filled experiments. RID 3212 wondered how good it would be to take the best brains to institutions in all corners of Tamil Nadu. As a result, a tie-up was made with Parikshan Trust of an Indian Scientist, Dr. Pasupathy. Mr.Arivarasan, Mr. Naveen Kumar and Mr. Satheesh were assigned to travel in Vignana Ratham and meet students of various schools every day. Numerous students benefit out of this programme and we believe that we have seeded the fervor required to bring out a Scientist from every institution we visited.

### Science on Wheels Programs As on 31.08.2024

Within RID 3212 - 324 Programs
Beyond RID 3212 - 282 Programs

LEKHA ads/Oct 24/ Rotary/BIW

**Do you want**
to have Vignana Ratham travelling to a school in your Town / City / District?
We would love to partner with you in this mission.

**GET IN TOUCH WITH US**
**94422 48586**

Project Chairman
Rtn. R.Vadivel

Project Concept
Dr. Pasupathy

PARIKSHAN
CHARITABLE TRUST
Empowering society through Science...

IDHAYAM
PROMISE OF HEALTH AND HAPPINESS

ADVT.

Registered No. TN/CCN/359/2024-2026 | Total number of pages in this monthly issue, including cover, 84. Price: ₹40
Licensed to post WPP No.TN/PMG(CCR)/WPP 421/24-26
Regd with RNI TNHIN/2001/05271. Rotary Samachar Published 1st week of every month. Posted at Egmore RMS Patrika Channel. Date of posting: 6–12 every month.

ADVT.